कुमार गंगानन्द सिंह

सुरेन्द्रझा 'सुमन'

MT
817.230 92
Si 64 J

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
817.23092
Si64J

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

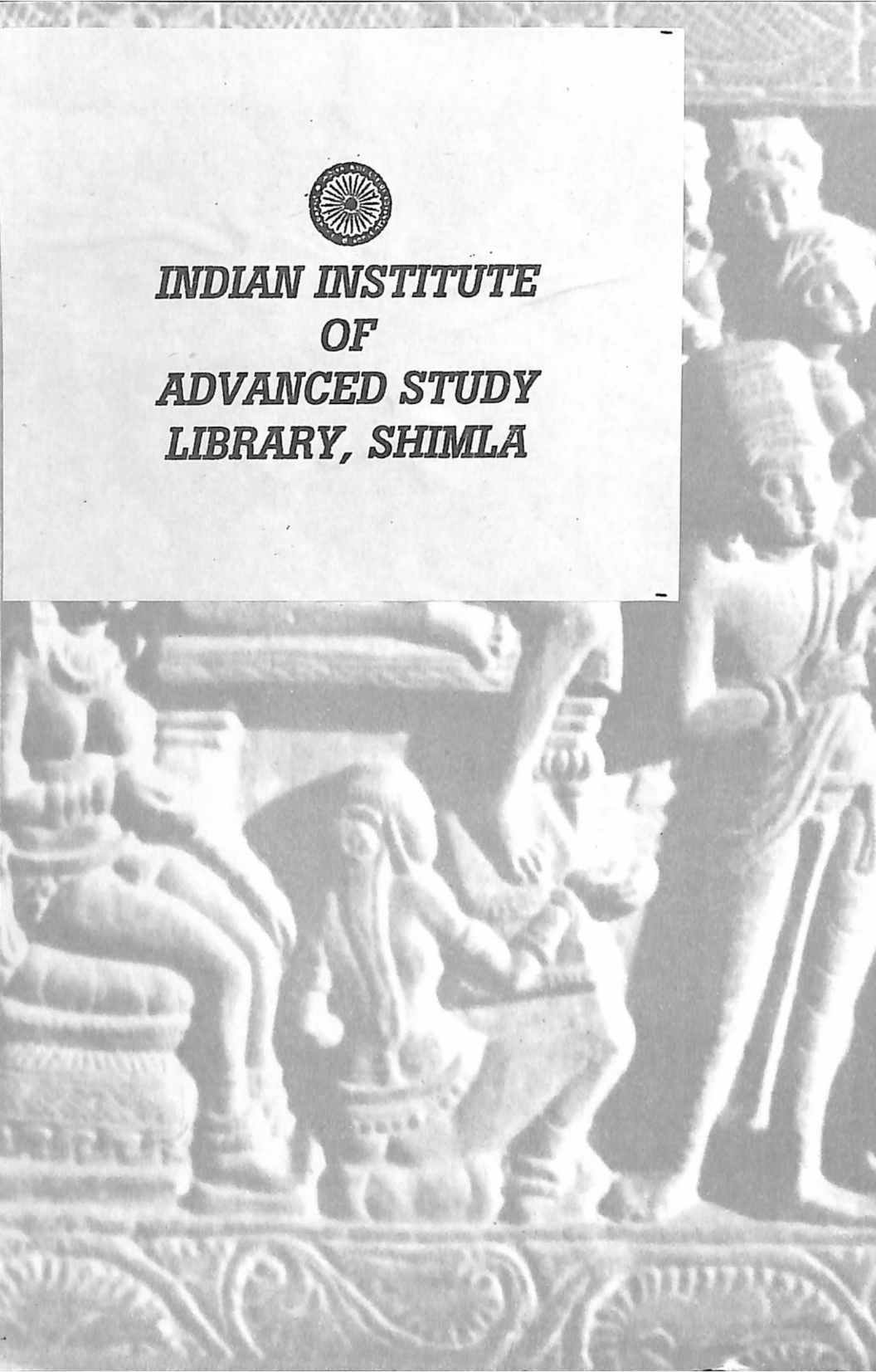

कुमार गंगानन्द सिंह

अन्तर-आवरणक कला-चित्रमे राजा शुद्धोदनक राज-दरबारक दृश्य अछि जाहिमे भगवान् बुद्धक माय मायारानीकेँ स्वप्नगत भविष्यफलक व्याख्या तीन भविष्य-वक्ता निर्देशित कऽ रहल छथि, ओकर नीचाँ एक व्यक्ति भविष्यवाणीकेँ लिपिबद्ध करबामे संलग्न देखल जाइत छथि। भारतमे लेखनकलाक सर्वप्राचीन दृश्य एहि चित्रात्मक अभिलेखमे प्राप्त अछि।

नागार्जुनकोण्डा, द्वितीय शताब्दी (ईस्वी)
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयाँ दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

कुमार गंगानन्द सिंह

सुरेन्द्रझा 'सुमन'

साहित्य अकादेमी

Kumar Ganganand Singh : A monograph in Maithili by Surendra Jha 'Suman' on the Maithili author. Sahitya Akademi, New Dell
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 Si 64 J
00117143

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1991

H
817.230 92
Si 64 J

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवन तारा बिल्डिंग, चौथा तल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
29, एलडाम्स रोड, तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

मूल्य
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

मुद्रक
भारती प्रिण्टर्स,
शाहदरा, दिल्ली 110 032

Indian Institute of Advanced Study
117143
9.12.04
SHIMLA

अनुक्रम

लेखकीय	7
व्यक्तित्व	9
देश-परिवेश	10
कुल-परिवार	13
जीवन-वृत्त	17
व्यक्तित्व ओ कृतित्व	30
रचना	37
उपसंहार	57
परिशिष्ट	
विचार-बिन्दु	61
गंगानन्द वंशशाखा	65
सहायक-ग्रंथ	67

लेखकीय

1987 ई.मे साहित्य अकादमीक मैथिली-परामर्श-समिति द्वारा मैथिली-साहित्यक उन्नेता-प्रणेता रूपमे कुमार गंगानन्द सिंहक जीवन-परिचय पर पुस्तक प्रस्तुत करवाक प्रस्ताव गृहीत भेल। हुनक समीपी रहवाक कारणेँ हमरहि तकर भार देल गेल। तत्काल स्वीकार तँ कयलहुँ किन्तु जखन लिखबाक मनःस्थितिमे अयलहुँ तखन चरितनायकक व्यक्तित्व-कृतित्वक व्यापकता देखि भान भेल जे सांख्यकारिकामे जे कहल गेल अछि—'अतिदूरात् सामीप्यात्' से जहिना दूर-फराक रहने वस्तु-बोध बाधित रहैछ तहिना अतिसमीपी रहनहुँ प्रकृत निरूपण जटिल भए जाइछ—की कहल जाय, कतेक कहल जाय, कतवा छोड़ल जाय, कतवे जोड़ल जाय, से निश्चय करैत मन तथमथमे शिथिल रहल।

दोसर कठिनता ई छल जे कुमार गंगानन्द सिंहक व्यक्तित्व ततेक बहु-आयामी रहल—राजनीति, समाज-नीति, संस्कृति-कला, पत्रकारिता एवं शास-कीयता ततेक क्षेत्रमे कीर्ण-विकीर्ण छल—जकरा किछु समटैत, किछु छँटैत, साहित्योन्मुखी प्रवृत्तिकेँ ओहिमेसँ बिकछबैत मन उजगुजाइत रहल। हुनक कृतित्व किछु ताहि तरहेँ विविधतासँ, विस्तारक जटिलतासँ बोझिल छल तकरा सोझराय कहबामे ओझरयवेक झंझटि।

एही उधेड़बुनमे समय ससरैत गेल। जहिया कहियो परामर्श-समिति बैसैक, अगिला बैसकसँ पूर्वे प्रस्तुत करबाक प्रतिश्रुति करितहुँ पछुआइत रहलहुँ। परंच अकादमीक तगेदा सब अथउतकेँ श्लथ कए लिखबा लए विवश कयलक।

तावत् दिल्लीसँ कुमार गंगानन्द सिंहक स्मृतिग्रन्थ प्रकाशनक सूचना भेटल ओ तकर सम्पादक-मण्डलमे मनोनीतो कयल गेलहुँ। ज्ञातव्य जे कुमारसाहेबक मृत्युक बाद जे हुनक डेराक सफाइ होमय लागल, बहुतो कागजकेँ रद्दी बुझि जरयबाक उपकममे एक बंडल संयोगवश श्री विनोदानन्द झाकेँ हाथ लगलनि। ओहिमे बहुत किछु कुमार साहेबक लेखादि संचित छल। हम प्रतीक्षामे रहलहुँ, से उपलब्ध भऽ सकने ओकर उपयोग कऽ सकितहुँ; किन्तु से तत्काल संभव नहि भऽ सकल। तखन अपन स्मृतिसँ ओ विभिन्न स्रोतेँ उपलब्ध सामग्रीसँ, जकर सूची

परिशिष्टमे देल अछि यथासम्भव चयन कए एकर जेना-तेना पूर्ति करबामे प्रवृत्त भेलहुँ।

एहि प्रसंग आयुष्मान् पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. श्रीरामदेव झा, डॉ. श्री भीमनाथझा, डॉ. श्री गौरीकान्तझा, श्री समरेन्द्रनारायण चौधरी सेहो अपन विचार-सुझाव देलनि, ताहि हेतु हुनका लोकनिकेँ साशीराशि धन्यवाद दैत छिऐन।

हर्ष होइछ जे चारि दशक धरि लगातार जाहि महान् पुरुषक संगति एवं स्नेह-कृपाक भाजन रहलहुँ तनिक स्मृतिमे किछु पंक्ति पत्रं-पुष्पं चढ़यबाक अवसर भेटल। एकर मूल-प्रेरक साहित्य अकादमी एवं मैथिली परामर्श-समितिक सदस्य लोकनिक प्रति आभार व्यक्त करब हम अपन परम कर्तव्य बुझैत छी।

'गच्छतः स्खलनं क्वापि' एहि उक्तिक अनुसार, जे कोनो त्रुटि-प्रमाद रहि गेल हो, दुरुक्ति-द्विरुक्ति भए गेल हो, तदर्थ सहृदय पाठक-बन्धुक प्रति क्षमाप्रार्थी छी।

मैथिली-मन्दिर, दरभंगा —सुरेन्द्रझा 'सुमन'
(गंगानन्दस्मृतिदिवस, 15-1-90)

व्यक्तित्व

आधुनिक विहारक निर्मातामे प्रमुख डॉक्टर सच्चिदानन्द सिंह जनिका विषयमे कहि गेल छथि जे—'विहारक आभिजात्य वर्गक अन्तिम नमूना कुमार गंगानन्द सिंह मानल जयताह।' (Ganganand will be the last specimen of aristocracy in Bihar'); जनिक लेखन-शैलीक गरिमा पर 'हिस्ट्री आफ़ मैथिली लिटरेचर' अंकित कयने अछि जे—'मैथिली-गद्यक आधुनिक विशद रूप कुमार गंगानन्द सिंहक रचनामे देखल जा सकैछ।' ('The final development of Maithili prose of to-day can be seen in writings of...Kumar Ganganand Singh'); जनिक रचना-प्रौढ़ता पर मर्मज्ञ आलोचक प्रो. रमानाथ झा टिप्पणी करैत छथि जे—'ई जतए जे किछु लिखैत छथि सएह साहित्यक एक गोट स्थायी सम्पत्ति भए जाइछ।' जनिक विचार-सन्तुलन ओ व्यापक लोक-प्रियताक प्रसंग मैथिलीक महान् उन्नेता प्रो. हरिमोहन झा कहैत अघाइत नहि छथि जे—'कुमारसाहेब आधुनिक प्रगतिशील विचार रखैत छथि, परन्तु प्राचीन मर्यादाक रक्षा करैत। ओ क्रान्ति नहि, क्रमिक विकास चाहैत छथि—नव निर्माण हो किन्तु मूल भित्तिकेँ यथासम्भव कायम रखैत। कुमारसाहेबकेँ सन्तुलनमे, समन्वयमे आस्था छन्हि। एतेक अधिक व्यापक क्षेत्रमे एहन लोकप्रियता देशमे कमे व्यक्तिकेँ प्राप्त छन्हि।'

एहन व्यापक व्यक्तित्व, चतस्र कृतित्व ओ बहुक्षेत्रीय प्रवृत्तिक महान् पुरुषक चरित्र-चित्रणक एवं प्रतिभा-प्रभावक मूल्यांकन करबाक प्रयासमे आवश्यक बुझना जाइछ जे एहि प्रभा-पुंजक उदयमे देश-काल, कुल-परिवार ओ युग-परिस्थितिक उपादानक कहाँ धरि योगदान छैक से देखल-परेखल जाय। जे वट-बीज आगाँ चलि कए विशाल वृक्ष रूपमे आकृति ग्रहण कयलक, अपन छायामे समाज-संस्कृति, भाषा-साहित्य, शिक्षा-दीक्षा ओ राजनीति-आध्यात्म प्रश्रय पौलक, हुनक विकासमे देश-परिवेश, कुल-अभिजन, काल-परिस्थिति की कोना प्रभावी भेल—आवश्यक भए जाइछ जे ताहि सभक आकलन-निभालन कयल जाय। एही दृष्टिएँ पहिने ओहि सभपर प्रकाश देबाक प्रयास कयल जाइछ।

देश-परिवेश

'पुत्रोऽहं पृथिव्याः'—एहि वैदिक वाक्य-खण्डक एक तात्पर्य इहो बहराइछ जे मनुष्यकेँ जाहि प्रकारेँ मायक गर्भसँ सहज संस्कार-विकार भेटैत छैक तहिना अपन भूमिक भाव-प्रभाव, देश-परिवेशक आचार-विचार ओ आहार-विहार ओकर अस्मिताकेँ स्वभावतः प्रभावित करैछ।

अखण्ड भारतक एक अन्यतम मिथिला भू-खण्ड किछु एहि प्रकारक रुचि-संस्कारसँ मण्डित रहल अछि जाहिमे वैयक्तिक विशेषता सामान्य समाजक पृष्ठ-भूमिसँ गढ़ल-मढ़ल रहैछ। व्यक्तिक अभिव्यक्तिमे जातीयता पंक-पंकज जकाँ कतबहु असम्पृक्त देखल जाय किन्तु रस-गन्धक पोषणमे कोनहु-ने-कोनहु रूपेँ ओ सहयुक्त रहवे करैछ।

मिथिलाक दुइ प्रतियोगी दार्शनिक एकर स्वयं प्रमाण छथि। न्याय-प्रवर्तक गौतम जखन सामान्य पदार्थक निरूपण कयलनि तँ हुनका दृश्यमान यावतो वस्तुमे किछु-ने-किछु समानता—भेदमे अभेद देखवामे अयलनि। आम-कटहर-जामुन-लताम भिन्न-भिन्न रस-स्वादक गने रहओ किन्तु फलवत्ताक दृष्टिएँ ओ एक जाति-वर्गक सामान्य रूपमे निरूपित होइछ। किन्तु पुनः जखन महर्षि कणाद कण-कणमे विशेषता छानय लगलाह, पार्थक्य विकछावय बैसलाह, तखन हुनका एकहि वृक्षकेर डारि-डारिमे, पात-पातमे समानता रहितहुँ प्रकारता ओ आन्तरिकतामे विशेषता दृष्टिपथ भेलनि। एकमूलक, एक शाखा-डारिक पात-पातहुमे किछु-ने-किछु निजी विशेषता-भिन्नता देखवामे अयलनि, जे वैशेषिक दर्शनक आधार बनल।

अन्तमे पुनः पदार्थक सामान्य-विशेष भावक ई शृंखला भेदमे अभेद ओ अभेदमे भेद एहि तथ्य-कथ्यकेँ अवलंवित कए न्याय-वैशेषिक संगतिसाधक बनि गेल।

तात्पर्य जे जँ समाज अपन सहयोगेँ व्यक्तिकेँ गढ़ैछ तँ व्यक्तिओ समाजकेँ मढ़वा लेल—अलंकृत करवा लेल—योजित होइछ। बिन्दु-सिन्धु जकाँ दूहू अंगांगिभावेँ ऐकिक सिद्ध होइछ। याज्ञवल्क्यक व्यक्तित्व निरूपणमे एक ठाम कहल गेल अछि—'मिथिलास्थः स योगीन्द्रः' तँ दोसर ठाम 'याज्ञवल्क्योऽथ मैथिलः'—याज्ञवल्क्य जखन मिथिलाक भऽ कऽ रहलाह तखन मैथिलक गुण-

संस्कारक प्रकाशक भेलाह। तेँ व्यक्तिक निर्माणमे देश-परिवेश, जनन-अभिजन असाधारण कारण कहल जाइछ।

उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरण ओ बीसम शताब्दीक गत तीन चरण, जे एहि व्यक्तिविशेषक जन्म-मृत्युक अन्तराल काल पड़ैछ तथा मिथिलांचलक उर्वर क्षेत्र, जे हिनक जन्म ओ कर्मक मुख्य क्षेत्र रहल अछि से हिनक अस्तित्व-व्यक्तित्वकेँ विशिष्ट रूपमे गढ़नि देलक तकर झलक ओकरहि फलक पर द्रष्टव्य।

मिथिला भारतीय चिन्तन-क्षेत्रमे आरण्यक कालहिसँ उल्लेखनीय रहल अछि। हिम-शीतल शत-शत जलस्रोतसँ तीतल मिथिला जहिए मिथि ओ अग्निमुख पुरोहित रहूगण द्वारा बसल-बसाओल गेल—यज्ञाग्नि द्वारा एतय पंकिल भूमिकेँ सकताओल गेल—तहिएसँ आर्यसभ्यताक एक केन्द्र बनि भारतीय चिन्तनकेँ एक नव दिशा-निर्देश करबामे ई प्रवृत्त देखल गेल अछि। राजर्षि जनकक दरबारमे कुरु-जांगलक दूर-दूरागत तत्त्व-अन्वेष्टा लोकनि जुटैत रहलाह—याज्ञवल्क्यक संग शास्त्र-चर्चामे तत्त्वबोध करैत गेलाह। महाकाव्य-कालहुमे रामायणकालीन मिथिला बल-वीर्य ओ ज्ञान-सम्पदामे कीर्तनीय रहल। महाभारतक विवरणहुमे अनेक प्रासंगिक आख्यान-उपाख्यानमे ई चर्चित रहल। बौद्ध-जैनक प्रचार-कालमे जखन मूल वैदिक मत पर आघात पड़ल तखन एतय दार्शनिक तर्क-वितर्कक से शृंखला चलल जे आस्तिक षड्दर्शनक भित्तिकेँ सुदृढ करबामे मैथिल दार्शनिक अग्रगण्य सिद्ध भेलाह। श्रौत-स्मार्त यावतो ज्ञानकाण्ड-कर्मकाण्डक कण्डिकाकेँ खण्डित होयबासँ बचयबामे मिथिला सुरक्षा प्रदान करैत चलल। ऐतिहासिक मध्यकाल धरिक मान्यता अछि जे आइ जे हिन्दूधर्मक रूप अछि तकरा पारम्परिक विचार ओ आचार द्वारा विदेशी आक्रमणकारीक समयहुमे ई बहुत किछु सुरक्षित रखबामे सफल भेल।

किन्तु संगहि इहो मानय पड़त जे प्राच्य पारम्परिकताक क्षेत्रमे यशस्विता प्राप्त कयनिहार मिथिला, एम्हर आबि पाश्चात्य वात्यासँ जेना भीत-भीत रहि नव्यताक ग्रहणमे पश्चात्पद भेल। उनैसम शताब्दीक आरम्भहिसँ जतय महाराष्ट्र-बंगाल-मद्रास-पंजाब प्रभृति पूब-पच्छिम-दच्छिन-उत्तर सबतरि नव शिक्षाक आलोक पसरि गेल छल, तखनहु ई अपन संस्कृति-परम्परा, सामाजिक रहन-सहनक पक्षपाती रहि नवीन शिक्षा-दीक्षासँ विरत, एकान्त निरत रहल। फलतः जखन आन-आन भागक शिक्षार्थी कलकत्ता-बंबइ-मद्रास प्रभृति महानगरी ओ दिल्ली-आगरा-लखनऊ-इलाहाबाद ओ पटना-पुरीक कालेजमे जाय नवीन ज्ञान-विज्ञान पढ़ैत छलाह तखनहु मैथिल छात्र काशी-नदिया जाय सूत्र-भाष्य-वार्तिक-कारिका रटैत छलाह। जखन आन क्षेत्रक लोक अंग्रेजी पढ़ि प्रोफेसर, बैरिस्टर, डाक्टर, इंजीनियर बनि कला-विज्ञान कानून ओ तकनीकी क्षेत्रमे प्रतिभा प्रदर्शित

करैत छलाह तखन मैथिल विद्वान् शास्त्रार्थ करैत गणित-फलित टीपनि लिखैत छलाह, पंजी घोषैत छलाह ओ यज्ञ-उदयापनमे सर्वतोभद्र रंगैत छलाह। आन सब जखन विदेश धरि जाय नवयुगक नव-नव तकनीकीसँ ज्ञान-विज्ञानक परिधि-विस्तार करैत छलाह तखनहु एम्हर मैथिल पंडित चौपाड़ि पर आसन लगाय पतिया-प्रायश्चित्त लिखैत छलाह। अन्यत्र जतय शिक्षित समुदाय शासकीय दंड-संहिताक कानूनी व्याख्या करैत छलाह, ततय मैथिल समाज-नेता समुद्रयात्राक प्रसंग सामाजिक बहिष्कारक फतवा पढ़ैत छलाह।

जाहि समय कुमार गंगानन्दक जन्म भेल छल, मिथिलामे ग्रेजुएट आंगुरोपर गनवा योग्य नहि। स्कूल-कालेज नाम लेवा लेल जँ तँ कोनहु पैघ शहरहिमे। विद्वान् कवि साहित्यक ओ संगीतज्ञ-कलाकार तथा पहलवान आदिकेँ सरकारक दिससँ कोनो प्रोत्साहन-व्यवस्था नहि। हुनका लोकनिकेँ केवल राजा-महाराजा रईस-जमीन्दारसँ सत्कार भेटैत छलनि। राज-दरभंगा, बनैली, श्रीनगर, रजौर, नरहनि, पचगछिया-गंधवरिया, बरारी आदि पैघ-छोट स्टेट एहि सभक आश्रय-केन्द्र छल। जाति-पाँतिक, मूल-वंशक सबतरि चर्चा-अर्चा चलैत रहल। शास्त्रार्थ, अन्त्याक्षरी, समस्यापूर्ति, वन्दी-विरुदावली आदि शास्त्र-काव्यक चलनि छल। भाषा-साहित्यमे गीत रचना विशेष प्रचलित भेल। ता' धरि प्रेसक स्थापना नहि, पत्र-पत्रिकाक नाम नहि। राजनीतिक कोनो प्रेरणा नहि। यज्ञ-जाप, पाता-नोत, भोज-भात, कुटुम्ब-जयवारी तकरहि चलनि छल। रामलीला-रासलीला, कीर्तन-नौटंकीक मंच सजैत छल। कुश्ती-पहलवानी, नट-कठपुतली तकरे मनोरंजन छजै छल। कतहु-कतहु नवीन भावनाक सिंहकी-सिसकी मात्र यदा-कदा प्रवेश अवश्य छल करैत देखल जाइत छल।

उनैसम शताब्दीक एही निशान्तमे, बीसम शताब्दीक उषःकालमे मिथिलाक पूर्वांचलीय भूभाग पूर्णियाक एक रियासति राज-बनैलीक अपर शाखा श्रीनगरमे कुमार गंगानन्द सिंह अलयीकुलक समृद्ध राजवंशमे 1898मे जन्म ग्रहण कयलनि।

कुल-परिवार

पंची-प्रबन्धमे सात गोट कुल-मूल श्रोत्रिय-वंश कहल गेल अछि—

'गंगौली च कुजौली च पवौली त्वलयी तथा।
बहेराढी शंकराढी पाली पंज्यां तु श्रोत्रियाः ।।'

एहि सातोमे अलयी-कुल परिगणित अछि। एहि कुलमे अनेक वंशधर महामहोपाध्याय, दीवान बहादुर एवं चौधरी आदि विद्या-वैदुष्य तथा शौर्य-ऐश्वर्यक द्योतक उपाधिसँ विभूषित रूपेँ उल्लिखित भेल छथि। सुतरां कुमार गंगानन्द सिंह ओही कुलक दीपक छलाह जे विद्या ओ राज-संपर्क दूहूसँ उद्दीपित होइत रहल छल। मिथिलाक मध्यकालीन एवं उत्तरकालीन जे राज-रियासति कायम छल ताहिसँ हिनक पूर्व पुरुषा सभ संपृक्त रहलाह।

ओहि अलयी (अलैवार) कुलक बीजी पुरुष छलाह गंगाधर (1330-1413) जनिका महामहोपाध्याय-पद विभूषित कहि हुनका विद्या-महत्ताक कारणेँ कुल-प्रवर्तक मानल गेल छनि। गदाधरक वैवाहिक सम्बन्ध ओहिनिवारवंशीय महाराज भोगीश्वर सिंहक धर्माधिकरणिक गणेश्वरक कन्यासँ छल। एहि पत्नीसँ हुनका दुइ पुत्र भेलथिन, हरिहर ओ पद्माकर। दुहू भाइ बहेड़ा (दरभंगा)क समीप पितृ-उपार्जित वैगनी ग्राम जाय बसलाह। द्वितीय पत्नीसँ गदाधरकेँ जे कन्या भेलथिन तनिक पुत्री विद्यापतिक मुख्य आश्रयदाता महाराज शिवसिंहक पटरानी लखिमा-रानी नामेँ प्रसिद्ध भेलीह। अपर पत्नीसँ दुइ गोट बालक दिवाकर ओ प्रभाकर तथा एक कन्या छलथिन। एही कन्याक प्रपौत्र पहसरा-सोरैया राजक संस्थापक भेलाह समरूराय।

गदाधरक ज्येष्ठ पुत्र हरिकरक प्रपौत्र छलाह महामहोपाध्याय रामभद्र झा, जनिक प्रपौत्र भेलाह बनैलीराजक संस्थापक दीवान देवानन्द झा।

महामहोपाध्याय रामभद्रक पौत्र महामहोपाध्याय रामकृष्ण प्रसिद्ध नैयायिक छलाह। हुनक पुत्र विश्वेश्वर पहसराक रानी (राजा रामचन्द्र रायक माय)क सेवामें रहि पूर्णिया जिलाक हवेलीं गामक जागीर प्राप्त कयलनि। पश्चात् हुनक पुत्र देवानन्द झा राजा रामचन्द्र द्वारा दीवान नियुक्त कयल गेलाह। अतः

तत्कालीन पंजीमे ओ 'दीवान देवानन्द' कहि उल्लिखित भेटैत छथि। पुनः आगाँ चलि कय रामचन्द्र रायक उत्तराधिकारी इन्द्रनारायण रायसँ तीर खारदा ओ असजाक प्रगन्ना हुनका पारितोपिक रूपमे प्रदान कयल जाइछ। एहि प्रसंगक उल्लेख डॉ. फ्रान्सिस बुकानन द्वारा पूर्णिया रिपोर्ट (The Purnia Report 1809-1810) मे प्राप्त होइछ।

महामहोपाध्याय मुकुन्द झा बख्शी अपन 'मिथिलाभाषामय इतिहास' ग्रन्थमे लिखैत छथि जे मूल तिरहुतिसँ जखन पारिवारिक कलहक कारणेँ प्रसिद्ध कन्दर्पी-घाटक लड़ाइक नायक नरेन्द्र सिंहक बालक माधवसिंह पलायन कयलनि तखन ओ उक्त दीवान-परिवारमे जा कऽ शरण लेलनि एवं बहुतो दिन धरि ओतहि समय-यापन कयलनि। जखन पुनः हुनक वैमात्रेय राजा प्रताप सिंहक देहान्त भेलनि तखन ओतयसँ उत्तराधिकृत रूपेँ गद्दीपर आनि वैसाओल गेलाह। मिथिलाक प्रमुख राजवंश खण्डवलाकुलक परिवारमे एहि घटनाक कारणेँ बनैली-परिवारक प्रति आत्मीयता चरितनायक गंगानन्द सिंहक अपर जीवन-कालमे प्रदर्शित होइत देखल जाइछ।

उक्त चौधरी देवानन्दक पुत्र चौधरी परमानन्दकेँ बंगालक सूबेदारसँ जखन हजारी मनसब प्राप्त भेलनि तखन ओ हजारी चौधरी कहबय लगलाह। हुनक अनुज मानिक चौधरीकेँ असजा प्रगन्ना अपन अंशमे प्राप्त भेलनि। हुनक पौत्र तीर्थानन्द सिंहक निःसन्तान मृत्युक उपरान्त हिनक स्टेट राजा पृथ्वीचन्द लालक पितामह नकछेदी लाल ओ बलुआ-अररिया स्टेटक कारू ठाकुरकेँ अधिगत भेलनि।

ओम्हर ईस्ट इंडिया कंपनी ओ नेपालमे सीमा-युद्ध ठनलाक बाद जे सुगौली-सन्धि 1773 ई. में भेल छल ताहिमे भागलपुर ओ पूर्णियाक सीमा स्थित जे भूमि कंपनीकेँ प्राप्त भेलैक से चौधरी परमानन्दक पुत्र दुलार चौधरीक हाथेँ बन्दोबस्त कय देल गेल। संगहि ओ राजाबहादुरक उपाधि सेहो प्राप्त कयलनि। ओही समयमे ओ तदनुरूप सिंहक सरनाम ग्रहण कयलनि ओ छिटफुट जमीनदारक बहुतो भूभाग किनलनि।

श्रीनगर-बनैली सर्वे सेट्लमेन्ट रिपोर्ट (सन् 1887-94) सँ ज्ञात होइछ जे उपर्युक्त दूहू जिलाक दूहू स्टेटक जमीन्दारी पाँच जिला, चौबीस प्रगन्ना ओ छह सय छिआनवे गाममे छलैक। राजा दुलार चौधरी अपन राजधानी बनैली गाममे बनाओल, जाहिसँ ओ बनैली-राजवंश कहबय लागल। हुनक दुइ पुत्र भेलाह राजा वेदानन्द सिंह ओ राजा रुद्रानन्दसिंह। राजा वेदानन्द सिंहक पुत्र राजा लीलानन्द सिंह तथा रुद्रानन्द सिंहक पुत्र श्रीनन्द सिंह भेलाह। राजा लीलानन्द सिंह अपन पैत्रिक बनैलीमे रहलाह, तेँ ओ तथा हुनक वंशधर बनैली राजवंश नामसँ ख्यात

रहल। राजा श्रीनन्दसिंह (1845-80) अपन निवास नव स्थानमे रचौलनि जे श्रीनगर नामसँ प्रसिद्धि पौलक।

ओही श्रीनगरक शाखाक वृन्तमे कुमार गंगानन्द सिंह एक एहन सुरभित प्रसून रूपेँ विकसित भेल छथि जकर कान्ति-सौरभ मिथिलामे सहजहिँ, देशक विभिन्न भागहुमे व्याप्त छल।

बनैली-राजपरिवारक वदान्यता

मूल वनैली राज-परिवार शाखा-विभक्त होइतहुँ, राज-वनैली, गढ़-वनैली, श्रीनगर, कृष्णगढ़ सभ मिथिलाक सांस्कृतिक उत्थानमे समान उत्साहसँ योगदान करैत आयल। ज्ञान-विज्ञानक साधनामे, विद्या-विकासक योजनामे, पण्डित-कवि-कलाकारक सम्मान दानमे अग्रसर रहल। राज-वनैलीक प्रमुख प्रतिष्ठाता राजा कीर्त्यानन्द सिंह भागलपुरक टी. एन. जे. कालेजमे लाखो टाका दान कयल। पटनाक टेम्पुल मेडिकल स्कूलकेँ प्रिन्स आफ वेल्स मेडिकल कालेज रूपमे परिणत करवाक हेतु लाखों टाका दान देल। पटना-विश्वविद्यालयमे अर्थशास्त्र हेतु रीडर-शिप व्यवस्थाक लेल व्ययभार ग्रहण कयल। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली चेयरक स्थापना कराओल। राजा लीलानन्द सिंहक दानशीलता तेहन छल जे ओ कलि-कर्ण कहि प्रसिद्ध भेलाह। विभिन्न शिक्षासंस्थानमे छात्रवृत्तिक व्यवस्था कय मैथिल छात्रकेँ शिक्षोन्मुख करबाक प्रक्रिया अपनाओल। एही परिवारक सदस्य लोकनिक कीर्तिस्वरूप काशीमे तारामन्दिर ओ श्यामा मन्दिरक ट्रस्ट बनल जे काशीमे पढ़निहार छात्रकेँ ओ तीर्थयात्री मात्रकेँ सुविधा देवाक हेतु सत्र संचालन द्वारा भोजनादिक व्यवस्था करैत रहल। गढ़वनैली, सुलतानगंज, चम्पानगर, असरगंज, खडगपुर, वाँका, गोड्डा, वनगाँव, नवहट्टा आदिमे अनेको उच्च एवं माध्यमिक विद्यालय संचालित भेल। संस्कृत टोल ओ पाठशालामे छात्रवृत्तिक व्यवस्था कए संस्कृतक पठन-पाठनकेँ उत्साहित कयल गेल। कुमार गंगानन्द सिंहक पिता राजा कमलानन्द सिंह भागलपुर स्थित अपन महलकेँ आदर्श उच्च विद्यालयक स्थापना हेतु ईसाइ पादरी लोकनिकेँ प्रदान कय अपन उदार भावनाक परिचय देल। कुमार गंगानन्द सिंह स्वयं श्रीनगरमे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं वरीय वेसिक प्रशिक्षण विद्यालयक लेल एक सय एकड़ भूमि सरकारकेँ समर्पित कयल।

साहित्य प्रणयन हेतु राजपरिवारक अनेको सदस्य स्वयं प्रवृत्त छलाह ओ विद्वान् लोकनिकेँ प्रेरित करैत रहलाह। राजा वेदानन्द सिंह आयुर्वेद पर ग्रन्थ लिखलनि जे वेदानन्द-विनोद नामेँ ख्यात अछि। राजा कीर्त्यानन्द सिंहक शिकार पर अंग्रेजी पुस्तक प्रकाशित अछि। राजा कमलानन्द सिंहक वंकिमचन्द्रक प्रसिद्ध उपन्यास आनन्दमठक प्रथम हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित भेल। सुकवि, आलोचक

रूपमे हुनक व्यक्तित्व-कृतित्व पर एक ग्रन्थ साहित्यभूषण शिवपूजन सहायक सम्पादकत्वमे पुस्तकभण्डार द्वारा प्रकाशित भेल अछि ।

बनैली-श्रीनगर परिवार विद्वान् लोकनिकेँ आश्रय दैत रहल, साहित्यिक लोकनिकेँ पुरस्कृत कय प्रोत्साहित करैत, भाषा-लिपि एवं साहित्यक उत्थानमे सहायता पहुँचबैत रहल । विशेषतः राजा कमलानन्द सिंह 'साहित्य सरोज' स्वतः सुप्रसिद्ध कवि-पण्डित अम्बिकादत्त व्यास, महावैयाकरण पण्डित खुद्दी झा, व्रज-भाषाक कवि लच्छिरामकेँ आश्रय देल, पुरस्कृत कयल, गजदान दय सम्मानित कयल । मिश्रबन्धु विनोदक रचयिता हुनकासँ पुरस्कृत भए प्रोत्साहित भेलाह । मिश्रबन्धुविनोदक भूमिकामे ओ लिखैत छथि जे—'राजा कमलानन्द सिंह द्वारा 'कुटम्ब' शीर्षक निबन्धपर पुरस्कृत भेला सन्ताँ उत्साहित भए एहि ग्रन्थक रचना आरम्भ कयल' आदि। राजा कीर्त्यानन्द सिंह विहारोत्कल संस्कृत समितिक अध्यक्ष भेलाह। विहार हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मुजफ्फरपुर-अधिवेशनक अध्यक्षता कयल । पटनामे सम्मेलनक भवन-निर्माणक क्रममे प्रचुर राशि देल । तहिना गढ़-बनैलीक शाखा कृष्णगढ़-सुलतानगंजक कुमार कृष्णानन्द सिंह, हिन्दी-मासिक 'गंगा' ओ मैथिली-पाक्षिक 'मिथिला-मित्र'क प्रकाशन कयल । रामगोविन्द त्रिवेदी द्वारा ऋग्वेद-संहिताक भाषानुवाद कराय प्रकाशित कराओल । हुनकहि आयोजकतामे गंगाक 'पुरातत्त्वांक महापण्डित राहुल सांकृत्यायनक सम्पादकत्वमे, 'गंगांक' पं. गौरीनाथ झाक संपादकत्वमे ओ 'साहित्यांक' सभ हिन्दीभूषण शिवपूजन सहायक निर्देशनमे महत्त्वपूर्ण परिगणित भेल। साहित्याचार्य 'मग'क साहित्यिकता ओहीमे अभिव्यक्ति पौलक । विहारक तत्कालीन कवि-साहित्यिक मोहनलाल महतो वियोगी, दिनकर, आरसी, नेपाली, केसरी, मुक्त, भुवन, सुमन प्रभृतिक 'गंगा' पत्रिका रचना-रंगस्थली बनल छल । तहिना 'मिथिलामित्र' द्वारा मैथिलीक नव-पुरातन लेखक वर्ग अपन साहित्यिक प्रतिभा प्रदर्शित करैत रहलाह । हुनकहि सामीप्यमे प्रथम-प्रथम मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना पं. शशिनाथ चौधरीक मन्त्रित्वमे कयल गेल । कुमार तारानन्द सिंह सेहो परिषदक अध्यक्षता करैत भेलाह, विहारक विभिन्न विश्वविद्यालयीय सिनेट-सिन्डिकेटमे योगदान करैत रहलाह । कुमार श्यामानन्द सिंह भारत-प्रसिद्ध उस्ताद फैयाज खाँक शागिर्दगीमे संगीतक साधनामे सुविदित छथि । एहि प्रकारक विद्याव्यसनी साहित्योन्नयनी एवं कला-साधना प्रवण पारिवारिकताक वातावरणमे—पिता-पितृव्य, अग्रज-अनुजक संगति-प्रगतिक संगमनमे—कुमार गंगानन्द सिंहक व्यक्तित्व-कृतित्व विशेष रूपेँ विकसित भेल ।

जीवन-वृत्त

जन्म ओ शैशव

24 सितम्बर, 1898 ई., श्रीनगरक राजभवन, अपररात्र ब्राह्ममुहूर्त, कुमार गंगानन्द सिंह जन्म ग्रहण कयलनि। पिता राजा कमलानन्द सिंह ओ माय रानी कमलावती प्रथम पुत्रकेँ पावि अपन दाम्पत्य जीवनकेँ कृतार्थ कयलनि। श्री-सम्पन्न राजकुल ओ विशाल कुटुम्ब-परिवारक हर्षोल्लास जन्मोत्सवकेँ जाहि रूपेँ मनाओल ओ समस्त अंचल-परिसरकेँ मुखर कय गेल।

साहित्यसरोज राजा कमलानन्द सिंह (1875-1909) अपन उदारता ओ गुणवैभवसँ समाजमे ख्यात छलाह। हुनक दरबार गुणी, विद्वान् ओ कलाकार लोकनिसँ भरल छल। अपन पुत्रक संस्कारकेँ उद्दीपित करबाक हेतु ओ सर्वात्मना यत्नशील छलाह। प्रिय पुत्रक अक्षरारम्भ महावैयाकरण पं. खुद्दीझासँ करबा ओल। 'आँजी सिद्धिरस्तु'—तिरहुता लिपिमे खड़ी धराओल। संगहि हुनकहि मुहेँ 'अपूर्णे पंचमे वर्षे' 'बालोऽहं जगदानन्द'क श्लोक 'सा ते भवतु सुप्रीता' एहि मिथिला-प्रचलित मंगल पाठक संग प्रथम-प्रथम आशीर्वादी मूल रामायणी 'मा निषाद' श्लोक रटाओल। क्रमहि पुनः नीति-वाक्य सभ प्रसिद्ध कवि-पण्डित अम्बिकादत्त व्यास हुनका कंठस्थ कराओल। ततःपर सुयोग्य विद्वान् लोकनिक देखरेखमे हुनका प्रारंभिक शिक्षा घरहि पर भेटलनि। चुनि-चुनि कऽ संस्कृत हिन्दी अंग्रेजीक शिक्षक राखल गेलाह। तत्काल प्रचलित उर्दू-फारसी लिपिक परिज्ञान हेतु मौलवी सेहो नियुक्त भेलाह। एहि तरहेँ हुनका चतस्र ज्ञानक उपलब्धि हेतु एवं क्रीडा-कौतुक-व्यायाम तथा खेल-धूपक मनोरंजन हेतु यावतो प्रबन्ध राजस वैभवक अनुकूल श्रीनगरहिमे उपलब्ध कराओल गेल।

पुनः गर्भाष्टममे विधिवत् उपनयन संस्कार अपन पित्ती कुमार कालिकानन्द सिंहक आचार्यत्वमे सम्पन्न भेल। किछु दिन धरि वैदिक लोकनिक देखरेखमे ऋचापाठ सेहो विधिवत् कयलनि। एहि प्रकारेँ 9 वर्ष धरि हुनक प्रारम्भिक ओ पारम्परिक शिक्षा घरहि पर सम्पन्न भेल। 1907 ई.मे मुंगेर जिला स्कूलमे हुनक नाम लिखाओल गेल आ' नवीन शिक्षामे ओ प्रवृत्त भेलाह।

तावत् वीचहिमे जखन कुमार एगारह वर्षक अल्प वयसमे छलाह, हुनका पितृवियोगक असह्य दुःखभार उठवय पड़ल। राजा कमलानन्द सिंहक मृत्यु 34 वर्षक अल्प वयसहिमे 1909 ई. मे भऽ गेलनि। फलतः पितृहीन कुमारक अभिभावकत्वक भार पित्ती कुमार कालिकानन्द सिंहक उपर पड़ल। ओ बड़े उदात्तता-पूर्वक किशोर भातिजक लालन-पालन ओ शिक्षा-दीक्षामे दत्तचित्त भेलाह। 1910 मे मुंगेर जिला-स्कूलसँ हुनका पूर्णिया जिला स्कूलमे भर्ती कराओल ओ 1914 ई. धरि ओतहि अध्ययन कयलनि तथा उच्च श्रेणीमे इन्ट्रेन्स परीक्षा उत्तीर्ण कय अपन प्रतिभाक परिचय देलनि।

शिक्षा-दीक्षा

1915 ई. मे कलकत्ताक प्रसिद्ध प्रेसिडेन्सी कालेज ओ गवर्नमेंट संस्कृत कालेज मे अध्ययन कयल एवं 1919 ई. मे कुमार गंगानन्द सिंह वी. ए.क परीक्षा सम्पन्न कयलनि। एहि वीच भारतीय स्वतन्त्रताक आन्दोलन गोखले-तिलकक नेतृत्वमे नर्म-गर्म दल जोर पकड़लक। कुमार साहेवकेँ ओहि दिस विशेष उन्मुख देखि हुनक माय चिन्तित छलीह। हुनकहि जोरसँ हिनका वीचहिमे वैवाहिक वन्धन-मे आवद्ध होमय पड़ल। 1918 ई.मे कोइलख-ग्रामवासी पं. वैद्यनाथ झाक सुपुत्री श्रीमती सिद्धिरसा देवीसँ हिनक विवाह सम्पन्न भेल।

स्नातकोत्तर शिक्षाक हेतु ओ गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज (कलकत्ता) मे प्रविष्ट भेलाह। अपन रुचिक अनुकूल अध्ययनक विषय राखल एवं कलकत्ता-विश्वविद्यालयसँ 1921 ई. मे 'भारतीय इतिहास एवं संस्कृति' विषयमे एम. ए.क उपाधि प्राप्त कयलनि।

ओहि वीच देशमे राजनीतिक क्षितिज पर गांधीजीक तेजस्वी उदय भऽ गेल छल। असहयोग आन्दोलन दिनानुदिन उग्रतर होइत रहल। कुमार साहेवक युवक हृदय ओहि दिस आकृष्ट भेल। भारतक राजनियासतिक लोक, जे ब्रिटिश सरकारक सामन्तशाहीक केन्द्र बनल रहैत छल ततय श्रीनगरक कुमारकेँ विदेशी वस्त्रक परिहार ओ स्वदेशी (खादी)क प्रचार करैत देखल गेल। राजनीतिमे हिनक रुचि दिनानुदिन जागरूक ओ क्रियाशील होइत गेल।

ओही वीच कलकत्ता विश्वविद्यालयक तत्कालीन कुलपति आशुतोष मुखोपाध्याय भारतीय भाषाक अध्ययन-अध्यापनक प्रोत्साहन देवाक व्यवस्था अपन विश्वविद्यालयमे कयलनि। वनैली राजपरिवारक उद्योगेँ ओ रजौर रियासतिक सहयोगेँ मैथिली-चेयरक स्थापना कावाक योजना कार्यान्वित भेले छल। ओहि पदपर श्रीनगरक पूर्व सभा-पंडित खुदी झा ओ छात्रवृद्धिक कारणेँ तदनन्तर वावू गंगापति सिंह सेहो नियोजित भेलाह। पंडितजी कुमार साहेवक अक्षर-गुरु छलथिन। ओही योगेँ मुखर्जी महाशयसँ हिनक परिचय-संपर्क भेल। ओ एहि

राजकुमारक विद्याविनयक अभिरुचि ओ प्रतिभा-प्रभाकेँ देखि शोध-अनुसंधानक दिस प्रोत्साहित कयलनि। फलतः 1921 सँ 1923 ई. धरि शोधछात्रक रूपमे ई अनुसन्धान-कार्यमे प्रवृत्त भेलाह।

ओहि समय हरप्रसाद शास्त्री नेपाल-राजपुस्तकालयमे प्राचीन लेखाक संकलन-कार्यमे निरत छलाह। ज्योतिरीश्वरक दुर्लभ ग्रन्थ वर्णरत्नाकर प्राप्त भऽ गेल छल। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी पं. बबुआजी मिश्रक सहयोगेँ सम्पादन काजमे प्रवृत्त भेलाह। पं. खुद्दीझा विद्यापतिक कीर्तिपताकाक उपलब्ध प्राचीन प्रतिक उद्धारमे संलग्न देखल गेलाह। कुमार गंगानन्द सिंह सेहो ओही क्रममे नेपाले वांगला नाटक कहि प्रसिद्ध नाटकावलीकेँ मैथिली-नाटकक रूपमे घोषित कयलनि तथा ओहिपर अनेक गवेषणात्मक लेख लिखि ओकर भाषा-गीत पर विचार करैत मैथिलीक नाटक-परम्पराक इतिहास प्रशस्त कयलनि।

एहि विषयपर हुनक अनुसन्धानात्मक लेख कलकत्ताक 'एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल' तथा पटनाक 'बिहार रिसर्च सोसाइटी'क शोध विषयक पत्रिकामे प्रकाशित अछि। सुप्रसिद्ध इतिहासविद् डॉ. हेमचन्द्र बरुआ महाशयक निरीक्षणमे ई बरहुतक शिलालेखक सम्पादन कयलनि। ओ एकर ऐतिहासिक महत्त्वपर अनुसन्धानात्मक लेख लिखि शोधात्मक प्रवृत्तिक परिचयसँ विदत्समाजमे समादृत भेलाह। 1923 ई. धरि हिनक जीवन-यौवन विद्याध्ययनक, शोध-चिन्तनक दिशामे प्रशस्ति पौलक। कहल जाइत अछि जे भारतक इतिहास ओ संस्कृतिमे हिनक प्रतिभाक अरुणोदय विद्वत्परम्पराक दिनमान रूपमे उद्भासित होइत यदि ई राजनीतिक दिशा-परिवर्तन दिस नहि प्रवृत्त होइतथि।

किन्तु से रहितहुँ, राजनीतिमे प्रवेश करितहुँ, ई सतत अध्ययन दिस प्रवृत्त देखल गेलाह। देश-विदेशक शिक्षा संस्थानसँ सम्बन्ध बनौने रहलाह। शोध-अनुसन्धान एवं नव-नव ज्ञान-विज्ञानक अर्जनमे अपनाकेँ समर्पित करैत अयलाह। इएह कारण छल जे ओ रोआयल एसियाटिक सोसाइटी आफ ग्रेट ब्रिटेनक और आयरलेंडक फेलोक रूपमे सम्बद्ध भेलाह। बेलजियम ब्रसेलक साइकोलोजी फाउन्डेशनक एम. ए. कोरेस्पोन्डेन्स कोर्ससँ मनोविज्ञानक अध्ययन पूर्ण कयलनि। देश-विदेशक कतिपय संस्थासँ सम्बद्ध रहि ज्ञान-क्षेत्रक विस्तार करैत रहलाह।

अखिल भारतीय प्राच्य विद्यासम्मेलनक वाराणसी एवं मद्रास अधिवेशनमे हिनक विद्वत्तापूर्ण भाषण प्रशंसित भेल। पी. ई. एन.मे मैथिलीभाषा विषयक अनुसन्धानात्मक लेखसँ मैथिलीभाषाक मौलिक विशेषता ओ साहित्यिक गरिमासँ भाषाविद् लोकनिकेँ मैथिलीक ऐतिहासिक महत्त्वसँ परिचय कराओल।

राजनीतिक गतिविधि

समाज ओ संस्कृतिक क्षेत्रमे अध्ययन-कालहिसँ कुमार साहेव रुचि लैत छलाह। कलकत्ताक छात्र-जीवनमे जखन-तखन स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित वेलूर मठ जाइत-अवैत रहलाह। स्वामीजीक उक्ति जे 'भारतक एक-एक कण धूलि हमरा लेल तीर्थ थिक, भारतीय एक-एक जन हमर आराध्य देवता; एकर अभ्युदयक चिन्तन हमर जीवनक लक्ष्य थिक।' एहि उद्देश्यक संग 'उत्तिष्ठत, जागृत प्राप्य वरान्निबोधत'क प्रेरणा-वाक्य भारतीय प्रबुद्ध युवक-वर्गक लेल समाज, संस्कृति ओ राजनीति दिस उत्प्रेरित करैत छल। एम्हर सचीन्द्रनाथक वन्दी जीवन प्रकाशित भऽ चुकल छल जे भारतीय, विशेषतः बंगालक युवा-समुदाय मे बलिदानी प्रवृत्ति जगा रहल छल ओ अरविन्दक 'वन्देमातरम्' पत्रिका भारतीय स्वाधीनताक चेतना समाजमे भरि रहल छल। वीर सावरकरक स्वतन्त्रता संग्रामक इतिहास तरुणवर्गमे चेतना जगा रहल छल। ओम्हर गाँधीजी द्वारा देशमे असहयोगक आन्दोलन जोरसँ जारी छल। एही अन्तरालमे छात्र-जीवन समाप्त कय कलकत्तासँ कुमार साहेव अपन घर फिरैत छथि।

एतय आबि पूर्णिया-क्षेत्रमे राष्ट्रियताक भावना जन-समाजमे जागृत करब आरम्भ कयलनि। समाजक उत्थानमे जे सभ संस्था लागल छल तकरा सभसँ सम्पर्क स्थापित कयलनि। शिक्षा-संस्थानमे शिक्षक लोकनिक समस्या पर ध्यान देलनि। सार्वजनिक लोकप्रियताक प्रमाण स्वरूप ई पूर्णियाक नगर-पालिकामे 1923मे आयुक्त निर्वाचित भेलाह। पुनः 1924 ई.मे पूर्णिया जिला बोर्डक सदस्य चुनल गेलाह। 1925 ई.मे पूर्णिया जिला-शिक्षक संघक अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मतिसँ मनोनीत भेलाह। तथा 1925 ईसवियहिमे पूर्णिया जिला कांग्रेसक अध्यक्ष बनाओल गेलाह।

एहि सम पदपर हिनक व्यापक कार्यक्षमता देखि जन-मानस तेना आकर्षित छल जे ओहि इलाकामे ई प्रधान लोक-नेता बनि गेलाह। फलतः पूर्णिया, भागलपुर-संथाल प्रगन्नाक प्रतिनिधित्व करबा लेल स्वतन्त्र रूपेँ ई भारतीय व्यवस्थापिका सभा (तत्कालीन बड़ा लाटक व्यवस्थापिका काउन्सिल आफ स्टेट्स)क सदस्य सन् 1923मे निर्वाचित भेलाह। स्मरणीय जे कांग्रेसक लोकप्रियताक कालहुमे कांग्रेस-स्वराज्य पार्टीक उमेदवार स्वामी विद्यानन्दकेँ ई पराजित कयलनि।

ओहि समयमे कांग्रेसक विरोधमे यदि केओ कतहुसँ निर्वाचित होथि तँ ओ गैर-कांग्रेसी कहि सरकार-परस्त घोषित होथि। किन्तु कुमार गंगानन्द सिंह एकर विपरीत स्वतन्त्रचेता नेता रूपमे सिद्ध भेलाह। हिनक राष्ट्रियताक प्रमाण स्वरूप तत्कालीन घटना उद्धृत अछि। भारतीय व्यवस्थापिकाक संगठन-कालमे कांग्रेसक

दिससँ स्वर्गीय विट्ठलभाइ पटेल अध्यक्ष-पदक हेतु उमेदवार छलाह। ब्रिटिश सरकारक समर्थनसँ स्वर्गीय दीवान वहादुर सर राघवाचार्य संघर्ष हेतु ठाढ़ कयल गेलाह। सरकारी सदस्य एवं कांग्रेस-सदस्यक संख्या समान छल। एकेटा एहन स्वतन्त्र सदस्य कुमार गंगानन्द सिंह छलाह जनिक मत पक्ष-विपक्षक लेल निर्णायक छल।

कहव व्यर्थ होयत जे ओहि समय ब्रिटिश शासनक दवदवा तेना व्याप्त छल जे खास कऽ राज-रियासतिक लोक शासकीय सत्ताक विरोधमे जयवाक साहस नहि करैत छलाह। किछु तँ दमनक आतंकेँ, किछु सत्ता-अधिकार ओ उपाधिक लोभेँ सरकारेक संग पुरैत छलाह। परंच कुमार गंगानन्द सिंह दोसर धातु-तत्त्वक आभिजात्यवर्गीय युवक रहथि, देशभक्तिक भावनासँ ओतप्रोत प्राणैषणाक व्यक्ति छलाह। कहल जाइछ जे हिनका राजा वहादुरक उपाधि देवाक एवं वड़ा लाटक एक्सक्यूटिवमे मनोनीत करवाक प्रलोभन देल गेल। परंच ई स्वतन्त्रतापूर्वक अपन ध्येय-पथ पर आरूढ़ रहलाह तथा अपन मत दय कांग्रेस-पक्षक प्रत्याशी ख्यातनामा विट्ठलभाइ पटेलकेँ विजयी बनौलनि, जनिक नाम स्पीकरक इतिहासमे दृढ़ता, निष्पक्षता ओ राष्ट्रियताक प्रतीक रूपमे उल्लिखित अछि। हिनक एहि राष्ट्रिय भावनाक सर्वत्र प्रशंसा भेल। स्वयं महात्माजी एहि प्रसंगक वक्तव्यमे कहलनि जे कुमार गंगानन्द सिंहक देशभक्ति हमरा सबहिक संग समान रूपेँ तरंगायित अछि। पाछाँ वैधानिक प्रक्रिया लेल प्रवर्तित कांग्रेस स्वराज्य पार्टी हिनका अपनाओल तथा स्वर्गीय मोतीलाल नेहरूक अध्यक्षतामे गठित एहि पार्टीक महामन्त्री रूपमे 1928 ई.मे कार्यभार ग्रहण कयलनि। 1925 सँ 1929 धरि ई वरोवरि पूर्णिया जिलाक कांग्रेसक अध्यक्ष होइत रहलाह। 1926 सँ 1930 धरि ई व्यवस्थापिकाक सदस्य रहलाह।

1926 ई.मे महात्मा गांधी डॉ. राजेन्द्रप्रसादक संग पूर्णिया-स्थित कुमार साहेबक महलमे रहि एहि भूभागक राजनीतिक स्थितिक एवं कोसी-पीड़ित जनताक अभाव-अभियोगक अध्ययन कयलनि। एहि ठाम महात्माजी अपन लिखय-वाला बैसकी टेबुल उपहार देलनि जकरा ओ अपन बैसकीमे स्मृतिचिह्नरूपेँ जोगाय रखैत अयलाह।

1930 ई.मे जखन कांग्रेसक घोषणा भेल जे व्यवस्थापिका ओ प्रान्तीय परिषदक सदस्य लोकनि पदत्याग करथि तखन मोतीलाल नेहरू, मालवीयजी, सत्यमूर्ति, अणे साहेव, नीलकंठदास प्रभृतिक संगहि इहो सदस्यतासँ त्यागपत्र दऽ देलनि। पुनः जखन एसेम्बली प्रवेशक निश्चय कयल गेल तँ ई दरभंगा-सारन-चंपारन क्षेत्र सँ निर्विरोध सदस्य निर्वाचित भेलाह।

ओहि समयमे महामना पं. मदनमोहन मालवीयक संग हिनका विशेष सम्पर्क रहलनि। हुनक विचारसँ ई मुख्यतः प्रभावित छलाह। जखन साम्प्रदायिक निर्णय

11.7143
9.12.04

द्वारा भारतीय राजनीतिमे ब्रिटिश नीति मुस्लिम-गैरमुस्लिमक भेद निर्वाचन-पद्धतिमे अनलक तखन मालवीयजी एकर विरोधक झंडा उठौलनि। कांग्रेस द्विविधामे पड़ल छल। मालवीयजीक प्रेरणासँ ई व्यवस्थापिकाकेँ त्याग कय देल तथा मालवीयजीक नेतृत्वमे पुनः चुनाव-संग्राममे प्रवृत्त भेलाह। एहि संघर्षमे यद्यपि कांग्रेस विजयी रहल किन्तु सम्प्रदाय-विभाजनक विरोधमे जे संघर्ष जारी छल ताहिमे ई अभ्युदय-सम्पादक कृष्णकान्त मालवीयक संग विभिन्न प्रान्तक जन-समाजकेँ साम्प्रदायिक निर्णयक विषवृक्षक परिणामसँ अवगत करयवाक हेतु प्रचार-यात्रा कयलनि। एहि प्रकारेँ राष्ट्रियताक नामपर साम्प्रदायिक तुष्टिक नीतिक विरोध करैत ओ क्रमशः हिन्दू संगठनक आवश्यकताक अनुभव करय लग-लाह। हिन्दू-संगठनक प्रभावशाली नेता डॉ. मुंजे, डॉ. सावरकर आदिसँ हिनक सम्पर्क बढ़ैत गेल। तेसर दशकक अन्तसँ हिनक कृतित्व विशेषतः हिन्दूमहासभासँ जुड़ि गेल।

एहिसँ पूर्व कांग्रेस एहन समन्वयात्मक राष्ट्रिय मंच छल जाहिमे विभिन्न सम्प्रदायक संगठन सेहो समाहित रहैत छल। हिन्दूमहासभा, मुस्लिमलीग सदृश संस्था सेहो कांग्रेसक संगहि चलैत छल। मि. महम्मद अली जिन्ना कांग्रेसमे रहथि ओ मुस्लिम लीगमे सक्रिय भाग लेथि। मालवीय जी कांग्रेसक अध्यक्षपदहुकेँ सुशोभित करथि तँ हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापनोमे रहथि ओ हिन्दूमहासभोकेँ सम्बोधित करथि। कांग्रेसक कर्णधार राजेन्द्र बाबू, कांग्रेसकर्मी ब्रजकिशोर बाबू, जगतनारायण लाल प्रभृति हिन्दू-संगठनकेँ साम्प्रदायिक नहि बुझि ओकर संचालनो करथि। 1926-28 ई.मे जखन पूर्णिया हिन्दू महासभाक अध्यक्ष कुमार गंगानन्द सिंह छलाह तखन स्व. ब्रजकिशोर बाबू ओ राजेन्द्र बाबू हिन्दू महासभाक उपाध्यक्ष ओ जगतनारायण लाल महामन्त्री निर्वाचित भेलाह। क्रमशः साम्प्र-दायिक निर्णयक बाद, नेहरू-कमीटीमे जिन्ना द्वारा चौदह शर्त पेश करबाक बाद, कांग्रेस महासभा ओ लीग दूहू सँगठनसँ संपर्क हटाय लेलक। सुतरां कुमार गंगानन्द सिंह कांग्रेसक एहि प्रकारक नीतिसँ विरक्त भए, हिन्दू-संगठनक दिस सर्वात्मना अनुरक्त भए गेलाह।

हिन्दू महासभासँ सम्पर्क

कुमार गंगानन्द सिंह कांग्रेसमे जहिओ सक्रिय छलाह, टर्कीमूलक खिलाफत आन्दोलनकेँ भारतीय स्वतन्त्रताक संग जोड़ि लेबाक गाँधीजीक आग्रहकेँ हृदय-ग्राह्य नहि कय सकलाह। हुनक विचारमे कोनो भारतीय समुदाय कोनहु शर्त पर स्वाधीनता आन्दोलनमे योगदान देथि, ई स्वस्थ परम्परा नहि। महम्मद अली जिन्नाक साम्प्रदायिक राष्ट्रियता एही पद्धतिसँ बढ़ल गेल जे ब्रिटिश राजनीतिज्ञ केँ अन्तमे भेदनीति चलयबाक अवसर देलक एवं भारत विभाजनक कारण बनल।

एहि विषयमे सावरकरक नीति हिनका विशेष आकर्षित कयलक जे भारतीय मुस्लिम समुदायसँ स्वतन्त्रता संग्राममे सहयोगक प्रसंग कहने छलाह—'संग रहब तँ अंग लगाय चलब, संग नहि देब तैओ तकर परवाहि नहि, यदि विरोधमे जायब तथापि हम अड़िकऽ लड़ि-झगड़ि कऽ स्वाधीनता अर्जित करबे करब।'

महात्मा गाँधी, मोतीलाल नेहरूक राजनीतिक संग रखितहुँ ई मालवीयजीक अन्तरंग रहलाह। मौलाना आजादसँ अधिक आत्मीयता वीर सावरकरसँ रहलनि। नेहरूजीसँ विशेष सरदार पटेलक ई प्रशंसक रहलाह।

ओहि कालक राजनीतिक स्थिति एवं सामाजिक परिस्थितिओ किछु ताहि प्रकारक बनि गेल छल जे हिनक राष्ट्रिय भावनामे एक नव मोड़ देलक। कांग्रेस जतेक साम्प्रदायिक एकता हेतु मुस्लिम वर्गवादीक सन्तुष्टिमे लागल ततेक ओहि पक्षक भाङ बढ़ैत रहल। ओम्हर बृटिश शासकीय वर्ग भेदनीतिक जाल तेना पसारैत गेल जे हिन्दू-मुसल्मानक बीच कटुता बढ़िते गेल। गोहत्या एवं मस्जिदक समीप गाजा-बाजाक निनाद तेना झगड़ा-फसाद मचौलक जे 1925 क बाद देशमे एक नव समस्या ठाढ भेल। बम्बइ-कलकत्ता-दिल्ली-अलीगढ-कानपुर आदि शहरमे जखन-तखन दंगा-फसाद, छुरेबाजीक घटना देशक वातावरणकेँ विषाक्त बनबैत रहल। अधिकांश स्थलमे असंगठित हिन्दू हताहत देखल जाइत छल। फलतः डॉ. मुंजे, सावरकर एवं स्वयं मालवीयजी चिन्तित भए उठलाह। ओ हिन्दू-संगठनक आवश्यकताकेँ अनिवार्य कहि आन्दोलन शुरू कयलनि। कुमार साहेब सेहो एहि विचारधाराक पोषणमे प्रवृत्त भेलाह। हिन्दू महासभाक एक कर्मठ नेताक रूपमे तत्काल हिनक क्रिया-कलाप दिनानुदिन हिन्दू-संगठनक दिशामे क्रियाशील देखल गेल। विहार प्रान्तीय हिन्दूसभाक 1925-35 धरि पुनः 1936-38 ओ अन्ततः 1941— धरि अध्यक्ष रहलाह। 1926-28मे अखिल भारतीय हिन्दू-महासभाक अन्यतम कार्यकारी सदस्य ओ 1942 मे उपाध्यक्ष निर्वाचित भेलाह।

1941 मे वीर सावरकरक अध्यक्षतामे हिन्दूमहासभाक देश-विभाजन विरोधी महासम्मेलन भागलपुरमे आयोजित छल तकर ई स्वागताध्यक्ष छलाह। भारत सरकार एहि पर रोक लगा देलक। अथापि एकरा सफल बनयबाकि हेतु ई प्रान्त भरिमे हिन्दू-जागरण कयलनि। ओही क्रममे रोसड़ा मध्य प्रान्तीय हिन्दू-सम्मेलन आयोजित भेल। स्वागताध्यक्ष छलाह विन्देश्वरीप्रसाद सिंह; ओहि समय लक्षावधि उत्साहित जनता 21 हाथीक शोभायात्रासँ हिनक स्वागत कए सम्मेलनकेँ सफल बनयबाक प्रतिश्रुति लेलक। किन्तु सरकार एकरा रोकबाक लेल प्रतिबंध लगा देलक। कुमार साहेबकेँ दरभंगामे स्टेशन पर रोकि देल गेल, नजरबंद कय देल गेल, ओ हुनका सचिवसदनक चारू दिस पुलिसक पहरा पड़ि गेल। स्वातन्त्र्यवीर सावरकरकेँ गया स्टेशन पर गिरफ्तार कऽ लेल गेल। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जीकेँ कहलगाँवक डाकबंगला पर नजरबन्दीमे राखल गेल। भागलपुरमे

देशभरिसँ जुटल हजारों सदस्यकेँ गिरफ्तार कय लेल गेल। अथापि जनसमूह भागलपुरक सड़क-गली सब तरि व्याप्त छल। अध्यक्ष-स्वागताध्यक्षक भाषण सुनाओल गेल, प्रस्ताव सभ वितरित भेल।

पुनः नजरबन्दीसँ मुक्त भेलापर भागलपुर सेंट्रल जेलक फाटकपर हजारो कार्यकर्ताक संग कुमार साहेब धरना पर बैसलाह। ओ बंदी प्रतिनिधि लोकनिकेँ मुक्त करौलनि। ओ पूर्वनिर्धारित सभास्थल पर जाय अभिनन्दनपूर्वक हिन्दू-संगठनक शंखनाद सुनौलनि। 'डेली हिन्दू आउट लुक' टिप्पणी करैत लिखलक जे 'कुमार साहेब हिन्दू-हितक महान् पक्षधर छथि। हिन्दुत्वक आदर्शकेँ पुनर्जीवन देवामे हिनक बहुल योगदान अछि।'

भारत-विभाजनक विरोधमे ओ विहारक जिला-जिलामे हिन्दू-सम्मेलन द्वारा जन-जागरण करैत रहलाह। एहि क्रममे तेंतीसम आयोजन बेतिया मध्य पं. राव-णेश्वर मिश्रक अध्यक्षतामे छल, उद्घाटनक हेतु आगत कुमार साहेबक स्वागतीय विशाल शोभायात्रामे तेंतीस हाथीक हलका सजाओल गेल छल। गाँधीजीक प्रथम कार्यक्षेत्र चंपारनमे एहि प्रकारक उत्साह निलहाकोठी विरोधी आन्दोलनक बाद एहीमे देखल गेल छल।

जखन पुनः भारत सरकार निश्चय कयलक जे अल्पसंख्यक मुस्लिम वर्गकेँ भारतीय सेवामे 25 प्रतिशत स्थान संरक्षण देवाक थिक तखन ओकर विरोधमे ऑल इंडिया हिन्दू लीग लखनउ, हिन्दू पोलिटिकल कान्फ्रेन्स कलकत्ता, फ्रंटियर पंजाब एन्ड सिन्ध हिन्दू कान्फ्रेन्सक आयोजनमे कुमारसाहेब प्रमुख भाग लेलनि। लोकनायक अणे अध्यक्षता कयने छलाह। एहिना 1 फर्वरी 39मे बकरीदक अवसर पर बररागाँव-समस्तीपुर दंगामे गोलीकांडसँ हिन्दूक जान-मालक क्षति भेल छल, तकर जाँच करवाय क्षतिपूर्ति कराओल तथा देशक विभिन्न भागमे दंगा-फसादक आरंभमे ककर प्रथम योग रहैछ तकर जाँच-विवरण प्रकाशमे आनल। भारत-विभाजनक विरोधमे हिन्दू राष्ट्रक सैनिकीकरण आवश्यकता पर जोर दैत ई प्रान्त-प्रान्तमे सर जे. पी. श्रीवास्तवक संग भ्रमण करैत रहलाह। संगहि 1934 मे विहार प्रोवेन्सियल काउ प्रिजर्वेशन लीग (गोहत्या निरोध संघ)क स्थापनामे बाबू धर्मलाल सिंहक सहयोग पूर्वक प्रमुख भाग लेलनि, जकर प्रथम अधिवेशन दरभंगा मे महामना मालवीयजीक अध्यक्षतामे आयोजित भेल छल। ई लीग पुनः विहार प्रोवेन्सियल काउ प्रोटेक्शन एसोसिएशन नामसँ संगठित भेल जकर कार्यसमितिक सदस्य मालवीयजीक अतिरिक्त डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, जगतनारायण लाल, महाराजा-धिराज सर कामेश्वर सिंह प्रभृति छलाह, ओकर महामन्त्री कुमार गंगानन्द सिंह भेलाह।

दरभंगाक कार्यकाल

एहि प्रकारे राजनीतिक गतिविधिक संग हिनक सार्वजनिक जीवन ओहि बीच तेना अस्त-व्यस्त रहल जे ई अपन स्टेट-परिवारकेँ कोनो व्यवस्थित रूप नहि दय सकलाह। श्रीनगर-परिवारक प्रधान कर्ता पुरुष रहितहुँ ई ओकर देखरेख करवामे समय नहि दऽ सकलाह। हिनक उदारहस्त पिता राजा कमलानन्द ओ परिवारक अभिभावक हिनक पित्ती कुमार कालिकानन्द सिंह अपन विशाल कुटुम्ब-परिवारक मर्यादापालनक क्रममे राज्यकेँ ऋणग्रस्त छोड़ि गेलाह। एम्हर जीवनक प्रभात-कालहिसँ कुमार गंगानन्द सिंह राजनीतिक, सामाजिक ओ साहित्यिक-सांस्कृतिक आन्दोलनमे तेना व्यस्त रहलाह जे स्टेटक स्थिति सुधारबाक अवसर हिनका भेटलनि नहि। हिनक छोट भाय कुमार अच्युतानन्द सिंह विदेशमे शिक्षा प्राप्त करैत। चारिगोट पितिऔत भाइ सब नवयुवक। सब दिस केवल व्ययेव्यय। सार्वजनिक जीवनमे स्वयं केवल खर्चे कयनिहार रहलाह, ओम्हर आयक स्रोत सुखाइत रहल। ऋणक भार स्टेट पर ततेक ने बढ़ैत गेल जाहिसँ स्थिति एहन उपस्थित भए गेल जे यदि उचित व्यवस्था नहि कयल जाय तँ हिनक समस्त संपत्ति ऋणमे नीलाम भए जाइत।

तावत् स्वर्गीय महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह राज्यासीन भेलाह। हुनका लंदनक गोलमेज कान्फ्रेंसमे सम्मिलित होयबाक आमंत्रण भेटलनि। कुमार साहेबक योग्यता ओ राजनीतिक यश-ख्यातिसँ ओ सुपरिचित छलाहे। अपन आप्त सचिवक रूपमे हिनका संग रखबाक इच्छा व्यक्त कयलनि। संगहि सधौआ-पटौआ पर स्वीकार कए हिनक स्टेटकेँ ऋणमुक्त कए बचयबाक उपाय धराय देलनि। तथा हिनक परिवारक आनो सदस्यकेँ दरभंगा-राजक विभिन्न पद पर नियोजित कए हिनका पारिवारिक चिन्तासँ उन्मुक्त कए देलनि। फलतः कुमार साहेब हिनक साचिव्य स्वीकार कए अपन जीवनक दिशा परिवर्तित कएल। आब हुनक कार्य-क्षेत्र पूर्णिया-श्रीनगरसँ दरभंगा भए गेल।

प्रसंगतः उल्लेखनीय जे हुनक माय रानी कमलावती कोन स्वभावक केहन अभिमानवती ओ यम-नियमवती छलीह से हुनक उत्तरकालीन जीवन-विधि सँ ज्ञात होइछ। कुमारसाहेब जखन महाराजाधिराज-दरभंगाक साचिव्य स्वीकार कयलनि, कुमार-माताक राजस व्यक्तित्वकेँ ततेकक पराभूत कयलक जे दरभंगा कहिओ नहि अयलीह। तेँ हिनकहि सपरिवार हुनका प्रणाम अर्पित करबा लेल समय-समयपर जाय पड़नि। पतिक मृत्युक अनन्तर ओ कहिओ पलंग पर पैर नहि देलनि, सदा भूभिशय्यापर सुतैत रहलीह। राज्य जा'धरि ऋणग्रस्ततासँ उबड़ि नहि जाय ता'धरि केराक पात पर भोजन करितहि अन्तर्निहित भेलीह, भने हुनक परिवार चानीक थारी-कटोरामे पूर्वव्यवहारानुसार भोजनादि करैत रहथि।

श्रीनगरक राजभवन जहिआ 1932मे अग्निकांडमे भस्मसात् भेल तहिआसँ ओ तृणकुटीरमे निवास करैत अपन शेष जीवनयापन करैत रहलीह। अपन मायक चर्चा करैत कुमार साहेबक मानोन्नत व्यक्तित्व पघिलि जाइत छल, श्रद्धाश्रुसँ आँखि भरि जाइत छल।

1930 सँ 1950 धरि ओ महाराजाधिराजक साचिव्य करैत मिथिला-मैथिलीक अभ्युत्थानमे बहुल-किछु योगदान कयलनि। हुनक साहित्यिक साधनाक हेतु एहि ठामक वातावरण अनुकूल रहल। अपन व्यस्ततापूर्ण जीवनहुमे ओ जतबे किछु लिखलनि, ताहीसँ हुनक नाम-यश साहित्यिक जगतमे व्याप्त भए गेल। हिन्दी, अंग्रेजी ओ संस्कृतक संगहि, विशेषतः मैथिली-साहित्यमे कथाकार, एकांकीकार ओ लेखक-समीक्षक रूपमे ओ मिथिला-मैथिलीक इतिहासमे अपन अनुपम स्थान बना लेलन्हि।

एहि बीस वर्षक दीर्घकालमे राज-दरभंगाक दिससँ जे कोनो सार्वजनिक काज कयल गेल, मिथिला-मैथिलीक सामाजिक-साँस्कृतिक आयोजन भेल, सबमे हिनक प्रमुख योगदान रहल।

'किछु देखल किछु सुनल' में पण्डित गिरीन्द्रमोहन मिश्रक शब्दमे 'संयोगसँ बिहारक मन्त्रिमण्डलमे, कुमार गंगानन्द सिंह, जे किछुए दिन पहिने महाराजाधिराजक निजी सचिव पद पर कार्य करैत छलाह, शिक्षामन्त्रीक पदपर आओर हुनकहि द्वारा महाराजाधिराज दरभंगामे संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापनाक हेतु सरकारक समक्ष प्रस्ताव उपस्थित कराओल।'

जहिना ओ अपन व्यक्तित्वसँ स्थानीय संस्था-आस्थाकेँ प्रतिष्ठित कयलनि तहिना हिनक कृतित्वकेँ स्थानीय जनता ओ सामाजिकता अपन नेताक रूपमे मान्यता दए हिनका समादृत करैत रहल। अपन वैयक्तिक योग्यता ओ राज-दरभंगाक प्रतिपत्ति हिनक प्रभाव-क्षेत्रकेँ विस्तृत करैत रहल।

एतहिसँ ओ बिहारक विधान-परिषदक सदस्य निर्वाचित भेलाह ओ अन्ततः ओकर सभापतिक पदकेँ विभूषित कयल। विश्वविद्यालयक सिनेट ओ तदुत्तर सिन्डिकेटक सदस्य भेलाह। हिन्दू महासभाक उपाध्यक्ष मनोनीत भेलाह। मैथिलीकेँ विश्वविद्यालयीय स्वीकृति दियैबामे दरभंगा-नरेशक सहयोगी सिद्ध भेलाह तथा मैथिल महासभाक सामाजिकताकेँ मिथिला-मैथिलीक सार्वजनिक भावना बिस मोड़ देबामे कृतकार्य रहलाह। मैथिली साहित्य परिषदक क्रिया-कलापकेँ अध्यक्षतासँ ओ विकास-कार्यक सहायतासँ सुदृढ़ करबामे सहायक सिद्ध भेलाह। बिहारमे 'इंडियन नेशन' ओ 'आर्यावर्त'क प्रवर्तनसँ दैनिक प्रकाशन करयबामे राज-दरभंगाकेँ प्रेरित कयलनि। अनेक सामाजिक, साहित्यिक ओ सांस्कृतिक संस्था-संस्थानकेँ सम्बद्ध रहि बिहारक लेखक-समुदायकेँ प्रोत्साहन दैत रहलाह।

हिनक आवास 'सचिव सदन' तत्कालीन विद्यासेवी बुद्धिजीवी कवि लेखक ओ पत्रकार लोकनिक प्रेरणा-केन्द्र बनल छल।

कतोक व्यक्तिक धारणा छल जे दरभंगा-राजक सेवाकाल हिनक अभ्युदयमुखी जीवन-यात्राक व्यवधान-काल कहल जायत। किन्तु बहुतो व्यक्तिक सयुक्तिक उक्ति अछि जे दरभंगाक अवस्थान हिनक जीवनक चरमोत्थान काल रहल, जतय रहि कऽ जीवनक विविध क्षेत्रक अनुभव प्राप्त कयलनि। राजनीतिक एकरंगा जीवन-परिधानकेँ समाज-संस्कृति, भाषा-साहित्य ओ भावयित्री-कारयित्री प्रतिभाक सतरंगा रूपमे संयोजनक अवसर प्राप्त कयलनि। दूहू प्रकारक वैचारिकताक बीच एतवा तथ्य स्पष्ट होइछ जे एहि परिवर्तनसँ यदि राष्ट्रव्यापी राजनीतिक जीवनक क्षणिका ज्योति जँ कने मद्धिम पड़ल तँ चिरस्थायी सांस्कृतिक ओ साहित्यिक मणि-मोति कने विशेषे चमक धयलक।

एहि कालावधिमे हिनक क्रिया-कलाप अनेक मोड़ लेलक। स्वतन्त्रचेताक राजनीतिक चेतना-स्रोत आव दरभंगा-राजक समाजोन्मुखी सांस्कृतिक संवेदनाक कूल-किनारक मध्य प्रवाहित होइत चलल। मैथिलीक स्वीकृतिक आन्दोलनसँ मिथिलाराज्यक नव निर्माण संकल्पधरि, कोसी-समस्यासँ संस्कृत इन्स्टिच्यूट एवं युनिवर्सिटीक अनिवार्यता धरि, स्काउट सेवादलसँ, सैनिकीकरण एवं 'अन्नं बहु कुर्वीत' (अधिक अन्न उपजाउ) संरचना धरि, रेडक्रास सोसाइटीक परिचर्या सेवासँ हिन्दी साहित्य सम्मेलन एवं सुहृद् संघक अधिवेशन धरि, मिथिलेश-महेश-रमेश व्याख्यानमालाक प्रवर्तनासँ प्राच्य विद्या महासम्मेलनक योजना धरि, हिन्दी-मैथिली कविसम्मेलनसँ, विश्वविद्यालयीय पाठ्ययोजना धरि शत-शत क्रियाकलाप मे कुमार गंगानन्दक योगदान अनवरत चलैत रहल।

दरभंगा-राजक लगभग तीन दशकक सम्पर्क-कालमे कुमार साहेब मिथिलेश महाराज कामेश्वरसिंहक आप्त सचिव रहबाक कारणेँ बहुधा हुनक संग दिल्ली-शिमला-कलकत्ता आदि बाहरे यातायातमे रहथि। वर्षमे अधिकसँ अधिक तीन-चारि मास दरभंगा स्थिर रहि सकथि। हिनक ई समय बहुधा अध्ययन-चिन्तन एवं साहित्यिक गतिविधिमे लागि सकनि। हिनक साहित्यिक रचना एही मध्य जे-किछु भऽ सकल। एतहु सार्वजनिक जीवनमे हिनका निरन्तर व्यस्त देखल जाइत छल। यदा-कदाचित् निशीथ समयमे जखन ई एकान्त होथि तखन कलम पकड़थि। सेहो साहित्यिक बन्धुलोकनिक विशेष आग्रह पर। फलतः जेहन हिनक प्रतिभा-स्फूर्ति छल तदनुकूल ई लिखि नहि सकलाह। परंच जतवे ई लिखलनि से साहित्यक बहुमूल्य वस्तु भए गेल। पण्डित रमानाथ झाक कथनानुसार, 'लिखवाक हिनका समयो नहि हो; जेहो लिखथि से कतेक तगादा कएला पर। परन्तु जखन कलम धरथि ओ लिखथि तखन जे वस्तु तैआर हो से अपना ढंगक, अद्भुत, विलक्षण चमत्कारक! विशेष नहि लिखि सकलाह से सत्य, परन्तु जतवे लिखलनि

ओतवहिसँ हिनक नाम मैथिली-साहित्यक इतिहासमे अमर रहत।' सुहृद् संघक उन्नेता स्व. महेश्वरप्रसाद नारायणक उक्ति छल जे 'हिनक साहित्यिकता ओ स्फूर्ति सर्वविदित अछि। रेडक्रास समिति पटनाक अमोजकतामे कवि सम्मेलनक अध्यक्षपदसँ जे पद्यवद्ध भाषण कयल से हिन्दी साहित्यक अमूल्य निधिक रूपमे चिर-स्मरणीय रहत।' मिथिलेश-महेश-रमेश व्याख्यान-मालामे संस्कृतमे देल गेल भाषण हिनक संस्कृतमे प्रेम ओ व्युत्पत्तिक द्योतक छल। अंग्रेजीक वक्ता रूपमे ई जँ व्यवस्थापिकामे प्रसंसित रहलाह तँ 'इडियन नेशन'मे 'वृहस्पतिज़ म्यूज' नामसँ लिखल हिनक नोट-टिप्पणी परिमार्जित शैली ओ व्यंग्य-रंगसँ रंजित अंग्रेजीक नमूना मानल जाइत रहल।

हिनक वृत्ति-प्रवृत्तिसँ एतवा स्पष्ट होइछ जे ई राजनीतिमे जतवा ऊर्जा लगाओल तकर आंशिको यदि साहित्य-सर्जनामे लगा सकितथि तँ मिथिलाक शरत्चन्द्र-प्रेमचन्द-मामा वरेरकर कहवितथि। तथापि जतवे जे ई लिखि देलनि से हिन्दीक गुलेरीजी जकाँ मैथिलीक प्रथम श्रेणीक साहित्यिक हिनका सिद्ध कय गेल। विशेषतः एही लऽ कऽ ई अमर छथि ओ रहताह।

उत्तर जीवन

1950 काल धरि देशमे स्वतन्त्रता ओ गणतन्त्रक स्थापनासँ बहुत किछु परिवर्तन आवि गेल छल। देश-विभाजनक संग ओ जमीन्दारी उन्मूलनक कारणेँ दरभंगा-राजक परिधि-परिवेशमे कमी भए गेल। बहुत क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तानमे पड़ि गेने एवं रेवेन्यू समटि गेने दरभंगा-राजक स्थिति डँवाडोल भए गेल। ओम्हर हिनकहु लोकनिक सम्पत्ति सधौआ-पटौआक अन्तर्गत ऋणयुक्त भए गेले छल, ओकर देखरेख प्रयोजनीय भए गेल। देशक राजनीतिक दिशा नव रूपेँ निर्धारित होमय लागल। महाराजाधिराजसँ विचारपूर्वक ई कांग्रेसक सक्रिय सदस्यता स्वीकार कए दरभंगासँ पटना अपन कार्यक्षेत्र बनाय लेलनि। विधान परिषदक सदस्य रूपेँ ई राजनीतिमे प्रवर्तित छलाहे, पश्चात् ओकर अध्यक्ष रूपेँ मनोनीत भेलाह। 1962 ई. मे आवि एहि ख्यातनामा सहयोगीकेँ तत्कालीन मुख्यमन्त्री डॉ. श्रीकृष्णसिंहसँ अपन केविनेटमे शिक्षामन्त्री बनाओल गेलाह। ओहि अवधिमे शिक्षा-नीतिकेँ व्यापक करैत दरभंगामे संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना करबामे कृतकार्य भेलाह।'[1]

---

1. डॉ. श्रीकृष्णसिंहक मृत्युक उपरान्त 1966 ई. मे ई संस्कृत विश्वविद्यालयक वाइस चान्सलर बनाओल गेलाह, जकर चारि वर्ष धरि ई संचालन करैत अन्तमे 1970क 17 जनवरी कऽ ई 72 वर्षक वयसमे स्वर्ग प्रयाण कयलनि।

एहि वीच कुमार साहेव राज्यक ओ देशक विभिन्न शिक्षा संस्कृति पुरातत्त्वक विकासमे योगदान दैत रहलाह। वोधगया टेम्पुल मैनेजमेन्टक नियममे संशोधन आनि ओकरा अन्ताराष्ट्रिय रूप दियैवाक यत्न रखलनि तथा ओकर विकास करवओलनि। भारतीय ज्ञानपीठक तृतीय अधिवेशन 1965मे लक्षमुद्राक सर्वोच्च लेखन-पुरस्कार दियैवाक व्यवस्था प्रस्तावित करवामे छलाह। 1962मे विहार स्टेट चीफ कमिश्नर रहि, नवाव छत्तारीक अध्यक्षतामे शिमलाक आल इंडिया गिलवेलियन्स री-युनियनमे सम्मिलित भए स्काउट आन्दोलन कें व्यापक वनयवामे सहभागी भेलाह। 1965मे विद्यापतिक डाक टिकट जारी करवामे सहयोगी भेलाह। विद्यापतिक साहित्य प्रकाशन हेतु विहार राष्ट्रभाषा परिषदमे विभाग प्रवर्तित कयल।

पौन शताब्दी धरि मिथिलाक गगनमे भास्वर प्रतिभा-किरण प्रसारी नक्षत्रक अस्त भए गेल! राजनीति, समाजरीति ओ संस्कृति-साहित्यक प्रीतिक समन्वयात्मक व्यक्ति-अभिव्यक्ति अव्यक्त भए गेल!

व्यक्तित्व ओ कृतित्व

व्यक्ति-विशेषक जाहि आकृति-प्रकृतिसँ ओकर गुणस्वभाव, प्रवृत्ति-निवृत्ति सहज रूपेँ अभिव्यक्त होइछ—ओकर अन्तर्मनक रहस्य जानल जाइछ, ओ व्यक्तित्वक परिधिमे पड़ैछ। तथा जाहि प्रकारेँ ओकर विचक्षण क्रिया-कलापसँ वैदुष्य एवं विचारमूलक आधार बहिर्मुखी होइछ ओ कृतित्व कहवैछ।

दूहूमे तात्त्विक भेद रहितहुँ व्यवहार-शाखामे कखनहु ओ अभिन्न बुझना जाइछ। अग्निमे प्रकाश-ताप स्वाभाविक थिक, ओ एकर व्यक्तित्व थिकैक। किन्तु ज्वलन-ज्वालन, तपन-तापन तथा पचन-पाचन ओकर कृतित्व मानल जाइछ। ओकरा बिकछाय कहव कठिन रहितहुँ, ई दूहू भाव-अनुभाव जकाँ, कर्तृत्व-क्रिया जकाँ, एक रेखाक दुइ बिन्दु जकाँ पृथक् स्थिति रखितहिँ अछि। अतएव एहि दूहू बिन्दुकेँ एक रेखामे—एक सीधमे—व्यवहार आनुषंगिके थिक।

व्यक्तित्व

लम्बमान शरीर, भास्वर गौर कान्ति, विशाल भाल, सौम्य शान्त तेजस्वी नेत्र, क्लीनशेव्ड मुखमंडल, माथपर बहुधा रोआँदार टोपी, कटल-छँटल केश, ऋतु-काल अवसरक अनुसार सटीक परिधानमे रोबदार रहितहुँ आकर्षक आकारमे जे पुरुष दृष्टिगत होथि, से बिनु कहनहु चीन्हि लेल जाइन छलाह जे ई कोनो श्रीमान रहितहुँ विद्वान् छथि; राजनीतिक घेर-बेढ़मे चलितहुँ कोनो साहित्यिक छथि; आभिजात्य वर्गक रहन-सहनमे देखल जैतहुँ सामान्य समाजक आत्मीय छथि; तखन ई अवश्य कुमार गंगानन्दसिंह थिकाह।

गंभीर वाणी, उन्मुक्त हास्य, नम्र स्वभाव, सरल व्यवहार, सभा-सम्भाषणमे वाक्पटुता, लेखनमे मोतीसन मोहक अक्षरमे नपल-तुलल वाक्य प्रयोग, राजनीतिक संघर्षमे प्रभावी उपक्रम—हिनक 'प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम' केर उदाहरण सिद्ध करैत छल। हिनक जीवनक आद्यन्त चरित-मानस 'अवस देखिए देखन जोगू'—

श्रीनगरक राज-प्रांगणमे 'भोजन करत बोल जब राजा। नहि आवत तजि बाल-समाजा। कोसल्या जब बोलन जाई। ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहुँ पराई॥'

बाललीला करैत भविष्णुताक परिचय दैत, पूर्णिया-कलकत्ताक स्कूल-कालेजक जीवनमे 'अलपकाल विद्या सब पाई' अध्ययन पूर्ण करैत छथि। पुनः दिल्लीक राजनीतिक संघर्षमे 'मनहु वीर रस धरे शरीरा'केँ सफल करैत, साम्प्रदायिकता विरोधी आन्दोलनक क्रमिक यात्रामे हिन्दूसंगठनक मंत्र 'कलि विलोकि जगहित हर-गिरिजा। सावर मंत्र जाल जिन्ह सिरजा॥' मालवीय अणे-सावरकरक संग जन-जनक कानमे फुकैत चलैत छथि। अन्तमे पुनः 'भे मिथिलापति नगर निवासी' —मिथिलेश महाराज कामेश्वरसिंहक साचिव्यमे दरभंगा अबैत छथि तँ पच्चीस वर्षक अवधि धरिक प्रौढ जीवन काल मिथिला-मैथिलीक घनिष्ठ सम्पर्कमे रहैत एतय लोकजीवनमे तेना रमि जाइत छथि जे 'नित नव मंगल कौसलपुरी। हरषित रहहिँ लोक सब कुरी॥' एतय सब क्षेत्रक लोकसँ सम्पर्क रखैत, 'जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी'केँ साकार करैत, श्रीनगर-पूर्णियासँ जे जीवन आरम्भ कयल तकर पूर्णता मिथिलाकेन्द्र दरभंगामे कय लैत छथि। दिनमानक अवसानो एतहि होइछ ओ ई उक्ति चरितार्थ बनैछ जे—'जीवत सकल जनम फल पाए। अंत अमरपति सदन सिधाए॥' से कुल मिलाए चालिस वर्षक अवधि धरि दरभंगाक संवासमे मिथिला-मैथिल ओ मैथिलीक प्रसंग जे कोनो चर्चा-अर्चा चिन्तन-आन्दोलन होइत रहल ताहि सबमे कुमार गंगानन्दसिंह अग्रसर रहलाह। हुनक बाद एहन नेतृत्व एतय लोककेँ नहि प्राप्त भेलैक जकरामे सबकेँ आस्था होइक, विरोधीसँ विरोधी विपक्षहुक हृदयमे समान सम्मान होइक।

जमीन्दारी-उन्मूलनसँ पूर्व दरभंगा-राज भारतक सबसँ पैघ जमीन्दारी स्टेट शिक्षा-संस्कृति-कला एवं सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक गतिविधिक केन्द्र छल। निजामक वाद मौद्रिक एवं भूसम्पदामे राज-दरभंगा परिगणित छल। खुदसर रियासति नहि रहनहु, एकर इनवेस्टिगक धाक छलैक। राज-रियासतिक राजा-महाराजा अबैत छलाह। राष्ट्रीय महासभा काँग्रेसमे संकटकालीन सहायता पहुँचयबाक ऐतिहासिकता महाराज लक्ष्मीश्वरसिंहक समयहिसँ प्रसिद्ध छल। अतएव एतय देशक नेता लोकनिक सेहो यातायात छलनि। अपर कालहुमे भूदानी नेता विनोबाजीक आन्दोलनमे लाख एकड़सँ ऊपर भूमि क्षेत्र दरभंगा राजसँ भेटल छलैक। भारत-चीन युद्धहुमे एगारह मन स्वर्ण-भंडार राष्ट्रकेँ एतय अर्पित भेल छल। ओहि विस्तृत परिधिक तत्कालीन राज-दरभंगाक तीन व्यक्ति केन्द्रीय विन्दु छलाह। कुमार गंगानन्दसिंह—जे दरभंगा-राजक आन्तरिक नीति-निर्धारण, साहित्यिक-सांस्कृतिक सन्धान, सामाजिक-समस्या ओ जनसम्पर्कमे नेतृत्व करैत छलाह। पं. गिरीन्द्रमोहन मिश्र कानूनी समाधान, राष्ट्रीय नेता ओ व्यक्तित्वक सम्पर्क समाधानमे अनुपम व्यक्तित्व रखैत छलाह। ओम्हर राजपण्डित बलदेव मिश्र धार्मिक निर्णय, संस्कृतक उत्थान ओ पण्डितसभा आदिक प्रवक्ता छलाह।

एही तीनू महत्त्वशाली पुरुषक योगायोगेँ तत्कालीन दरभंगा मिथिलेक नहि, प्रदेशेक नहि, अपितु देश भरिमे अपन स्थान बनौने छल। महाराज-दरभंगा उचित प्रतिष्ठापुरुष रूपेँ हिनक साचिव्यक सम्मान कयल करथि।

हिनक बहुविध व्यस्त जीवनकेँ देखैत लोककेँ बुझबामे नहि अबैक जे ई कोना पढ़ि-लिखि लैत छलाह। दिनमे पचीसोपचास कार्यार्थीक बीच निपटैत, राजनीतिक सामाजिक ओ साहित्यिक साधक लोकनिसँ भेँटघाँट करैत, महाराजक साचिव्य कार्यक भार सम्हारैत व्यस्त दिनचर्यामे ई कोना कोनो रचना कऽ पबैत छलाह।'

सर्वविदित अछि जे ई अबेर कऽ उठनिहार (नामी लेट राइजर) छलाह। हिनक प्रभात होइत छल जखन सूर्य पूर्वीय क्षितिज 21' अंश पार कऽलेथि। तावत् बाहर भेंट कयनिहारक ढेर लागि जाइक। बाहर अबिनहिँ प्रतीक्षारत कार्यार्थीसँ घेरा-वेढ़ा जाथि। पुनः झटपट 'शेव' करैत, अखबार पर नजरि दौड़बैत, चाह-काफीक चुस्की लैत रहथि तावत् आफिस जयबाक समय-सूचना दैत कार पोर्टिको-मे लागि जाइत छल। झटपट 10½ बजे आफिस पहुँचि, कार्य सम्पादन कए घंटा दुइएक बाद फिरथि। सचिव-सदन आवासहुपर भेंट कयनिहारक कमी नहि। ककरहुसँ गप कय, ककरहु कोनहु सिफारिशी पत्र लिखि, ककरहु पुनः भेंट करबाक कथा कहि, स्नान-भोजन डेढ़-दू बजे धरि सम्पन्न करथि। दिनमे सुतबाक अभ्यास नहि, निजी डाक देखि पत्रोत्तर लिखि अथवा स्टेनोकेँ मौखिकी लिखाय पत्र-पत्रिका उनटाय लेथि। अधिक काल आवासक सटले राज लाइब्रेरीमे सेहो पहुँचथि। लाइब्रेरिअन रमानाथबाबू पनवट्टी बढ़ाय देथि, हुनका संग लय रुचिमत कोनो नव-पुरान ग्रन्थक अवलोकन करथि। अथवा कोनो दिन संस्कृत विभागक पुस्तकालया-ध्यक्ष राजपण्डित बलदेव मिश्रक संग, जनिका लग पण्डितमण्डली जुटले रहय, कोनहु शास्त्रीय विषयक चर्चा चला देथि, से सुनथि। कखनहु कोनो तड़िपत पर लिखल प्राचीन ग्रन्थक खोज-बीन करथि।

साढ़े तीन बजबासँ पहिने पुनः ड्राइवर हार्न बजबय। ई लगले आफिस जयबा लेल प्रस्तुत होथि। सात बजैत ई पुनः आवास (सचिवसदन) आबि जाथि। गद्दी-मसनद लागल बगलक बैसकीमे जाय बैसथि। ई समय हिनक साहित्य-चर्चाक छल। पं. रमानाथ झा, प्रो. जयदेवमिश्र, मिथिलामिहिर-सम्पादक सुरेन्द्र झा सुमन, इंडियन नेशन—आर्यावर्तक विशेष प्रतिनिधि सुरेन्द्रप्रसाद सिन्हा (प्रसिद्ध-गोपालजी) सुकनबाबू लोकनि आबि जुटथि। कहिओकऽ पुस्तक भण्डारक साहित्यिक मंडली बाबू शिवपूजन सहाय, अच्युतानन्ददत्तजी, कलाकार महारथी, कमलेशजी, सहृदयजी प्रभृति पहुँचथि। दरभंगा जखन दिनकरजी, मनोरंजनजी, नटवरजी, पं. दिनेशदत्त झा, लक्ष्मीपतिसिंह, बाबू विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह, आबि ओहि समय सम्मिलित होथि। कहिओकाल संस्कृतभाषी पं. कपिलदेव शर्मा, पं. भरत मिश्र सेहो अपन उपस्थितिसँ ओहि गोष्ठीकेँ संस्कृत-झंकृत

करथि। 7 सँ 9 वजे धरिक समय वेस जमैक—'काव्यशास्त्रविनोदेन कालो लच्छति धीमताम्' कें सार्थक वनवैक।

तदुत्तर वहुधा 9 सँ 11 वजे धरि महाराजाधिराजक खास दरवारमे सम्मिलित भेल करथि। अनन्तर 'या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी' हिनकामे सार्थक हो। ओ जखन किछु लिखथि एही निशा-निशीथमे। विशेष काल तँ मिथिलेशक आप्त सचिव भेने, हुनका हेतु भाषण-वक्तव्य ओ स्टेट काउन्सिलक उपयुक्त नोट प्रस्तुत करथि। जें हेतु महाराजाधिराज देशक विभिन्न संस्थासँ सम्वद्ध रहथि, एहि प्रकारक प्रसंग वनले रहैत छल।

जहिया-कहियो ताहि सभसँ समय वचैन्हि तखन अपनहु लेल, जें ओ अपनहु अनेक सभा-सम्मेलन ओ संस्थान-प्रतिष्ठानसँ जुड़ल छलाह तें ताहू सभ लेल, उद्घाटन, अध्यक्षता ओ मुख्य अतिथित्व लेल भाषण प्रस्तुत कय सकथि। कदाच कहिओ यदि स्वान्तःसुखाय लिखवाक उल्लास होइन्ह तँ ओही समयक उपयोग करथि। वादमे निशान्त वेलामे पलंगपर जाथि आ' कोनहु प्रिय पुस्तक वा सामयिक पत्र-पत्रिका उनटवैत निद्रामग्न होथि। तें ई 'लेट राइजर'मे नामी भऽ गेलाह। वहुतो व्यक्ति हिनक एहि प्रक्रियाकें अमीरी, आलस्य वा आरामतलबी कहि आलोचनो करनि। किन्तु ई अभ्यास हुनका जीवन भरि चलैत रहलनि। सूर्योदय देखवाक, उषाक गुलावी वेला निहारवाक संयोग हुनका कदाचिते भेल होयतनि।

अपन एहि प्रकारक अनवस्थाक कारणें किछु अभ्यासो तेहने बना लेलनि जे कौतुकवर्धक भए गेल। कहथि जे चाह-काफी हम वहुत नहि लैत छी; अधिक वेर नहि लेथि से सत्य, किन्तु जखन भिनसर-साँझ पिवथि तखन कए-कए कप एके वेर साफ कए देथि। पनवट्टी आगाँ अवनि तँ एकेवेर ओकरो सधा देथि। परंच नहि भेटल तँ क्षति नहि, भेटल तँ वेअंदाज मुहमे धऽ लेथि, जर्दासँ परहेज रहनि तें पानक अभ्यास नहि लगलनि। कोनो प्रकारक मादक द्रव्य नहि सेवथि। जाहि परिवार-परिवेशक ओ लोक छलाह ताहिमे एहि सव प्रकारक व्यसनमे नहि पड़-लाह। सिगारटा पिवथि, परंच साधारणसँ साधारण सामाजिक लोकक सोझाँ परहेज राखथि। सामाजिकताक बन्धनकें मर्यादा देव हिनक शील-स्वभावमे ओतप्रोत छलनि।

ई प्रथम वयसमे 'भोल' नामसँ रचना करैत छलाह। बुझि पड़ैछ हिनक भोलाभाला स्वभाव देखि केओ ई अभिधानो हिनक राखि देने होइन ओ तकरा ई कदा च कवूलिओ नेने होथि। हिनक एहि प्रकारक स्वभावक कारणें अनुचर-सहचरकें हिनका चरिऐवाक विशेष ध्यान राखय पड़ैक। कोनो सभा-समितिमे जयवाक अछि तँ किछु पूर्व अपन सहायकक ध्यान दियैलापर ई हड़वड़ाय जाथि, लिखित भाषण रहिए जाय। ओतय मौखिक वक्तव्य दए फिरलापर जखन से

भेटनि तखन ग्लानि व्यक्त कए श्रोताकेँ स्मितमुख कए देथि ओ लोकक आलोचनाक पात्रो बनि जाथि। हिनक मानसिकता चर्चाक विषय बनि जाय।

परंच ई सब रहितहुँ हृदयक एहन शुद्ध-पवित्र छलाह, मृदुभाषी विद्याव्यसनी उपकार भावनासँ भरल, स्नेह-तरल विशुद्ध चरित्रक छलाह जे उपकार करब हिनक स्वभाव बनि गेल। नकार कहबाक हिनका अभ्यास नहि, सभक उपकारे करैत गेलाह। हिनकासँ ककरहु अपकार भेल होइक तकर कोनो संभावना नहि। हिनका भने केओ वंचना कय लिअय, ई धोखहुमे ककरहु वंचित नहि कयल। हिनक सद्गुण-राशिमे दोष-लेश जँ कोनो छल तँ से—'एको हि दोषो गुण-सन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवांकः।'

कृतित्व

कृती कुमार गंगानन्द सिंह एहन चतुर्मुखी व्यक्ति छलाह जनिक कृतित्वक आयाम बड़ व्यापक छल। शिक्षा, राजनीति, समाजरीति ओ भाषा-साहित्यक क्षेत्रमे काज करबाक अवसर हुनका जीवनमे बरोबरि बनल रहलनि। भाषहुमे मैथिली, अंग्रेजी, हिन्दी ओ संस्कृत एहि चारू भाषाकेर शिक्षा-संस्थानसँ सम्बद्ध रहने ओहि भाषा सभमे लिखबाक अनिवार्यता छलनि। राजनीतिक क्षेत्रमे केन्द्रीय लेजिस्लेटिव एसेम्बलीसँ प्रान्तीय कौन्सिलक सदस्य एवं अध्यक्ष रहने वैधानिक क्षेत्रमे कार्य करबाक अवसर भेटलनि। शिक्षामन्त्रीक रूपमे बिहारक शिक्षा-जगतमे क्रियाशीलता देखयबाक प्रसर रहलनि। देशक शीर्षस्थ नेता बिट्ठलभाइ पटेल, मोतीलाल नेहरू, मालवीयजी, सत्यमूर्ति, डॉ. मुंजे, वीर सावरकर आदिक संग राष्ट्रव्यापी आन्दोलनमे योगदान देबाक प्रसंग अयलनि। गाँधी-विनोवा समान महात्मा-संत राष्ट्र-अभिभावकक संगतिमे सेहो अयलाह। तहिना हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, सुहृद-संघ तथा मैथिली साहित्य-परिषद् आदिमे उद्घाटक, अध्यक्ष ओ मुख्य अतिथि रूपेँ योगदानी रहने एहू दिशामे कृतित्व देखयबाक अवसर भेटलनि। मैथिल युवक संघ अड़इडंगा (बंगाल), मैथिली छात्र समिति—मुजफ्फरपुर, प्रवासी मैथिल समाज—अजमेर-आगरा प्रभृतिकेँ उद्बोधित करैत युवक-आन्दोलनसँ जुड़लाह। मैथिल महासभाक मंचसँ सामाजिक संगठनक मन्त्र फुकैत रहलाह।

अपन शिक्षामन्त्रित्व कालमे राज्यमे चारि गोट विश्वविद्यालय खोलबाक श्रेय लेलनि। विभिन्न विश्वविद्यालयक सिनेट, सिन्डिकेट एवं कुलपतिहुक रूपमे सेहो संपृक्त होइत रहलाह। पत्रकारिताक क्षेत्रमे स्थापना-व्यवस्थापनासँ लए स्तम्भ-लेखक रूपेँ सम्बद्ध छलाह। महाराजाधिराज-दरभंगाक संग कतोक बेर विदेश गेलाह। दोहरा कऽ कते कहल जाय, मिथिला-मैथिलीक कोनो एहन क्षेत्र नहि जतय हिनक कृतित्व छाप नहि छोड़ने हो। प्रायः एतेक व्यापक क्षेत्रमे कर्तृत्व केवल

मिथिला अथवा विहारहिमे नहि, देशहुमे कदाचित् कोनो विरले व्यक्तिकेँ प्राप्त भेल होयतनि ।

एतय किछु विशेष प्रसंग मात्रक उल्लेख कयल जाइछ। केन्द्रीय (1923-30) व्यवस्थापिकामे हिनक कर्तृत्व रहल जे सर्वप्रथम ई विट्ठलभाइ पटेलक पक्षमे मत दय ब्रिटिश सरकारक मनोनीत प्रत्याशीकेँ हराओल ओ पटेलकेँ जिताओल। गंगाकोसीक बाढ़िसँ विहारक तबाही दिस ध्यान दिआय कोसी तटबंधक भूमिका तहिए प्रस्तुत कयल। संताल परगन्नाक लेल जे पृथक् अपराधक्षेत्रीय प्रावधान छल तकरा सम्बद्ध (रेगुलेटेड) जिला बनयबामे प्रयासी रहलाह। दस्तावेजी स्टाम्पपर पहिने केवल अंग्रेजी ओ फारसी अंकित रहैत छल ताहिमे देवाक्षरक सन्निवेश कराओल। अमृतसरमे अकाली बन्दीपर जे जुलुम भेल छलैक तकर जाँच कमीटीमे रहि अन्यायक विरोधमे रिपोर्ट देल। नमक करकेँ कम करबाक प्रस्ताव आनल ओ पास करबाओल। प्रजाहितमे रेलभाड़ा, डाकदर कम करबा हेतु जोर दैत अयलाह। ब्रिटिश रिजिममे प्रधान पदाधिकारीक पदपर जो बहुधा अंग्रेजहिक नियुक्ति होइत छल तकर विरोध कए भारतीयकेँ पदासीन करबापर जोर देलनि। साहेबगंजसँ जखन डी. टी. एस. आफिस हटय लगलैक तखन ओकर विरोध करैत कर्मचारी ओ सर्वसाधारणक हितमे सरकारसँ विशेष प्रबन्ध करबाओल, रेलवे कंपनीक अन्तर्गत स्कूलक सुधार पर जोर देल। व्यवस्था सभाक पब्लिक एकाउंट्स ओ रोड कमीटीक सक्रिय सदस्य रहि अपन कर्मठता देखाओल।

1954-1965 ई. धरि विहार विधान परिषदक सदस्यताक कार्यकालमे अनेक जनोपयोगी विधेयकमे योगदान देल। 1964-65 मे परिषदक अध्यक्ष पदपरसँ विवादपूर्ण प्रश्नपर देल गेल हिनक रूलिंग बरोबरि सराहल गेल। अध्यक्षीय वक्तव्य सर्वथा पक्ष-विपक्ष दूहूक बीच सेतुक काज करैत छल।

पुनः 1956-196 धरि डॉ. श्रीकृष्णसिंहक मुख्य मन्त्रित्वमे कुमार साहेब शिक्षामन्त्री छलाह। हुनक कार्यकालमे विहारक उच्च शिक्षा-व्यवस्थाकेँ क्षेत्रीय रूपमे विकेन्द्रित करबाक नीति निर्धारित भेल। विहार युनिवर्सिटी-मुजफ्फरपुरमे ओ तदतिरिक्त दक्षिणमे राँची युनिवर्सिटी ओ मध्यमे मगध युनिवर्सिटी ओ पूर्व-दक्षिणमे भागलपुर-युनिवर्सिटी स्थापित कयल गेल। संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना दरभंगामे भेल, जकर परिधि-विस्तार दिल्ली-उज्जैन ओ सुदूर दक्षिणधरि राखल गेल। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षाकेँ विश्वविद्यालयक नियन्त्रणसँ मुक्त कए पृथक् बोर्ड द्वारा व्यवस्थित कयल जाइत रहल। पुस्तकालयक विकासहु दिस शिक्षाविभाग विशेष रुचि लेलक। राष्ट्रभाषा-परिषदमे विद्यापति-साहित्यक अनुसन्धान ओ प्रकाशनक लेल पृथक् विभाग खोलल गेल।

जीवनक अन्तिम कार्यभार संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपतिक रूपमे ग्रहण कयलनि। तावत् हिनक स्वास्थ्य निम्नमुख भऽ गेल छल। नेत्रक ज्योति सेहो मन्द

पड़ि गेल छल। स्वभावतः एतय जतेक आशासँ हिनका आनल गेल—संस्कृतक शिक्षास्तरकेँ उठयबाक, विचारगोष्ठी विद्वत्सम्मेलन आदि द्वारा संस्कृत भाषाक प्रचार-प्रसार लेल—इच्छा रखितहुँ ततवा ई नहि कऽ सकलाह। तथापि विश्व-विद्यालयक शासकीय शाखाकेँ बहुत-किछु संगठित कयल, ओकर प्रकाशन विभागसँ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक प्रकाशन कराओल तथा संस्कृत-दिवसक प्रचलनसँ समाजमे संस्कृतक प्रति रुचि जगयबाक प्रवर्तनमे अपन कृतित्व देखाओल।

ई सब होइतहुँ हुनक सर्वाधिक कृतित्व रचनात्मक प्रवृत्तिमे छल, जकरा ओ व्यस्तता बहुल जीवनहुमे कोनहु-ने-कोनहु रूपेँ क्षण बहार कए निर्वाहित करैत अयलाह। ग्रन्थक सम्पादन हो वा संकलन, भूमिका हो विषय प्रस्ताविका, भाषण लिखित हो वा मौखिक, ललित निबन्ध हो वा अनुसन्धानात्मक लेख, काव्य हो वा एकांकी अथवा गल्प-कहानी, जे किछु थोड़-बहुत लिखलनि, ओहिमे ई सर्वाधिक सफल रहलाह। प्रत्युत कहल जाय जे हिनक राजनीतिक, प्रशासनिक वा सामाजिक सभ कर्तृत्वकेँ लोक बिसरि सकैछ किन्तु हिनक प्रतिभामूलक सर्जनात्मक कृतित्वे चिरस्मरणीय रहत। ओना ओ हिन्दी-अंग्रेजी-संस्कृतमे सेहो बहुत-किछु लिखैत रहलाह, ओहो उल्लेखनीय बनल, परंच मातृभाषा मैथिलीमे जतवे किछु लिखलनि से हिनक स्थायी कृतित्व मानल जायत।

हिनक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक समन्वयात्मक तुलनामे एतबा कहब पर्याप्त होयत जे हिनक व्यक्तित्वक हिमशैलसँ—प्रतिभा पिण्डसँ—जतेक स्रोत उन्मुक्त भेल से विविधता अवश्य रखैछ, सितासितरक्ता गंगा-यमुना-सरस्वतीक आरंभिक भावनात्मक रंगभंगिमा जतेक वेग देखबैछ ततेक कृतित्वक सागर-संगममे तरंगित नहि रहि पबैछ। अन्तिम छोरकेँ छुबैत-छुबैत पतरा-छितरा जाइछ। संगहि से सब होइतहुँ स्मृतिक संक्रान्तिमे हिनक व्यक्तित्व-कृतित्वक गंगा-सागर संगम तीर्थस्थल रूपेँ अछि ओ आगहुँ रहवे करत।

रचना

कहि आयल छी जे कुमार गंगानन्द सिंहक वहु-आयामी जीवनमे साहित्यक स्थान अपेक्षाकृत अल्प रहितहुँ महत्त्वक अछि। आगहुँ कहि सकैत छी जे राजनीति हुनक जीवन-वितानकेँ कतबहु छापने रहल हो, सामाजिकता कतबहु हुनका घेरने-वेढ़ने रहल हो परंच जखन-कखनहु ओ मुक्त वातावरणमे विचरण करबाक पलखति पावथि साहित्य हुनक सहचर वनि प्राण-प्रेरणा भरवामे, चेतनाकेँ सजग रखवामे सतत जागरूक बनल रहल। हुनक जीवन-कालकेँ राजनीतिक रंग कतबहु चमकौने रहल हो, सामाजिकता अंग बनल हुनका प्रसंग जतेक चर्चा-अर्चाक तरंग बहौने हो, परंच हुनक कीर्ति-कलेवरकेँ सुरक्षित रखवामे निःसन्देह सर्वाधिक महत्त्व हुनक साहित्य-साधनाकेँ रहलैक। अक्षर-वद्ध कृतिए टा एहन रसायन अछि जकरा वलेँ ओ 'जरामरणजं भयम्'केँ पार कय एखनहुँ स्मरणीय छथि। खास कऽ मैथिली भाषाकेँ जतवे ओ अवदान दऽ गेल छथि ताहीसँ ओ धन्य अछि ओ हुनकहु धन्य वनौने रहत।

साहित्य-साधनाक प्रवृत्ति हुनका कोन प्रकारेँ संस्कारित भेल तकर विवरण हुनकहि शब्देँ—जे ओ 'अभिव्यंजना' (मैथिली पत्रिका) वैयक्तिकीमेँ प्रश्नोत्तर प्रसंग प्रतिनिधिकेँ एक भेंटवार्तामे कहने छथि—

"···साहित्य दिस जे हमर अभिरुचि जागल आ वढ़ल तकर मुख्य कारण थिक ओ वातावरण जाहिमे हमर लालन-पालन भेल। हमर पिता वड़ पैध साहित्य-रसिक ओ मर्मज्ञ छलाह। साहित्यिक सभक प्रति हुनका मनमे वड़ सिनेह, आदर आ सम्मानक भाव रहैत छलैन, आ' तेँ सदिखन दूर-दूरसँ साहित्यकार सभ आविते रहै छलाह। साहित्य चर्चा चलिते रहैत छलैक। अवाध-निरन्तर। जनार्दनझा जनसीदन, जयगोविन्द महाराज, शीतलाप्रसाद, रामनारायण मिश्र, श्रीकान्त मिश्र, पं. अम्बिकादत्त व्यास, पं. खुद्दी झा लोकनि तँ स्थायी रूपेँ रहवे करथि; जे आरो गोटा सभ समय-समयपर आवथि आ' दू-चारि दिन रहि साहित्य-संगति कऽ चल जाइछलाह।

"···हमरा ज्ञान-प्रान भेल तँ एहि दिस आकृष्ट भेलहुँ, साहित्य चर्चा नीक

लागल, रुचि बढ़ल, तखन एहि साहित्यकार सभक अधिकसँ अधिक काल धरि सहवासक कामना करय लगलहुँ ।

"हमर पिता लग तत्कालीन बहुत रास पत्र-पत्रिका सम अबैत छलनि । रुचि जागिए गेल छल, पढ़बामे नीक लगिते छल से एहि कातसँ ओहि कात धरि पढ़ि जाइ आ' अगिला अंकक बाट ताकऽ लागी । पत्रिका सभमे जे खिस्सा-पिहानी वा निबन्ध आदि पढ़ी से नीक लगबे करय, आ' इहो मनमे होइ छल जे हम एहन लीखि सकैछी कि नहि ?

"आ यैह प्रश्न हमर साहित्यक प्रेरणाक मूल विन्दु थिक । लगभग पाँच दशक पूर्व 'युकिलिप्टस' नामक निवन्ध इलाहाबादसँ प्रकाशित 'सरस्वती' (हिन्दी) मे छपल छल आ' यैह हमर पहिल रचना छल ।

"कालेज कालमे बहुत रास संस्था आ' पत्रिका सबसँ सम्बन्ध रहल । युग जागरणक छलैक, प्राचीन साहित्यक उद्धारक प्रेरणा सबमे मुख्य छलैक । मैथिल महासभा आ' मैथिली साहित्य परिषद (?)क स्थापना भऽ गेल छलैक । मैथिल हितसाधन, मिथिलामिहिर, तिरहुत समाचार, भारतमित्र, सरस्वती आ' देवनागर आदि मैथिली-हिन्दी पत्र-पत्रिका सबसँ सम्बन्ध आ' सम्पर्क भेल । निबन्ध, रेखाचित्र आ कथा आदि लिखय लगलहुँ । नाम आ' उपनामसँ लिखल बहुत रास वस्तु, आब मोनो नहि अछि, मनुष्यक मोल आ विवाह आदि कथा हमर कालेज कालक रचना थिक । कालेज-छात्रावस्थामे मैथिली आ हिन्दीमे 'ब्लैंक भर्स'मे किछु कवितो लिखल ।

"मनुष्यक जीवनक समष्टिकेर अभिव्यक्ति हमर अभीष्ट रहल । तेँ जाहि समयमे जीवनक जाहि भावनाक उद्रेक भेल तकरहि साहित्यमे प्रकट कयल ।

"साहित्यमे यथार्थक उद्घाटन हो, तकर पक्षपाती हम अवश्य छी; मुदा आदर्श रक्षाक संग, अश्लीलता वा नग्नताक प्रदर्शनसँ हमर व्यक्तिगत विरोध अछि ।

"वर्तमान मैथिलीक सबसँ वैध समस्या थिक सर्जनक समस्या । अधिकसँ अधिक पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन हो, जाहिसँ समकालीन साहित्यक सृष्टि सम्भव भऽ सकय । जीवनोपयोगी ग्रन्थ सभक रचना अधिकारी विद्वान् लोकनि करथि—यैह हमर अभिलाषा ।"

उपर्युक्त उद्धरण सबसँ स्पष्ट अछि जे प्रवृत्ति प्रेरणामे साहित्यिक परिवेश—कवि, विद्वान् लेखक लोकनिक निन्तर साहचर्य, पारिवारिक पुस्तकालयक उपयोग, पत्र-पत्रिकाक अवलोकन-पर्यालोचन सहज उपादान छल । निबन्ध-कथा-कविता आदि लिखबाक स्पृहा कृति-अनुकृतिक कारण-कार्य भावसँ परम्परित छल । पत्र-पत्रिकामे रचना-प्रकाशनसँ स्वभावतः ओ प्रोत्साहन पौलनि ।

रचनाक उद्देश्यमे ओ मानव-जीवनक समष्टिबोधकेँ 'सत्यं' बुझकलनि ओ

यथार्थकेँ उद्घाटित करवाक क्रममे आदर्शक ओ त्याग नहि कयलनि। 'सुन्दरता'केँ ततवे अंकित करब हुनका अभीष्ट छलनि जाहिसँ 'शिवम्' तत्त्व नहि भसिया जाय।

कोनो भाषाक विकासक समस्याकेँ सर्जनात्मक प्रक्रिया द्वारा समाधान करवाक दिशा-निर्देश कयलनि ओ लोकरुचिक आकर्षकता समकालीनक लेल साहित्यक रचना-मंच रूपमे पत्र-पत्रिकाक; खास कऽ मैथिली सन उपेक्षित भाषाक विकास लेल, अनिवार्यता वांछित बुझलनि।

हुनक एहि वैयक्तिकीमे अद्यतन सामूहिकी भावना निहित अछि। एहि सब विचारक आलोकमे उनैसम शताब्दीक अन्तमे जन्मग्रहण कयनिहार भैओ कऽ, राजन्यवर्गक अभिजात पुरुष भैओ कऽ, सामाजिक परम्पराक लोक भैओ कऽ ओ आधुनिक छथि। हुनक उठाओल समस्या एखनहु समाधानक तलास रखितहिँ अछि। बीसम सदीक उपान्तहुमे, मृत्युक उपरान्तहु ओ आधुनिक विचारक रूपेँ अंकित कयल जयवाक हेतु अधिकृत छथि।

कथा, एकांकी, मुक्तवृत्त, रेखाचित्र जे सभ आधुनिक साहित्यक विधा अछि तकर श्रीगणेश जे ओ तृतीय दशकसँ पाँचम दशक अभ्यन्तर कय गेलाह से स्वातन्त्र्योत्तर, साठोत्तरी, वा अस्सी-नव्वे पूर्वोत्तरी जे समयविभागीय रचनाक चर्चा करव तकर मूल-पीठिकामे कुमार गंगानन्दसिंह पीठासीन अवश्य दृष्टिगोचर होयताह। भने ओ रचनाक संख्याक गुणन-गणनमे लघु-लघु परिगणित होथु किन्तु गुणात्मक माप-तौलमे ओ भरिअयले सिद्ध होयताह।

कविता

कुमार साहेब कहिओ कवि नहि कहौलनि किन्तु कविसम्मेलनमे अध्यक्षता हेतु बरोबरि आहूत होइत रहलाह। से कोनो राजनेता वा समाज-उन्नेता बुझि कऽ नहि, प्रत्युत हुनक कवि-प्रतिभा वा काव्यक प्रति सूक्ष्मेक्षिकाक कारणहि। अतएव ओ उचिते कविसम्मेलनमे जहिया अध्यक्ष-पदसँ भाषण कयलनि से काव्यात्मके। ताहिमे ओ बरोबरि कवि वा कविताक प्रेरणा-उद्दीपनाक वक्तव्य ओ छन्दहिमे देलनि, भने ओ वार्णिक वा मात्रिक वृत्त नहि हो परंच हुनक मुक्तवृत्तहुमे छन्दक स्पन्दन छल—गति-यति छल—प्रवाह छल ओ नव-नव स्फुरण-चिन्तन छल।

भाषणीय कविता हिन्दी एवं मैथिली दूहू भाषामे ओ देनेछथि। बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मुजफ्फरपुर अधिवेशनक अवसर पर कविसम्मेलनमे सर्वप्रथम कवितहिमे हुनक भाषण भेल। 1944 ई.मे पटना-हार्डिज पार्कमे रेडक्रास सोसाइटी द्वारा आयोजित कविसम्मेलनमे सेहो छन्दोबद्ध भाषण हिन्दीमे भेल छल जकर उल्लेख करैत सुहृदसंघक अधिवेशनक स्वागताध्यक्ष बाबू महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह हिनक परिचय दैत बाजल छलाह जे 'साहित्य परिषद के

उद्घाटक मान्यवर कुमार गंगानन्द सिंहजी की साहित्यिकता सर्वविदित है। अभी हालहीमे विहार की राजधानी पटने में रेडक्रास सोसाइटी के तत्त्वावधानमे आयोजित कविसम्मेलनके अध्यक्ष-पद से जो आपने पद्यवद्ध भाषण किया था वह हिन्दी-साहित्यको एक अमूल्य निधिके रूपमे चिरस्मरणीय रहेगा।' हिनक किछु प्रारम्भिक हिन्दी-कविताक उद्धरण 'विहार के नवयुवक हृदय हार' पुस्तकमे संकलित अछि।

एतय मैथिलीमे हिनक कवित्व-शक्तिक निदर्शनक हेतु मैथिली महासभाक वौंसी-अधिवेशनक अवसर पर जे कवितहिमे भाषण पढ़ल तकर प्रासंगिक उल्लेख कयल जाइछ जाहिसँ हिनक कविप्रतिभाक संग कविताक गतिविधि पर चिन्तन ओ दिशा निर्देशनक वहुत-किछु दिग्दर्शन भेटि जाइछ।

"कविताकेँ ताकि लाउ, कविगण !
कतहु छथि सुखायलि, हेरायलि,
सरस्वतीक धार जकाँ कोनहु मरुभूमिमे।

चिरपुरातन नित्य-नूतन प्रकृतिमन्दिर सात्त्विक आरण्यकक स्रोत-प्रस्थान दिस दिशा-निर्देश करैत कहैत छथि—

विपिन, जतयसँ प्रसारित भए वेद-वाणी
जतयसँ प्राप्त कए नानाविध तत्त्व
होइत छल अजर तथा अमर प्राणी,
आइ ऋषि-हीन भेल करै' अछि विलाप
स्मरण कए लुप्त अपन गौरवकेँ, महत्त्वकेँ,
सन्तानहीन विधवा जकाँ शून्यताक अनुभव कए।
ओतय नहि वाल्मीकि, ओतय नहि व्यास
नहि अछि कतहु केओ, जकरा हृदयसँ
निस्सरित भए कविताक सरिता
उर्वर करय, श्यामल करय तप्त-शुष्क जीवकेँ,
जे छथि प्रताडित काम-क्रोध-मोह सँ
वान्हि रखने छन्हि जनिका लोभ-महापाशमे
कविताकेँ ताकि लाउ, कविगण !
कतहु छथि नुकायलि, हेरायलि
सरस्वतीक धार जकाँ कोनहु मरुभूमिमे ॥

पुनः कला-वैभव सम्पन्न ऐतिहासिक राजस-युगक क्लासिक काव्य-सम्पदाक दिस ध्यानाकर्षित करैत कविकेँ कहैत छथि—

राजभवन, जाहि ठाम पोषित भए कविता
आमोदित करैत छलि रसिक-समाजकेँ
सौरभ और शोभासँ जहिना करैत अछि
नानाविध सुमन-युक्त चारु पुष्प-वाटिका,

राजभवन, जाहि ठाम पोषित भए कविता
बढ़बै छलि अपना पोषकक कीर्तिकेँ,
वायु जेना वितरित करैत हो परागकेँ
भिन्न-भिन्न पुष्प केर भिन्न-भिन्न देशमे।
आइ अछि रिक्त गुणग्राही भूपतिसँ—
कतय छथि विक्रम ? कतय भोज ? कतइ हर्ष आइ ?
कतय शिवसिंह ? कतय शाह अकबर ?
अथवा अनुवर्ती हुनक शत-शत नरपति गण ?
जनिक वदान्यतासँ मुखरित भए विविध रस
मानव-जीवन केँ उद्दीपित करैत आयल निरन्तर सत्कार्य दिस,
मानस-पट सिंचित कए सत्य-शिव-सुन्दरसँ।
कविताकेँ ताकि लाउ, कविगण !
कतहु छथि नुकायलि, हेरायलि
सरस्वतीक धार जकाँ कोनहु मरुभूमिमे।

एहि कवि-प्रेरक भाषण लेल प्रयुक्त कविताकेँ दीर्घकविता (Long poem)क मान्यता प्राप्त छैक। अपन वृत्तिविधान, सामयिक सन्धान ओ वस्तु-वितानक संगहि नव-नव विम्वग्राही उपमानसँ ई नव कविताक अभिधान ग्रहण कयने अछि। एही दृष्टिएँ मैथिलीक 'नवीन गीत' मे पण्डित रमानाथ झा एकरा योजित कयने छथि। एहिमे प्राचीन कविप्रेरणाक स्रोतक अन्वेषण करैत, वर्तमान सन्धियुगमे प्रविष्ट पाश्चात्य विज्ञानक प्रभावेँ पौरत्स्य भावना पर कोन प्रकारेँ चिन्तन-संघर्षक फलस्वरूप एतय वैचारिकता पर कोन प्रकारक प्रभाव पड़ैत गेल अछि, पर्यावरणक समस्या ठाढ अछि, तकर विवेचना करैत आगाँ औ कहैत चलै छथि—

भौतिक विज्ञान आइ कल्पनाकेँ नष्ट करय
प्रकृति पर विजय पावि, दैत्य सम क्रूर भए
स्थिति विकराल महा कयने अछि उत्पन्न
देखि-देखि जकरा चित्त अतिशय सशंक अछि !
गेल चलि कल्पना चन्द्रमाक आइ जखन
वास्तविक स्वरूप जखन आइ लोक देखैत अछि।

गेल चल विलक्षणता नदी और सागरक
नित्य जखन पार ओकरा लोक कए अबैत अछि,
पुष्पक विमानसँ नवीनता पड़ाय गेल
देखि-देखि अभियानक पृथ्वी-परिक्रमा।
सुनि-सुनि आकाशवाणी एलेक्ट्रानिक यन्त्र द्वारा
जाइत रहल चमत्कार देवताक वाणीकेर।
कएकेँ विदीर्ण भूगर्भकेँ लोक नित्य
बाहर कए तेल तथा खनिज पदार्थकेँ
दूषित करैत अछि शुद्ध वायु-जलकेँ,
सृष्टिक सुन्दरताकेँ विनाश दिवा-रात्रि कए
ओ अपन स्वार्थ-पुंजकेँ पर्वत सम बनबैत,
बनल अछि प्रतीक दारुण निष्ठुरताक, निर्ममताक,
अहंकार बर्बरताक, वर्तमान युगमे,
कतय गेल मानवक मानवता ? कतय गेल कोमलता ?
शोषण संहार जखन नित्य कर्म लक्ष्य भेल।

तखन तँ एकेटा उपाय कयिकेँ सुझैत छनि, तेँ कहैत छथि—

कविताकेँ ताकि लाउ, कविगण !
कतहु छथि नुकायलि हेरायलि,
सरस्वतीक धार जकाँ कोनो मरुभूमिमे।

परिणामतः वर्तमान स्थितिक चित्रण करैत, लोकदशाक विभवक्षीण ओ चरित्रहीन शोषक-शोषितक द्वन्द्वमे, पूजी-श्रमक छलछन्दमे विकल मानवताक करुण रूप निरूपित करैत, चित्तकेँ झकझोरैत कहैत छथि—

औरो हम देखैं छी चरित्रहीन प्राणीकेँ
जकरा नहि विचार कोनो न्याय-अन्यायकेर
जकरा नहि सत्यक प्रति लेशमात्र आदर अछि,
स्वार्थ-लोलुप तथा आत्मबल-हीन जे
करै अछि व्यतीत जीवन परमुखापेक्षी भए
शक्तिक जकर अपचय होइछ आनक अभिवृद्धिले'
शोषक संसारक शोषित सकल देश मे
निष्ठुर दरिद्रताक नग्न चित्र देखैं छी।
दैहिक और मानसिक दरिद्रता तेल जकाँ
संगहि संग पसरि जन-समुदायमे

कयने उत्पन्न अछि असंतोपक ज्वालाकेँ
ताकि रहल वाट लोक सुख और शान्तिकेर।
कविताकेँ ताकि लाउ, कविगण !
कतहु छथि नुकायलि, हेरायलि,
सरस्वतीक धार जकाँ कोनो मरुभूमिमे।

एहि नुकायलि हेरायलि सरस्वतीक धारकेँ केओ सारस्वत पुरुषे ताकि आनि सकै छथि। विषमताक ज्वालामे जरैत विश्वकेँ कोनी विषपायी गंगाधरे अपन शीर्षस्थ गंगाक धार वहाए जगतीतलकेँ शीतल वनाए सकैत छथि तेँ ओ कविक औप-संहारिक आह्वान कए रहल छथि—

प्रतिभा कोना विकसित हो विपम परिस्थितिमे,
कोना हो व्यक्त, आत्म-गौरव भावना ?
यावत् भय त्यागि नहि आत्मभाव व्यक्त करव
छोड़ि देव विक्रय करव यावत् नहि मेधाकेँ।
व्याप्त अछि घट-घटमे ब्रह्मक अस्तित्व जेना
कवितो अछि व्याप्त तहिना सवहिक उर-अन्तरमे।
अनुभव ओकर हयत तखन मानस विशुद्ध जखन
मर्मस्थल प्रकाशमान होएत अमर ज्योतिसँ,
दग्ध कए मलिनता संसारक विभीषिकाकेर
भासित कए देत मानव जीवन रहस्यकेँ।
ध्यान करू शिवजीक, बैसि गिरि-शृंग पर
लीला सव देखथि जे जगतक निर्लिप्त भए
कहवथि जे गंगाधर, विष पचा कंठ मध्य,
शीतल करथि जगकेँ शशिकला ज्योतिसँ
हुनक अनुसरण करू। यैह हम कहव पुनि
विनयसँ अवनत भए आदर-सत्कार हेतु—
कविताकेँ ताकि लाउ, कविगण !
कतहु छथि नुकायलि, हेरायलि,
सरस्वतीक धार जकाँ कोनहु मरुभूमिमे।"

(मैथिली मन्दिर, दरभंगा द्वारा प्रकाशित 'आह्वान'सँ)

कुमार गंगानन्द सिंहक कवि-प्रतिभा एहि 'आह्वान'मे स्वतः मुखरित अछि। ओना एकांकीमे किछु प्रसंग-संगत गीत सेहो उपलब्ध अछि जाहिसँ हुनक गीतात्मक लय-प्रधान रचनामे सेहो अभिव्यक्ति पौलक अछि। किन्तु ओ स्वयं जे कहि गेल छथि जे हमर वहुतो स्फुट लेख-कविता विभिन्न पत्रिकामे छपल छल ओ किछु

प्रारंभिक रचना सेहो कतहु फाइलमे भुविआयल पड़ल अछि से सभ अन्वेषणीय ओ संकलनीय थिक।

एकांकी

ओना भारतीय साहित्य विधामे 'काव्येषु नाटकं रम्यं' 'नाटकान्तं कवित्वं' कहि दृश्य काव्यक महत्त्व ख्यापित अछि। भरतक नाट्यशास्त्रेमे नाट्य-रूपकक एक तत्त्व कहि रस सिद्धान्त प्रतिपादित अछि। रूपक-उपरूपकक भेद-उपभेद रूपेँ दस ओ अठारह प्रकारकक नाट्य रचना प्रचलित छल। ओहिमे प्रहसन-भाण-व्यायोग प्रभृति एके अंकमे अभिनीत होइछ। अंकीया नाट प्रभृति मैथिली-असमियामे नाम साम्य प्रचलित अछि। किन्तु वस्तुतः वस्तुविधान एवं तकनीकी संधानकेँ देखैत ई स्पष्ट अछि जे आजुक 'एकांकी' वस्तुतः आधुनिक थिक ओ पाश्चात्य-साहित्य सम्पर्कक देन थिक। मैथिलीमे एहि विधाक लेखन बहुत पछुआ कऽ भेल। कालिकुमारदास-हरिमोहन झा लोकनि एकर सूत्रपात कयलनि, जकर प्रौढ़ता कुमार गंगानन्द सिंहक 'जीवन-संघर्ष' नामक एकांकीमे व्यक्त भेल। ओना एकर प्रकाशन 'स्वदेश' मासिकमे 1948 मे भेल छल परंच रचना गाँधीजीक हरिजन आन्दोलनक समयहिमे मन्दिर-प्रवेशक समस्या लऽ कऽ भेल छल जे तेसर दशकक अन्तमे प्रारंभ छल।

जीवन-संघर्ष

अपन नामानुकूल 'जीवन-संघर्ष' व्यक्तिक संग समाजहुक जीवनमे संघर्षक दृश्य उपस्थित करैछ। व्यक्ति छथि गाम-टोलमे सहज उपलब्ध भेनिहार एक नैष्ठिक पंडित चिरंजीव झा, जनिक जीविका छनि पंडिताइ-पुरोहिताइ। जीवन भरि ओ जे-किछु जोगौलनि ताहिसँ बड़े मनोरथसँ एक मन्दिर बनबौलनि, देवप्रतिमाक स्थापना कयलनि। हुनक व्यक्तिगत अभिलाषा जे उत्तर जीवन-कालमे हम ओहि मन्दिर-स्थापित देवताक आराधना करैत शेष समय यापित करी।

ओम्हर ग्राम-समाजमे नवयुगक हवा बहव आरंभ भऽ चुकल अछि। समाज-सुधारक संग आर्थिक संघर्षक रूपमे भूमि समस्या लऽ कऽ भूमिपतिक खेतमे झंडा गाड़ि सर्वहारा वर्गमे उत्तेजनात्मक प्रवृत्ति बढ़ि रहल अछि। किछु तथाकथित उच्च वर्गक युवक सेहो अपन नेतृत्व स्थापित करबामे लागि गेल छथि। जाहिमे प्रमुख छथि चिरंजीव झाक भातिज। गामक लघुजातीय मकुनमा मुकुन्द शास्त्री बनि पुरोहिताइ करैछ। अछूतोद्धार, मन्दिर प्रवेश, असवर्ण विवाह ई सभ एके संग रंग आनि रहल अछि। पुरोहिती एके जातिक बपौती नहि थिक—सभ वर्ग एहिमे हाथ बँटबओ, सेहो सोर अछि। युग-युगसँ परम्परामे जीवन यापन कयनिहार

समाज अभिचंकमे अछि। किछु स्तब्ध, मूक दर्शक ओ किछु अड़ल। किछु एहनो जे अपन द्वेप-रागकेँ एहि आन्दोलनक दोगेँ सुतारवामे लागल छथि। वास्तविक रूपमे विषमताकेँ समतामे अनवाक हेतुओसँ, तँ किछु अपन स्वार्थकेँ पुरयवाक जोगाड़ करैत छथि। संघर्ष क्रमहि तेजे भऽ रहल अछि। दालानक चर्चा-आलोचना आव आङन-ओसाराक ओटहुमे सुनल-अकानल जाइछ।

एही पृष्ठभूमिमे जीवन-संघर्षक दृश्य-पट खुजैत अछि। चिरंजीवझा कलि-कालक महिमा कहैत मन्दिरप्रवेशक हेतु हुजूमक तैआरीपर चिन्ता व्यक्त करैत डोमनासँ वादानुवाद करैत छथि। एम्हर किसान आन्दोलन लऽ कऽ वावूसाहेवक देवानजी पुलिसक सहायता चाहैत छथि ओ अपन वहिनिक तलासमे फूदर सेहो अवैत अछि। हरिजनक मंडलीकेँ पुजयवा लेल मुकुनमा, जे किछु दिन वाहर रहि पाढ़ि-लिख मुकुन्द शास्त्री रूपमे गाम पहुँचल, फूदरक वहिनि चम्पासँ रजिस्ट्रे-शन द्वारा विवाह कऽ लैत अछि। क्रुद्ध फूदर ओकरा पर प्रहार करैत पुलिसक गिरफ्तमे आवि जाइछ। देवानजी सहरजमीनपर कब्जाक प्रसंग एकोटा गवाह नहि भऽ सकने निरस्त होइ छथि। हरिजनक टोली गवैत-नारा दैत मन्दिर पहुँचैत अछि। कपाट बंद! तोड़ल जाइत अछि तें भीतर देखल जाइछ, भग्न मूर्ति ओ चिरंजीवझाक मृत शरीर! सभ डरेँ परा जाइछ। ओ पटाक्षेप होइछ।

एहि छोट-छीन घटनाकेँ आधारित कऽ तत्कालीन समाजमे चलि रहल वैचारिक परिवर्तनक झाँकी भेठि जाइछ। प्राचीन पीढ़ीक धार्मिक कट्टरता, नवीन पीढ़ीमे परिवर्तनक विकीर्णता, सामाजिक जीवनमे वदलाव। किसान आन्दोलन, भूमिसमस्या, स्त्री-समाजमे भाव-विवर्त तथा पुलिसक रुखि-विरुखि वहुतो चित्र एहि छोट-छीन एकांकीक कैनवासपर निखरि उठैछ। हरिजन-आन्दोलन, मन्दिर प्रवेश, विधवा विवाह भूमिसमस्या, जातीय संघर्ष ओ ग्रामजीवनमे नवीन आवर्त वहुत किछु झलकि अवैछ। उपसंहारक विषादपूर्ण दृश्य दर्शककेँ समस्या ओ समाधानक चिन्तन लेल एक वितान तानि दैछ। दर्शक दृश्यवस्तुक वास्तविकतासँ एक चिन्तन प्राप्त करय लगैछ जे कट्टरता ओ उछृंखलताक बीच—परम्परा ओ आधुनिकताक बीच, जे गहीर खात देखना जाइछ तकरा पार करबालेल कोन सेतु प्रस्तुत कयल जाय। समस्याक समाधान कोन विधानेँ कयल जाय।

लेखक पूर्ण तटस्थतासँ, पात्रक उक्ति-प्रत्युक्ति द्वारा समस्या उपस्थित करैत समाधान दर्शक-वाचकपर छोड़ि मार्मिक कलाधर्मिता प्रदर्शित कयने छथि। गामक बाहर एक मन्दिरक परिसर, एक दिनक पूर्वाह्ण-पराह्णक दृश्य विधान, कतिपय पात्रक प्रतिमानसँ संघर्षमूलक समस्या संधानकेँ अप्रत्याशित एक गीतगायक अन्धक ध्रुवागीतसँ जेना जोड़वाक विधान प्रस्तुत कयलनि ओ गीत-धुनि गुनगुनयवे योग्य अछि—ओकर ध्वनि-व्यंजना हृदयके झनझनयवे लेल अछि।

आन्हर हम नहि, ज्योति अपन देखैछी,
छायाकेँ नहि, हम असले रूप देखै छी···
मगन बैह अछि धैर्य राखिकेँ जे बयौ···
दुखकेँ सुखकेर पूर्व रूप मानैछी···

तहिना सामूहिक स्वर हृदयकेँ लहरा दैछ—भक्तिक संग शक्तिकेँ गहरा दैछ—

शवरीक ऐंठ जे खयलह हे हरि होअह सहाय,
साग विदुर घर खयलह हे हरि होअह सहाय।

एहि छोट-छीन एकांकीकेँ तकनीकी दृष्टिएँ देखी अथवा रससृष्टिएँ परेखी—समस्या-मूलकताकेँ तूल दी वा वास्तविकताकेँ मंचीय रूप देवामे समतूल बुझी, मैथिलीक एकांकी मालामे सुमेरु स्थानीय अछि।

कथा

कुमार साहेवक प्रतिभा बहुमुखी अवश्य छल, किन्तु कथा-विधा हिनक सर्वाधिक रुचिमत छल। अनुसन्धानात्मक निवन्धक वाद जखन ई रचनात्मक साहित्य दिस प्रवृत्त भेलाह तखन ओ प्रथम-प्रथम छद्मनाम 'भोल' उपनामसँ एक कथा लिखलनि, 1924 ई. मे स्वयं प्रकाशितो करौलनि। ओकर अतिरिक्त समय-समय पर जे ई कथा लिखलनि तकर संग्रह 'अगिलही एवं अन्य कथा' नामसँ डॉ. श्री शैलेन्द्रमोहनझाक सम्पादकत्वमे प्रकाशित भेल। जकर आमुखमे उचिते कहल गेल छथि—'ई प्रधानतः छथि एकटा कहानीकार। मैथिली साहित्यमे हिनक प्रथम प्रवेश कहानीकारेक रूपमे भेल और साहित्यक एहि रूप-विधानक विकासमे हिनक अनेक योगदान रहल अछि। ओहि समयमे जखन आख्यान वा आख्यायिकाक नामेँ अव्याहत रूपेँ मैथिलीमे पौराणिक कथाक आवर्तन भऽ रहल छल, कुमारसाहेब सामाजिक जीवनपर आधारित कथा रचनाक सूत्रपात कयलनि।' से केवल सूत्रपाते नहि कयलनि अपितु कहानीकलाक यावतो रूपविधान ओ नवताक वितान अछि सभकेँ आत्मसात् कए, विविध प्रयोग कए, मैथिलीक प्रथम ओ चरम कथाकारक रूपमे ख्यात रहलाह।

मनुष्यक मोल

मानव व्यक्ति हो वा जाति ओकर अवमूल्यन युगीन समस्या रहल अछि। मानव द्वारा मानवताक उपेक्षा ई संसारक परम्परा वनि गेल अछि। साहित्य एकर समाधानमे युग-युगसँ जुड़ल, ओकर अभियान जारिए छैक, आगहुँ जारिए रहतैक। कारण, जे समाधान ओ आइ आविष्कृत करैछ, मुक्तिक जे युक्ति ओ प्रयुक्त करैछ,

काल्हि सैह ओकर वन्धन वनि जाइछ। कहिओ ओ राज्यहीन सामाजिक जीव छल, पुनः अराजकताक स्थितिसँ उवरवालेल राजतन्त्रक आविष्कार कयलक। किछु दिन वाद राजसत्ताक विरोधी भए लोकतन्त्रक पक्षधर वनए पड़लैक। कहिओ जनसंख्याक कमी देखि सन्तति विस्तार लेल वहुविवाही वनल, पाछाँ परिवारनियंत्रणक लेल वैह निग्रह-निरोधक अनुरोध करवा लेल विवश भेल अछि। कहिओ कन्या-विक्रय खटकैत छलैक तँ आइ वर-विक्रयक समस्या ठाढ़ छैक। मनुष्यक मोल ओ जाहि समय आँकय वैसलाह ओहि समय मिथिलाक सामाजिकता कुलीन प्रथासँ जर्जर छल। जकर जकड़मे एहि कथाक नायक-नायिका—हर्षनाथ ओ मनोरमा नवविवाहित दम्पतीक रूपमे सीदित देखाओल जाइत छथि। एहि स्थितिपर कोना सहृदयक हृदयकेँ आवर्जित कयल जाय तकरा तरुण लेखक निपुणतासँ अंकित कयलनि अछि, संक्षेपित कथानकसँ अभिव्यक्त होयत।

मिथिलाक ब्राह्मण समाजमे जाति-पाँजिक प्रति जे मोह ओहि समय व्याप्त छलैक तकरे प्रतीक हर्षनाथक पिता छथि। भलमानुसमे वालकक विवाह करयबाक अभिलाषासँ ओ जाहि व्यक्तिक कन्या चाहैत छथि ओ टाकाक लोभी, कन्या-विक्रयी। हर्षनाथक पिता ताहिलेल अपन खेतपथार वेचि मनोरथ पुरबैत छथि। किन्तु हर्षनाथकेँ तकर दंड भोगय पड़ैत छनि ओ अभावग्रस्त भए घर छोड़ि नोकरी करबा लेल कलकला प्रवास करैत छथि, ओ पत्नीकेँ नैहर पठा देवा लेल विवश होइत छथि। मनोरमा नैहरमे अपमान-उपहासक पात्र वनलि, अन्ततः पतिकेँ दुःखगाथा कलकत्ताक पतासँ वैरंग चिट्ठी लिखि पठवैत छथि। अधपढ़ि ललनाक लिखल पता सुस्पष्ट नहि रहने वापस फिरि अवैछ जे दुर्भाग्यसँ मनोरमाक बापक हाथ लगैछ। पत्रमे लिखित वेदनाकथाकेँ अपन अपमानकथा बुझि कन्याविक्रयी पिताक क्रोधानल भड़कि उठैछ। मनोरमाक प्रति हुनक व्यवहार तेना क्रूर भऽ उठैछ जे परिवारक बीच होइतहिँ ओ शून्य-शून्य भेलि, तिरस्कारसँ जर्जर भेलि सहसा आत्महत्या कऽ बैसैछ। ओम्हर हर्षनाथकेँ जखन स्त्रीमृत्युक समाचार भेटैत छनि ओ जीवनसँ उदस्त-निरस्त भए संन्यास ग्रहण कय कतहु अन्तर्हित भऽ जाइत छथि। एहि छोट-छीन कथानक द्वारा तत्कालीन परिस्थितिक प्रतिरोधमें मानवताक जीवन-मूल्यक ह्रास पर ओ कटु प्रहार कय, सामाजिक समस्या दिस कथानककेँ मोड़ देलनि—पौराणिक आख्यानसँ कथाकेँ आधुनिक सामाजिक समस्याक समाधान दिस ध्यान दियौलनि। एहि प्राथमिक कथा लेखन द्वारा हुनक वैचारिक झुकाव सुधारवादी रूपमे प्रथम-प्रथम मैथिली कथाधाराकेँ तीव्र बनौलक। यथार्थक उद्घाटन द्वारा, कुलीनताक जे पूर्व आदर्श छल तकर पतन-दृश्य द्वारा ओ एतय एक नवदिशाक प्रवर्तक मानल जाइत छथि।

विवाह

ओही तृतीय दशकक बीच लेखकक दोसर कथा 'विवाह' प्रस्तुत भेल छल। ओहिमे सामाजिक समस्याक दोसर पक्ष बालविवाह समस्यापर कटाक्षपात कयल गेल अछि। ओकर आरम्भ जाहि सहजतासँ ग्रामीण नवविवाहित युवकक वाग्विनोदसँ आरम्भ होइछ, पोखरिक घाटपरक स्नानार्थी तरुणक क्रीडा-कौतुकी रुचिरोचसँ जाहि रीतिएँ संचालित होइछ—से देखबे-सुनबे योग्य। मध्यमवर्गीय मैथिल परिवारमे सासु-पुतोहु, मालकिनी-बहिकिरनी, माय-पूत, मीत-दोस्तमे जेना कथोपकथन चलैछ, व्यंग्य-रंग छिटकैछ तकर छविछटा एहि कथाक विशेषता अछिए। संगहि घटनाक जे आरोह-अवरोह अछि से प्रसादसँ विषाद धरि पहुँचाय कथानककेँ विसरय नहि दैछ, ओकर परिणामपर विचार करबालय विवश करैछ।

विवाह-कथानकक नायक कृष्णकान्त बालवियाहक विरोधमे संगी-साथीक बीच बहस करैत रहैत छथि परंच ओ अपनहि बालविवाहक फेरीमे पड़ि जाइत छथि। जखन टोकारा भेटैत छनि तँ कहबा लेल विवश होइत छथि जे—'हम जे नीक बुझैत छी से लोककेँ कहबे करबैक सैह ने हमर साध्य अछि। मानवाक विषय तँ लोकेक—समाजेक—इच्छापर निर्भर छैक। करैक बेरमे तँ जैह 'दस करवाणि सैह हमहु करवाणि।' ओम्हर नायिका बालवधू रमा असामयिक प्रसूता बनि रोगग्रस्त भए जाइत छथि। नैहरक मुह फेर देखि ने पबैत छथि। पति देवताक लाखो यतनहुँ दवाइ-बिड़रोमे सब किछु गमौनहु पत्नीकेँ बचा नहि पबैत छथि। अन्तमे कोना कने ऊपरसँ अपनाकेँ प्रकृतिस्थ देखाय, भितरेभितर सुनगैत रहैत छथि तथा एक दिन सहसा संग-समाजसँ मिलि अबैत छथि, मायकेँ किछु रहस्यात्मक ढंगेँ बोधि, अपने 'आइ इम प्रायश्चित्तक यन्त्रणासँ मुक्त हयबाक एकमात्र उपायक अवलंबन करैत छी' एक पुर्जा लिखि, बालविवाहक कुपरिणामकेँ सिद्ध करबालेल अपन जीवनलीला समाप्त कय लैछ। इहो दुःखान्त रचना थिक, सिद्धान्तक अनुशोचना थिक। कथाकाया अवश्य पुरान अछि किन्तु ओहिमे निहित भावनात्मक प्रेरणा एखनहु मलिन नहि पड़ल अछि। क्रियाक प्रतिक्रिया कोनहु कालपरिवेशक रहौक परंच ओकर परिणाम प्रक्रिया नियमिते चलैछ।

आमक गाछी

नाम-साम्यक हेतु-बीचक पैराग्राफ अबैत अछि—'नदीक किनार, गाछ सघन और जंगलाह, ताहि लगमे एकटा टूटल-फाटल महादेवक मन्दिर। जकरहि तेहन विपत्ति पड़ैत छलैक सैह ओहि ठाम जाइत छला। मुदा ओहि गाछीमे आमोक गाछ बहुत छलैक। परन्तु तोड़बाक तँ कथे कोन, के एहन दुःसाहस करत जे दिनहुँ

कऽ ओहिमे बिछै ले जायत ? तेँ प्रायः ककरहु ई बुझल नहि छलैक जे ओहि गाछ सभक आम केहन होइत छैक। हँ, नढ़याक, कौआक अथवा बादुरक भाषाक ज्ञान रहितैक तँ कदाचित् तकर बोध होइतैक।'

एहन श्मशान कातक भुतही गाछी सिद्धजीक सिद्धपीठ, विशेषतः निशीथ-अनुष्ठानक क्रिया सिद्धिक साधनास्थान होयबाक प्रथा तकिते अछि। परंच हुनका विषयमे सिद्धिनायक टिप्पणी होइत छनि—'हुनक कथा नहि हो, ओ सिद्ध छथि। से सिद्धजी छथि मुसाइझा, 'जनिक वर्ण कारी, वेष-परिधान लाल आओर आकृति आतंककारी।'

'मुसाइझाक पता दिन कऽ ककरहु नहि लगैत छलैक'''मुखान्धकार होइत ओ रामचन्द्रमिश्रक दलानपर दर्शन दैत छलाह। वार्तालाप नितान्त आवश्यक भरि करैत छलाह। एक पहर राति बितला पर अपन वैमात्रेय भाइक आङनमे भोजन करैत छलाह। परन्तु तकर बाद जँ कहिओ महिसबार सभकेँ पसरक बेर ठेसैत छलथिन तँ ठेसै छलथिन, नहि तँ दोसर सन्ध्यासँ पहिने हुनक दर्शन दुर्लभ छलैक। सब हुनक नियम बुझि गेल छलनि'''परंच हुनक सिद्धइक, क्रियाकलापक रहस्य सहसा ओहि दिन लोककेँ लगैछ जहिया एक बालरोगग्रस्त नेनाक झाड़फूक लेल सिद्धजीक तलास होइत अछि और भाग्यहीन नेनाक भाग्यमे सिद्धजीक सिद्धइसँ लाभ उठायब नहि लिखल छलैक ओ श्मशान पहुँचाओल जाइछ तखन सिद्धजीक सिद्धइक चित्र स्पष्ट होइछ, जे किछु झग्गड़-रग्गड़ कोलाइलक बाद देखल जाइछ—आमक ढेरी, मुसाइझाक आहत शरीर आओर ताहि लग पड़ल एक लोटा। लोटाक लगमे दस-पन्द्रहटा टाका छिड़िआयल छलैक।'

एही किछु शब्दरेखामे दम्भ-पाखण्डक बीच कोना केओ रहस्यमय भूत-अवधूत समाजमे पुजवैत चलि अबैत अछि, तकर भंडाफोड़ करैत लेखक अपन कलमक जादू किछुए पैराग्राफमे, विनु कोनो संवाद बढ़ौने दऽ जाइत छथि—से खूबी एहि छोट-छीन कथाक अन्तरालमे नीक जकाँ झकझका उठैछ।

बिहाड़ि

ई बिहाड़ि कोनो भौतिक वात्यासँ नहि उठल अछि प्रत्युत समाजक प्रचलित मनोभूमिमे जे वैचारिक वात्या उठैत अछि, कोनो व्यक्तिकेँ केन्द्रित कए जे कोनो आन्दोलन जगैत अछि से कोना शान्त कयल जाइछ तकर चित्रण एहि कथाक रंग-टीप थिक। गाम-घरमे द्वारिका सन व्यक्ति एखनहु भेटताह जनिका विषयमे कहल गेल अछि—

'अपना गाममे द्वारिका फनैत कहबैत छलाह। दस घर सोल्हकन हाथमे छलनि। बेरि-विपत्ति पड़लापर ठाढ़ भए सभ काज करा दैत छलथिन। सकल-साधारण गौआँकेँ मामिला-मोकदमा, घर-गृहस्थीमे मदति करै छलथिन।'''

परन्तु आइकाल्हि हुनक फनैती सटकल छनि। भरि गामक ब्राह्मण बारि कऽ एकघरा बना देने छनि। हुनक दोष छनि जे गामक एकटा राड़ तेरहाश्राद्ध कयने छल ओकर ओ सम्पर्क कयलनि।···

'फण थकुचल गेलापर जेना साप छरपटाइत अछि तहिना द्वारिका छटपटाय लगलाह। अपने गाम छोड़ि कऽ अनतह चलो जइतथि—अपन लोकवेदकेँ कतय दऽ आवथु।···विचारैत-विचारैत इहए स्थिर कयलनि जे वैशाख अवितहिँ छैक, सलोकहि सिमरिया जा कऽ गंगेकातमे रही।···जहिना शस्त्राहत मृग झाँखुड़क शरण लैत अछि तहिना द्वारिका सिमरियाघाटक शरण लेलनि।'

किन्तु विहाड़ि जे उठल से थम्हल नहि रड़टोलीमे उत्तेजना आनि देलक। परपंचैती बैसल। बाबूभैया अङना-घरक काज छोड़ा देलथिन, हुनका लोकनिक स्त्रीगण अपने चौका-वरतन करय लगली परंच किछुए दिनमे अकच्छ भए गेली। दलानोक लोकक पारा नीचाँ उतरल। तावत् लड़ाइस ड्राइवरी करैत उचितलालक भातिज गामक हालचाल बुझि अपन अफसरसँ परिवारक सुरक्षा लेल कलक्टरकेँ लिखबाओल ओ दारोगाजी तहकीकातमे रड़टोली बभनटोली पहुँचलाह। एहि सब क्रिया-प्रतिक्रियापर सभ सोचवा लेल विवश होइछथि। पहिने पतिया-प्रायश्चित्तक प्रस्ताव होइछ, पाछाँ ओहिमे घिसर-फिसर होइत देखि व्यवहारकेँ लोकाचार बुझि मान्यता देवाक विचार करैत विहाड़िकेँ शान्त करवाक हेतु फेर फनैत द्वारिकाक द्वारि खटघटयवे उचित बुझल गेल। तावत् द्वारका मास कए एहि ठामक विहाड़िक थोड़थाम देखि फिरि अबैत छथि। हुनक ठहक्काक संग विहाड़ि विड़रो जकाँ शान्त भऽ जाइछ।

एहि सामाजिक घटित घटनाकेँ अनेक पात्रक माध्यमेँ सजीव बनाय लेखक सामयिक भावनाकेँ निपुणतासँ कथारसक योजना करैत समसामयिक भावनाकेँ रंजित-व्यंजित करवामे समर्थ सिद्ध होइत छथि।

पण्डितपुत्र

पण्डितजीक पाठ-पुरश्चरण ओ पण्डिताइनिक कवुलापातीक वाद जे शरीरक कान्तिसँ सुन्दर 'पुन्नाम नरक'सँ पार करवा लए जे पुत्र भेटलथिन तनिका अपन पाण्डित्योक उत्तराधिकारीक प्रयत्नमे लगलाक वाद पण्डितजीकेँ क्रमशः बुझि पड़लनि जे शरीर प्रदान कार्यसँ कतेक अधिक कठिन ज्ञान प्रदान कार्य थिकैक। ओ नाम-संस्कार सुन्दर रखने शरीरक सुन्दरता बुद्धिओमे नहि आवि जाइत छैक। तथापि ओ हतोत्साह नहि होइत छथि। गृहकलहक डरेँ ताडनक प्रयोग छोड़ि पण्डितजी सब उपायक अवलंबन कयलनि परंच सुन्दरझा पण्डितजीक सभ प्रयोगकेँ विफल करैत 'घोपन्त विद्या'केँ लतियबैत अपन समवयस्क छौंड़ा सभक संग 'लपटन्त जोर'केँ गोड़ लगलनि, चित्तवृत्ति निरोधकेँ ओ कायरता बुझैत रहलाह।

एहन पुत्रकेँ पावि पंडितजीक हृदयमे जे मनोग्लानि छलनि, युग-युगसँ जोगाओल पोथीपत्राकेँ पंसारीक दोकानमे नोन-हरदिक पुरिया बनबाक आशंका छलनि, तकरा दूर कऽ सकबाक आश्वासन पावि अभेद मित्र सोमनाथझाक संग लगयबाक लेल सोमक उपामे दिन स्थिर कयलनि। परंच यात्रा-मुहूर्तसँ पहिने सुन्दरझा जे पतनुकान लेलनि—पंडितजीक मन-मनोरथकेँ तोड़ि, पंडिताइनिक ममता-मायाक मुँह मचोड़ि ओ सोमनाथ पंडितक आश्वासनकेँ मरोड़ि जे निपत्ता भेलाह से नरकसँ उबारबाक स्थानमे माय-बापकेँ चिन्ताक नरकमे धकेलि डुबाइए गेलाह। पंडितदम्पती सिसकी भरैत छथि, फेर कोनो सन्ततिकेँ पंडित बनयबाक प्रयास नहि रखबाक निश्चय करैत छथि। किन्तु ताहि ले' कोनो पुमपत्य तँ नहि होइत छनि, एक कन्यारत्न भेटितो छनि तँ 'कन्यापितृत्वं खलु नाम कष्टं' केर भोग करैत छथि, चिन्ता-चितामे दोहरा कऽ दग्ध होइत रहै छथि।

जे दरबज्जा पर राखि कऽ छात्रकेँ विद्यादान करैत छलाह, यजमान सभ जनिका पुरहित नहि गुरु कऽ बुझैत छलनि से कन्यादानी बनि यजमानक ओतय सहायता ताकऽ लगलाह। एक सम्पन्न यजमान कलकत्ता रहै छलथिन तनिक ओतय पहुँचत छथि। अन्तमे ताहिसँ काज नहि चलैत देखि कालीमन्दिरपर पुरश्चरणी बनय पड़ैत छनि, सेहो बनैत छथि। ओतहि अभेद स्वयं सोमनाथ सेहो भेटैत छथिन। चिन्तामग्न पंडितजी संगी संग एक दिन बजार करऽ जाइत छथि तँ मोटरक धक्का लागि अचेत खसै छथि। ओतहि एक पुलिसक सिपाही हिनका एम्बुलेन्समे पठयबाक योग धरबै अछि तँ सहसा मैथिलीमे बजैत देखि लग आबि पुछारि करैछ तँ चकित-विस्मित पैरपर खसैछ। बादमे अपन पूर्वकथा कहि—पढ़बामे मन नहि लगने पडाय कलकत्ता अयबाक, ओ एतय अनेक बेलना बेललाकि बाद पुलिसमे भर्ती होयबाक कथा कहि पंडितकेँ पुत्रोपलब्धिक सुखमे निमज्जित कय दैछ। सोमनाथ झा कहि उठैत छथि—'औ अभेद! आब अहाँकेँ कोनो खेद नहि, विद्योपार्जनक, लक्ष्य धनोपार्जन, ओ अन्तिम लक्ष्य सुखोपार्जन ओहीसँ साध्य होइ छैक। धनाद्धर्म ततः सुखम्। पुनः सुन्दरझासँ कहलथिन—'हँ, तोहरा अयलाक बाद तोरा एकटा बहिनि भेलथुन, तनिके कन्यादान करबाक छनि। यजमानसँ भिक्षा प्राप्त करय आयल छलथुन। बड़सुयत्रेँ चलल छलाह जे तोरहुसँ भेंट भऽ गेलनि, आ' तोँ टको जुमा कऽ रखनै छह···' पंडितजी कहलथिन, हुनका कमाइसँ हम किएक लेबनि? सुन्दरझा उत्तर देलथिन-से किएक? ई शरीर तँ अहीक देल अछि तखन एकर कमाइ अहाँ किएक नहि लेब···' पंडितजी चुप्प भऽ गेलाह। सोमनाथ बाबू कहलथिन—'सुन्दर वास्तविक पंडित भऽ गेल···'

अन्तमे पंडितपुत्र बहिनिक कन्यादान करबय संग-संग गाम पहुँचैत छथि। पंडिताइन पुत्रलाभ कए आनन्दमे उधिआय लगैत छथि, बेटाक चुमाओन ओ

सत्यनारायणक पूजा होइछ। पंडितपुत्र सुखांत रूपमे संगत होइछ।

एहिमे घटना, पात्र-चरित्र, कथोपकथन ओ स्थान-परिवेशक निवेश स्वाभाविकतासँ, चमत्कारितासँ ओ कलात्मकतासँ कथातत्त्वकेँ विशद करैछ।

पंच-परमेश्वर

स्वातन्त्र्योत्तरकालिक ग्राम-पंचायतक संगठनसँ गाम-क्षेत्रमे जे उथल-पुथल भेलैक तकर झाँकीक संग पंचक फ़ैसला परमेश्वरक फैसला थिक तकर आदर्श देख-बैत, गामक शान्ति लेल कोन प्रकारक भावना अपेक्षित अछि से एहि कथावस्तुक लक्ष्य अछि। एहि लेल जे सभ पात्र परिवेत्रित छथि तनिक विचित्रता भेटैछ हुनक कथोपकथनसँ, ग्रामीणक सहज परिवेशसँ ओ घटनाक स्वाभाविक उपस्थापनसँ।

कथाक आरम्भमे दू व्यक्ति परिचित होइछथि घूटर ओ मूटर वालसंगी। दूनू गोटामे भजार लागल। दूनू गोटाक दृढ़ संकल्प जे केहनो काज रहय दू बजे दिन गामक पोखरिमे वन्सी-लग्गासँ माछ मारै लेल अवश्य आवी ओ सूर्यास्त पर्यन्त खेलाइत रही।

पोखरि गामक गैरमजरुआ आम, बड़े विशाल, डुब्बा पानिसँ सदत सरावोर। ···ओकर दू कोन टेवने छलाह घूटर-मूटर माछ मारैक लेल। परन्तु आपसी व्यवस्था छलनि जे एक दिनमे दूटासँ वेसी माछ नहि मारी और तकरा वाँटिकुटि खाइ।

हालहि गाम पंचायतक निर्णय भेलैक जे ओहिमे माछक थर देल जाइक और कालक्रमे माछक व्यापारसँ ग्रामकोषक वृद्धि कयल जाय। निर्णय भेलैक जे पंचायतक विना आदेश नेने केओ माछ नहि मारय। तदनुसार गामसेवक जखन हिनका टोक देलकनि, रोक कयलकनि तँ दूहू फानि उठलाह—के थिकें हमरालोकनिकेँ रोकनिहार। जहिआ नोहर जन्मो नहि भेल होयतौक, हम दूनू भजार एहि पोखरिमे माछ मारैत आबि रहल छी। लंगझंग भेलोपर पंचायतमे शिकाइत भेलोपर दूहू निश्चिन्त वन्सी पथने रहैत छथि। ओहि दिन तड़ेरा डुबि जाइत छनि, घिरनी घुमवैत छथि। वन्सी छिपवाक प्रयासमे बुझि पड़ैत छनि, कोनो भारी माछ फसल अछि। अपस्याँत भऽ कसिया कऽ लग्गा पकड़ैत पानिमे धसि जाइत छथि। मन्सूवामे छलाह जे बड़का माछ पड़ल अछि मुदा हाथ लगलनि बड़का काछु।

ओम्हर थहाथही रक्षादलक लोक जे मोहार पर ठाढ़ अछि ठहक्का लगौलक ओ हिनका घेरने-वेढ़ने गाम-कचहरीक बाट धरौलक। नालिस भेल। फैसला जा' हयत ता गाम भरिमे चर्चा उठल। एक पक्षक मत छलैक अे घूटर-मूटर गामक हुकुमकेँ नहि मानलनि, दंडनीय थिकाह। दोसर पक्ष छलैक जे दू-चारिटा माछ मारने मछहरक दोषी नहि छथि, सेहो माछ अपनहिटा नइ खाइ अछि, सवकेँ दिनानुदिन वँटितो रहैछ। एहि अधवैसु जोड़ीकेँ जे एते दिनसँ वन्सी खेलाइत अछि-

जकरा कहिओ गीआँ वा मालिक रोकटोक नहि कयलकै तकरा दंड-अपमान नहि देल जाय।

किछु हो, मोकदमा दायर छलैक, ग्रामसेवक दोषारोपण कयलक, रक्षकदल गवाही देलक। इहो दूहू माछ मारब कबूल कयलनि।

किछुकाल पंचायतमे घोंघाउज होइत रहल। अंतमे पंचक फैसला सुनाओल गेल—'पंचायतसँ माछ मारबाक मनाही छैक, काछु मारबाक नहि।'''काछुक पोखरिमे रहने माछक ह्रास होयब अनिवार्य। तहि काछुकेँ मारि ई गामक उपकार कयलनि अछि। एहि हेतु हिनका लोकनिकेँ दू-दू टाकाक पुरस्कार कोषसँ भेटबाक चाही। अनेक वर्षसँ नियमित रूपेँ हिनका लोकनि पोखरिमे माछ मारैत आयल छथि। जाहू दिन माछक थर नहि खसै छलैक ताहू दिन माछक कमीक बोध नहि भेलैक। गाम सरकारकेँ उचित नहि थिकैक जे अकारण ककरो आमोद-मे व्याघात करैक। सबसँ बेसी गाममे शान्ति और सद्भाव राखब पंचायतक मुख्य कर्तव्य थिकैक और घूटर-मूटरके बन्सी-लग्गा खेलाइसँ रोकने गाममे से नहि रहि सकैत अछि। अतएव हिनका लोकनिकेँ पूर्ववत् दू माछ प्रतिदिन मारबाक अनुमति पंचायत दैन्हि और माछक घोर शत्रु काछु जाहि दिन मारथि ताहि दिन पुरस्कार भेटैन्ह।'

गामसेवक उद्विग्न भेल निवेदन कयलक—हमरा बाप-दादाकेँ जे उकटलनि से किएक?

अनका बजबाक छलैक कि घूटर बाजि उठलाह'''रौ! तोरा लोकनि भेलें धिया-पुता। तोहर बाप-दादाकेँ उकटलियौक तँ अपने अपनाकेँ उकटलहुँ। तोरा-की भेलौक?—जो खेला, मस्त रह।

एहि तरहेँ कथा-विन्दुकेँ पात्र-चरित्र ओ कथोपकथन तथा ग्राम-समाजक सहज गतिविधिसँ पंचायतक निर्णय जाहि भावनेँ कथाकार संक्षिप्त सरणिसँ करौलनि अछि ओ हुनक अभिव्यक्ति-कौशलकेँ निपुणतासँ निरूपित करैछ।

अगिलही

'अगिलही' केँ कहानी कहब तँ प्रश्न होयत, एहिमे कथावस्तु की अछि? उपन्यास मानब तँ जे परिधि ताहि लेल चाही से एहिमे कहाँ भेटैछ? समस्या-समाधान उद्देश्य जे कोनो विन्दु श्रव्य-दृश्य कथानक लेल चाही, तकरहु अभावे। तखन ई से कोना? एहि जिज्ञासाक उत्तरमे स्वयं लेखक श्री हंसराज द्वारा लेल गेल अन्तर्वीक्षामे कहने छथि एकरा एकटा 'स्केच' कथाचित्र। तथा एकर रचनाक उद्देश्यमे लेखकीय समय कटबाक परिणाम ओ जनौलनि अछि।

प्रश्न—अपने 'अगिलही' कोना लिखलिऐक?

उत्तर—हम नवहट्टामे रही, ओतए हमरा अधिक काल बेकारीक समस्या

रहैत छल। समय कटवा लेल हम अगिलही लिखब शुरू कयलहुँ। किछु अंश ओकर लिखबो कयल···मिहिरक विशेषांक (मिथिलांक) लेल सम्पादकजी (सुमनजी) हमरासँ कोनो रचना मङलनि, हम हुनका ओकर लिखल अंश देखय देलिऐन। हुनका ओ पसिन्द पड़ि गेलनि ओ छापि देलनि···और जखन रमानाथबाबू साहित्यपत्र प्रकाशित करय लगलाह तँ एकरा आगाँ पुरबय कहलनि। साहित्यपत्र प्रकाशित होइत रहल, हम ओकरा बढ़बैत गेलहुँ···जखन साहित्यपत्र बन्द भऽ गेल तँ हमरो लिखब बंद भऽ गेल।

प्रश्न—ई समाप्त नहि भऽ सकतैक?

उत्तर—समाप्त की होयतैक, ई तँ 'स्केच' थिकैक, जतवे लिखल छैक ओतवहुमे पूर्ण छैक। आ आगुओ बढ़ाओल जा सकैछ।

लेखक एकरा स्केच (रेखाचित्र) कहलनि तँ से रेखाचित्रात्मक कथा कहल जा सकैछ। एक मैथिल बालिकाक सहज मनोवृत्ति ओ चंचल प्रवृत्तिक मनोहारी चित्रण कथाकारक तूलिकासँ तेहन अनुरंजित भेल जकरा अपूर्ण रहितहुँ पूर्ण कहि सकैत छी। विनु कथानकक चरित्र चित्रण कथारसक आस्वाद लए सकैत छी। एहि प्रसंग मैथिलीक सर्वाधिक लोकप्रिय कथाकार प्रो. हरिमोहन झाक उक्ति अछि—'हिनक विख्यात रचना 'अगिलही' प्रकाशित भेल रहनि, ओकर चरित्रचित्रण तेहन सजीव, तेहन मर्मस्पर्शी, तेहन हृदयग्राही उतरल अछि जे कोनो भाषा ओहि वस्तुकेँ पावि अपनाकेँ समृद्ध बुझि सकैछ। मैथिली इतिहासमे ई शब्दचित्र अमर रहत। हमरालोकनि (हम, सुमनजी, दत्तजी, कमलेशजी) कुमार साहेबकेँ भूरि-भूरि धन्यवाद देलियनि। मैथिली साहित्यक ई अनुपम निधि कोहिनूर जकाँ चमकैत रहत। कुमारसाहेबक समग्र रचनामे दू वस्तु चित्रकेँ सद्यः आकृष्ट कए लैछ। एक तँ ठेठ भाषाक सहज प्रवाह। दोसर आदिसँ अन्त धरि सरस विनोदक पुट। ग्रामीण अंचलक जीवित फोटो कुमारसाहेब उतारने छथि से देखि आश्चर्य होइछ जे आजीवन नागरिक वातावरणमे रहितहुँ, हुनका ग्राम्यजीवनक एहन सूक्ष्म अनुभव कोना भेलनि!'

'अगिलही' नामो विचित्र, चरित्रो अजगुत, सहज रहितहुँ दुर्बोध। बाल-मनोविज्ञानक सूक्ष्म अंकनक संग विनोद-व्यंग्यक रंग सुसंगत। आरम्भ होइछ खिस्साक प्राचीन रीति पर—'एकटा ब्राह्मण छलाह। हुनका एकटा कन्या छलथिन। हुनकर नाम रहनि चपला। नामक अनुरूप गुणो रहनि। बाप-माय जखन अकच्छ भए जाथिन तखन कहथिन—'हय, संच रहह, बड़ि अगिलही छह'। टोल-पड़ोसक नेना-भुटका अगिलही कहि संबोधन करैत रहनि।

नाम-गुणक अनुसार किछु स्वभावो तहिना चित्रित—'एक दिन अगिलही भीति लागलि वैसलि छलीहि। लगमे वहिनि कनेआ-पुतरा गढ़ैत छलथिनि। अपने सोहर गुनगुना कऽ गर्बत छलीहि। की फुरलनि पैरसँ एक उड़ुवका मारलथिन। हाथक

सुइ हुनका वहिनिक आडुरमे गड़ि गेलनि। 'ओहोहो' करैत कनेजा-पुतरा पटकि ओ अगिलहीकेँ मारय दौड़लथिनि। अगिलही पड़ायलि-पड़ायलि फुलकाकीक आङन जा कऽ कोठीक पाछामे नुकाय रहलीह।'···चारूकात खोज होमय लागल। भानसक वस्तु सभ तँ पानि भऽ गेल। कतहु अगिलही नहि भेटलैक।···मुन्हारि साँझ भेलैक। तावत अगिलही फूलकाकीक आङनमे जे-जे होइत छलैक से सब सुनैत छलीह। 'जखन राड़िनि चलि गेलैक, फूलकाकीक आङनक लोक खाय-पीवि लेलकनि···धिया-पुता दरवाजापर खेलाय गेलनि, अपनहु रामायणक अक्षर ठेकनबैत निद्राभिभूत भेलीहि। अगिलही पैर मारने-मारने भनसाघर गेलीह। खयबाक किछु नहि भेटलनि। घोड़ंचीपर माटिक मटकूड़ सभ रहैक परन्तु ओहूमे खयबाक कोनो वस्तु नहि···सीक पर दही टाँगल तँ रहैक परन्तु हुनका पयवा योग नहि रहैक। कोनहु तरहेँ घोड़ंचीकेँ घुसकौलनि।···हड़बड़ा कऽ चढ़य लगलीह और एक हाथसँ दहीक छाँछी धयलनि। परन्तु घोड़ंचीक एकटा टाङ टुटले छलैक ओ खसि पड़लनि। सीकपरसँ छाँछिओ खसि पड़लैक। अधजम्मू दहीसँ स्नाने भऽ गेलनि।'···

बाल-जिज्ञासाक प्रसंग कथोपकथन शैलीक संग प्रश्नोत्तर—अगिलहीक मातृकमे उपनयन रहनि। गुलाबमामा लेआओन करय अयलथिन तँ अगिलही पुछय लगैत छथि—

अगिलही—उपनयन होइत छैक तँ की होइत छैक ?

गुलाबमामा—लोक ब्राह्मण होइत अछि।

अगिलही—विनु उपनयन भेने लोक की रहैत अछि ?

गुलाबमामा—शूद्र।

अगिलही—जैह मनचनमा अछि ?

गुलाबमामा—हँ।

अगिलही—विनुओ (अपन भाय दिस सम्बोधन कए) एखन सैह अछि।

गुलाबमामा—हँ।

अगिलही—मनचनमा ओर विनू एके बेरि ब्राह्मण होयत ?

गुलाबमामा—नहि, मनचनमा कोना ब्राह्मण होयत ? ओ तँ राड़क बेटा थिक। विनूकेँ उपनयन होयतनि तखन ब्राह्मण होयताह।

अगिलही—तँ राड़ ब्राह्मण नहि होइत अछि ?

गुलाबमामा—छूतिक विचार उपनयनसँ पहिने नहि रहैत छैक। पछाति भए जाइत छैक।

अगिलही—जे कियैं ?

गुलाबमामा—ब्राह्मण होइत अछि तेँ।

अगिलही—तँ ब्राह्मण मनचनमाक छुइलासँ छुइल जायत ?

गुलाबमामा—हय, तोँ बातकेँ बड़ रेघबैत छह ?''

बात-बातमे अगिलहीक मेधा-जिज्ञासा ओ बालसुलभ चपलता जाहि सूक्ष्मतासँ अंकित भेल अछि तकरा देखैत ई बाल मनोवैज्ञानिकतावाद ई कथा-रेखा मैथिलीक कथासाहित्यमे रेखांकित अछि—अपना ढंगक अपनहि अछि ओ हरिमोहनबाबूक शब्दमे 'कोनो भाषा ओहि वस्तुकेँ पाबि अपनाकेँ समृद्ध बुझि सकैछ।'

संक्षेपमे कुमार गंगानन्द सिंहक रचनात्मक प्रतिभा, थोड़बहु रचित साहित्यमे तेना चमकैत, गमकैत ओ रस बरिसबैत अछि, हुनक थोड़ कृतिअहुकेँ गुण-गरिमासँ तेना पूर्ण करैछ जे 'पूर्णता गौरवाय' सिद्ध होइछ।

हुनक निबन्धात्मक लेख, विचारात्मक भाषण ओ विवेचनात्मक भूमिका चन्द्राभरण (रामचन्द्र मिश्र, जैत) मैथिलीमे विहारी (धनुषधारी दास) सुभद्राहरण (मुन्शी रघुनन्दनदास), प्रणम्यदेवता (प्रो. हरिमोहन झा) साओन-भादव (पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन') वीरकन्या (पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर') प्रभृति ओ चिन्तन-चर्चाक उल्लेख कतिपय स्थलमे भऽ चुकल अछि, ओ विचार-विन्दुसँ भऽ सकैछ, तेँ एतय दोहरायाव अनावश्यक।

उपसंहार

जनिक जीवन-प्रभात आरम्भ होइछ इतिहास-पुरातत्त्वक एकान्त अनुसन्धानसँ से कोना लगले अनायासे संघर्षक राजनीतिमे भासमान भए उठैत छथि। नगरपालिका, जिलापालिकाक सीढ़ीपर पैर दितहिँ कोना लगले बड़ा लाटक सर्वोच्च व्यवस्थापिका (काउन्सिल आफ स्टेट्सक) सदस्य भए राजनीतिमे महत्त्व प्राप्त कऽ लैत छथि। राज-सामन्तक सन्तति-परिवारक रहितहुँ कोना सहसा स्वराज्य पार्टीक महासचिवत्वक कंटक-पथ पर चलि पड़ैत छथि। कांग्रेसक शीर्षस्थ नेता मोतीलाल नेहरूक पार्श्ववर्ती सहकारी रहितहुँ, साम्प्रदायिक निर्णयक विरोधमे महामना मालवीयक पक्षधर बनि कोना राष्ट्रिय अस्मिताक रक्षणमे विलक्षण भूमिका ग्रहण करैत छथि ओ क्रमशः मुस्लिमलीगक साम्प्रदायिकताक प्रतिरोधमे वीर सावरकरक अनुगामी भए हिन्दूसभाक नेतृत्व ग्रहण करबा लेल बाध्य होइत छथि। ई सभ राजनीतिक चंक्रमण-संक्रमणक कथा भेल।

पारिवारिक जीवनमे जन्म ग्रहण कयलनि राज-परिवारमे किन्तु बालिग भेला पर जे राज्य हिनका हस्तगत भेल ओ पूर्वजक दान-उदारता ओ कुलीनता-कौटुम्बिकताक कारणेँ ऋणग्रस्त रूपमे। तकरा सम्हारबाक बदला राजनीतिक व्यस्ततेँ, तज्जन्य व्यय-बाहुल्येँ, दिनानुदिन ओकरा अस्तव्यस्ते करैत रहलाह। देशक आर्थिक उत्थानमे, विधायिकी विधानमे उपाय सुझबैत रहलाह, परंच अपन स्टेट-परिवारक आर्थिक सन्धानमे क्षणो भरि, कणो भरि योगदान दैत नहि देखल गेलाह।

हिनक व्यक्तित्व-चन्द्रमे शुक्ल पक्षक संग किछु कृष्णपक्षो प्रत्यक्ष छल। भाषण-सम्भाषण ओ रचना-कल्पनामे जागरूक रहनहुँ व्यवहार पक्षमे ई शिथिल देखल जाथि। कागज-पत्रकेँ सेँतबामे, बिकछाय रखबामे जतेक यत्न राखथि, जतेक समय लगबथि ततेक ओकर उपयोगमे नहि समर्थ होथि। ओहीमे ततेक ऊर्जा लगबथि जे कार्यकालमे ई अलसा जाथि। ततेक कार्यभार सहजतासँ स्वीकारि लेथि जे ओकरा पूरा करबामे असमर्थ रहि जाथि। गप्पमे तेना रमि जाथि जे सामयिक आवश्यको काज छुटि जाइन। एक काजमे निरन्तरता नहि राखि सकथि। किछु आइ जँ लिखि लेथि तँ कामा-फुलस्टाप विनु देनहि छोड़ि

देथि, मसमे-खरमे फेर मन पड़नि तखन ओकरा पुरा सकथि। फलतः जते ई लिखि सकैत छलाह ततेक लिखि नहि पौलनि।

किछु व्यस्ततासँ ओ किछु अव्यवस्थतासँ लेखन हिनक साधना नहि बनि सकल। ई जखन किछु लिखलनि सम्पादक वा संकलनकर्ताक वारंवार तगेदा पर। परंच जँ लिखि लेलनि तँ ओ फेर कलाक नमूना बनि कऽ रहल। प्रतिभा ओ व्युत्पत्तिक प्रखरता तेहन छलनि जे अभ्यासक अभाव हिनका हेतु कोनो प्रभावी नहि।

हिनक बहुचर्चित रेखाचित्रात्मक उपन्यासिका 'अगिलही' मिहिर ओ 'मैथिली साहित्य पत्र'क सम्पादकक आग्रह पर लिखा सकल। उल्लेखनीय एकांकी 'जीवन-संघर्ष' स्वदेशक उद्देश्यें प्रस्तुत भेल। संकलनकर्ता लोकनिक प्रयोजनीयतासँ कथाक रचना संभव भेल। कवितोक स्फूर्ति कवि-सम्मेलनक अध्यक्षता निमित्त। निबन्धात्मक भाषणो तँ अवसर विशेषक प्रयोजन हेतु प्रस्तुत भऽ सकल।

एहि सब कारणें ओ साहित्य क्षेत्रमे विशेष काज नहि कऽ सकलाह। बहुत कम लिखि पौलनि। किन्तु एतवा अवश्य जे जतवे ई आग्रहवशात् वा कर्तव्य-वद्ध भऽ लिखि देलनि, यत्किंचित् पत्रं-पुष्पं मैथिलीकें अर्पित कऽ सकलाह से पुष्कल भने नहि हो परंच सफल अवश्य भेल। मैथिलीक भंडारकें पुष्कल रूपें भने नहि भरि सकलाह परंच किछुए मणि-माणिक्य दए ओकरा चमकाय देलनि—मूल्यवान् बनाय देलनि। परिगणित कथा लिखि, यत्किंचित् एकांकी रचि ओ प्रथम कोटिक लेखकमे सम्मान्य स्थान बना लेलनि। मैथिलीक इतिहासक रूप-रेखा ओ अपन भाषण एवं निबन्धमे जतवे अंकित कयलनि से भावी इतिहासकारक लेल आधार बनि गेल। हिनक ओहि रूपरेखेपर परवर्ती लेखक रंगरूप दय चमका सकलाह।

मैथिलीक संगहि हिन्दी, अंग्रेजी ओ संस्कृतोमे लिखैत रहलाह, प्रयोजनीय पुरबैत अयलाह। किन्तु खासकऽ मैथिली भाषा-साहित्यकें जतवा किछु दऽ गेलाह ताहीसँ हुनक नाम ओकर इतिहासमे अमर भए गेल। पटना-विश्वविद्यालयक तत्त्वावधानमे डॉ. गौरीकान्त झा द्वारा प्रस्तुत एवं डॉ. आनन्द मिश्र तथा डॉ. विश्वेश्वर मिश्रक संयुक्तक तत्त्वावधानमे निर्देशित शोध-प्रवन्ध मध्य 'आधुनिक मैथिली साहित्यमे कुमार गंगानन्द सिंहक योगदान' विषयमे उचिते मूल्यांकन कयल गेल अछि जे—'साहित्यक क्षेत्रमे परिमाण मात्र सब किछु नहि थिक, साहित्यक गुणात्मकता मुख्य महत्त्व रखैछ। स्वतन्त्रता-पूर्व सुविख्यात आधुनिक मैथिली साहित्यकार मध्य कवीश्वर चन्दा झाकें छोड़ि गुणात्मक दृष्टिएँ कुमारसाहेबसँ श्रेष्ठ कोनो साहित्यकार नहि परिलक्षित होइ छथि।' एहि उक्तिमे भावनात्मक श्रद्धेटा नहि, अपितु कुमार गंगानन्द सिंहक सर्वमान्य प्रतिभाक उद्भावना, हुनक विशिष्ट शैली तथा प्रतिपाद्य विषयक प्रति गहन चिन्तनक संग कल्पना ओ वास्तविकताक सन्तुलन मूल्यांकित अछि। किछु एही प्रकारक विचार मैथिलीक

समर्थ समालोचक पं. रमानाथ झा व्यक्त कय गेल छथि जे—'ई अत्यल्प लिखल; परन्तु ओतवहिसँ हिनक नाम मैथिली साहित्यमे अमर रहत।' से वास्तवमे ई तेहन रससिद्ध लेखक भेलाह जे हिनक कीर्ति-कलेवरकेँ अविनश्वर बनाय गेल। सारस्वत पुरुष आचार्य भम्मटक शब्दमे—

'जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्॥'

विचार-बिन्दु

राष्ट्रिय

'हिमालयसँ कन्याकुमारी धरि पसरल एहि विशाल देशमे जे नाना प्रकार जाति, धर्म, भाषा, आचार-व्यवहार आदि अछि, से सभ माला गाँथल रंग-विरंग फूल जकाँ अपन विशिष्ट सौन्दर्य आ सुगन्धिक रक्षा करैत समष्टि रूपसँ माला रूपी भारतीय संस्कृतिकेँ अभिनव सौन्दर्य आ सुगन्धि प्रदान करैत रहल अछि। राष्ट्रियताक एक सूत्रमे गाँथल एहि विविधते सभसँ भारतीय संस्कृतिक इन्द्रधनुषी स्वरूपक निर्माण भेल अछि।' ('राष्ट्रिय एकताक महत्त्व' शीर्षक निबन्धसँ)

राष्ट्रिय एकता

'कौरवकेँ लक्ष्य कऽ युधिष्ठिर कहैत छथि जे ओना तँ हमरा लोकनि पाँच भाय छी, कौरव लोकनि एक सय भाय छथि किन्तु 'अन्यैः सह विवादे तु वयं पंच-शतोत्तरम्'—अनकासँ विवाद पर—बाहरी संकट भेला पर अपना सभक समस्त भेदभाव विसरि एक भऽ जायब, भारतक विशेषता रहल अछि। इतिहास साक्षी अछि, जखन हमरालोकनि एहि विशेषताकेँ विसरलहुँ तखन-तखन पराभवमे पड़लहुँ।' ('मैथिली साहित्य सरोज'सँ)

परम्परा—आधुनिकता

'परम्परागत कल्पना लोक-मस्तिष्क तथा व्यवहार पर एतेक अधिकार प्राप्त कएने अछि जे ओकरा नाश करबाक अत्यन्त आवश्यकता छैक। केवल बजने-भुकने ओहिमे क्यौ कृतकार्य नहि भऽ सकैछ। ओहि ले' कार्यशील होयबाक आवश्यकता छैक। नवीन कल्पनाक निर्माण करबाक व्रतकेँ सम्पूर्ण करबा लेल बहुत त्याग, बहुत सहनशीलता ओ बहुत दृढ़ताक आवश्यकता छैक।'

('मैथिली गद्य कुसुममाला'सँ)

'परदा प्रथा बंगालक किछु अंश, विहार, युक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त ओ राज-पुतानामे प्रचलित अछि। खास कऽ एकरा धनसँ सम्बन्ध छैक। जे जतेक धनी

ओ परदा रखवामे अपन ततेक महत्त्व बुझैत छथि।···भारतीय संस्कृतिक ई फल नहि, इस्लामिक संस्कृतिक संघर्षसँ ई प्रथा देशमे प्रचलित भेल अछि।···परदा मुख्यतः स्त्रीशिक्षाक बाधक अछि।' (बाल विवाह निरोधक प्रसंग भाषणसँ)

आन्दोलन

'बिना अपन विचारकेँ कार्यरूपमे परिणत करबाक स्पृहा रखने आन्दोलनमे सजीवता ओ बल नहि आबि सकैछ।···आन्दोलनक प्रारंभिक अवस्थामे ई आशा करब जे सब अनुकरण-अनुसरण करय लागत परम मूर्खता थिक।···आन्दोलनक प्रारम्भमे आन्दोलनकारी व्यक्तिकेँ छोड़ि और सब ओकरा सन्देहेक दृष्टिसँ देखैत रहैछ। परन्तु प्रचार एवं उदाहरणसँ समय पाबि समाज ओहि पथक अनुयायी बनि जाइछ।' ('आन्दोलन विषयक निबन्धमे 'गद्य कुसुममाला'सँ)

भाषा

'मैथिली हिन्दीक उपभाषा कदापि नहि थिक। तखन रहल प्रतिस्पर्धाक विषय।···हमरा मतेँ हिन्दी राष्ट्रभाषा (राष्ट्रिय सम्पर्कक भाषा) थिक ओ मैथिली हमरा लोकनिक मातृभाषा। एहि दूनूक क्षेत्र आ' उपयोगिता भिन्न छैक।···राष्ट्रभाषा हमरा लोकनिक राजकीय काज सब लए सीखब आवश्यक। संगहि साहित्यिक भांषा जाहि-जाहि ठाम सन्निवेश होइत ताहि ताहि ठाम मैथिलीकेँ स्थान अवश्य भेटैक। मैथिली हिन्दीकेँ पुष्ट करतैक, क्षीण नहि। प्रतिस्पर्धाक आशंका संकीर्ण विचारक परिचायक थिक।'

('मैथिली साहित्यक प्रगति' निबन्धसँ)

साहित्य

'निबन्धक क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत छैक। संसारमे प्रायः कोनो एहन विषय नहि छैक जाहि पर निबन्ध नहि लिखल जा सकैत छैक।···ई दृष्टिमे राखब उचित जे जाहि युगक छी ओकर वातावरणक अनुकूल चिन्तन हो। अन्यथा वास्तविकता-सँ पृथक् भए ओहिमे शक्ति नहि रहतैक। अतीतक सार्थकता छैक वर्तमान लेल प्रेरणा प्रदान करबामे और भविष्योक सार्थकता छैक वर्तमानकेँ नियन्त्रित करबा लेल।' (मै. लेखक सम्मेलनक भाषणसँ)

मिथिला-मैथिली

'मैथिली-प्रेमी विद्वान् अपन मौलिक रचना मैथिलीमे करथि और ओ एहन होइन्ह जे अन्य भाषाक विद्वानोकेँ ओकर आवश्यकता होइन्ह।'

(मै. लेखक सम्मेलनक निबन्ध विभागक अध्यक्षीय भाषणसँ)

धर्म

'हिन्दू धर्म सनातन ओ सार्वभौम थिक। हमर दृढ विश्वास अछि जे एहिमे निहित सिद्धान्तक पालनसँ संसारमे सुख ओ शान्ति स्थापित होयत।'

'धर्मक रूप अत्यन्त व्यापक अछि। वैशेपिक धर्मक प्रणेता महर्पि कणाद धर्मक स्वरूप निर्धारित करैत कहने छथि—'यतोऽभ्युदय-निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः' अर्थात् जाहिसँ लौकिक आनन्दक प्राप्ति हो ओ निःश्रेयस पारलौकिक चरम शान्ति प्राप्त हो ओ धर्म थिक।'

'हमरा लोकनिक धर्म केवल श्रुति-स्मृतिमूलक अर्थात् आगम वाक्यहिपर निर्धारित नहि अछि। प्रत्युत आचार-मूलको अछि ओ आत्मसन्तोषमूलको। अर्थात् वेद-धर्मशास्त्र ओ परम्परासँ चलित जीवनपद्धति ओ से सभ तेहन जे सहज हृदयग्राही हो।'

'सनातन हिन्दू धर्ममे चतुर्वर्ग अर्थात् धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारू पुरुपार्थक समन्वय कयल गेल अछि। सामाजिक संगठनकेँ दृष्टिमे राखि चातुर्वर्ण्य ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र अर्थात् ज्ञान-सुरक्षा-धनार्जन-श्रमकौशल सभ समाहित भेल अछि। व्यक्तित्वक विकास लेल चतुराश्रम—अर्थात् ब्रह्मचर्य-गार्हस्थ्य-वानप्रस्थ-संन्यास—योग्यता-प्रयोग-समाजसेवा ओ त्याग चारू प्रवृत्तिक योग सम्मिलित अछि, जाहिसँ व्यक्ति, समाज ओ विश्व भावनाक सामंजस्य कयल जाइछ।'

(मिथिलेश-महेश-रमेश संस्कृत व्याख्यान मालासँ संकलित)

समाचार-पत्र

'कोनो प्रकारेँ समाचार प्रकाशित कएदेवे पत्रकारिताका उद्देश्य नहि। लोक-क धारणा ओ मनोवृत्तिकेँ बनयबाक ओ विगाड़बाक उत्तरदायित्वो पत्र पर निर्भर रहैछ।'

'पत्रकार बहुधा भावुकताकेँ प्रश्रय दैत देखल जाइत छथि। जहाँ धरि तर्क ओ निष्पक्षतासँ कार्य लेबाक चाही ततय ओ भावुकतासँ तथा व्यक्तिगत प्रभावितता सँ लैत देखल जाइत छथि, जे उचित नहि।'

'समाचार वा विचार प्रकाशित करबाक समय ई ध्यान रखबाक थिक जे लोक-मत निर्माणक लक्ष्यसँ पत्रक नैतिक महत्त्वकेँ रखैत हुनका पत्रक संग चलबाक छनि, अपन विचारक संग पत्रकेँ लऽ थलबाक नहि।'

(पत्रकार सम्मेलनक अध्यक्षीय भाषणसँ)

प्रकीर्ण

'सबसँ बेसी गाममे शान्ति और सद्भाव राखब पंचायतक मुख्य कर्तव्य

थिकैक।···ग्राम सरकारकेँ उचित नहि थिकैक जे अकारण ककरो आमोदमे व्याघात करय।' ('पंचपरमेश्वर'सँ)

'शरीर-सुख प्रदान कार्यसँ कतेक अधिक कठिन ज्ञान-प्रदान कार्य थिकैक।···'

'शारीरिक विकास लोकक दृष्टिमे पहिने अबैत छैक। मानसिक विकास पाछाँ।' ('पंडितपुत्र'सँ)

'ई अंग्रेजी-फारसी हम सब नइ बुझै छिअहु, जे कहबाक छहु से अपन बोलीमे बुझा कऽ कहह।···'

'जतेक लोक बजैत अछि ततेक जँ करय तँ कलियुगो सतयुग भऽ जाय।'
('विवाह'सँ)

'जतियाक आगू पतियाक किछु नहि चलैत छैक।···लोकाचार प्रबल।'
('विहाड़ि'सँ)

गंगानन्द वंशशाखा

बीजीपुरुष गंगाधर (10म शताब्दीक उत्तरार्ध ओ 11 श. पूर्वार्ध अनुमानित) ←भरत←पद्मपाणि←कमलपाणि←वत्सेश्वर←म. म. रामेश्वर←म. म. ग्रहेश्वर←म. म. गदाधर←हरिकर←श्रीकर←बुद्धिकर←म. म. रामभद्र←भरत ←नैयायिक म. म. राधाकृष्ण←विश्वेश्वर। =15 पुरुषा

विश्वेश्वरकेँ चारिपुत्र (योगी, देवानन्द, भवानन्द, शिवानन्द) द्वितीयपुत्र देवानन्दकेँ दीवान उपाधि प्राप्त (1700-1770 लगभग)। दीवान देवानन्दक दू पुत्र जे चौधरी उपाधि ग्रहण कयल—परमानन्द चौ., मानिकचन्द्र चौ.। हजारी परमानन्द चौधरी—जनिका हजारी मनसव भेटल। हुनक दुइपुत्र राजा दुलार चौधरी ओ एकलाल चौधरी। =2 शाखा

राजा दुलार चौधरी राजोचित सिंह उपाधि गहण कयल। हुनक तीन बालक—कुमार सर्दानन्द सिंह (निःसन्तान) राजा वेदानन्द सिंह वहादुर ओ राजा रुद्रानन्दसिंह वहादुर। राजा वेदानन्दसिंहक बालक कलिकर्ण राजा लीलानन्द सिंह (1816-1883), जनिक सन्तति बनैली राजवंश कहाओल। राजा रुद्रानन्द सिंहक तीन बालक—कु. केशवानन्द सिंह, कुमार मोदानन्द सिंह ओ राजा श्री नन्दसिंह, जनिक स्थापित श्रीनगर। =4 शाखा

श्रीनगर वंशमे राजा नन्दसिंहक तीन बालक—कु. नित्यानन्दसिंह (निःसंतान) राजाकमलानन्द सिंह 'साहित्य सरोज' (1875-1909), कु. कालिकानन्दसिंह (1877-1930)। राजाकमलानन्द सिंहक तीन बालक—कुमार गंगानन्दसिंह, कु. अम्बिकानन्दसिंह, कु. अच्युतानन्दसिंह। कु. कालिकानन्दसिंहक पाँच बालक—कु. अभयानन्द सिंह, कु. विजयानन्दसिंह प्रसिद्ध मोहनजी, कु. घनानन्दसिंह, कु. विद्यानन्द सिंह, कु. प्रमोदानन्दसिंह। =3 शाखा

कुमार गंगानन्दसिंहकेँ एक बालक कु. सच्चिदानन्दसिंह (सनातनजी) ओ एक कन्या चित्रेश्वरी देवी। सच्चिदानन्दसिंहक तीन पुत्र—हीरानन्दसिंह, इलानन्दसिंह, ईश्वरानन्दसिंह तथा एक कन्या शक्तीश्वरी (सरिता)।=3 शाखा

सहायक ग्रंथ

ग्रन्थ ओ पत्र-पत्रिका

1. अलयी कुल प्रकाश (पं. रमानाथ झा)
2. अगिलही ओ अन्यकथा (सं. डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा)
3. एकांकी संग्रह (मैथिली अकादमी)
4. मिथिलामिहिर (मिथिलांक)
5. मिथिला-भारती (कुमार गंगानन्द सिंह स्मारक अंक)
6. स्वदेश (मासिक, 1948)
7. अभिव्यञ्जना (वैयक्तिकी सं. प्रो. मायानन्द मिश्र)
8. जयन्ती स्मारक ग्रन्थ (पुस्तक भंडार, दरभंगा-पटना)
9. साहित्य सरोज रचनावली (सं. शिवपूजनसहाय)
10. किछु देखल-किछु सुनल (पं. गिरीन्द्रमोहन मिश्र)
11. मैथिली साहित्यक इतिहास (डॉ. जयकान्त मिश्र)

अप्रकाशित शोध-निबन्ध ओ हस्तलेख

आधुनिक मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमिमे कुमार गंगानन्द सिंह
(शोध-निवन्ध : डॉ. गौरीकान्त झा)
कुमार गंगानन्द सिंह स्मारक ग्रन्थ हेतु छिटफुट लेखादि संग्रह
(संग्रहकर्ता श्री विनोदानन्द झा)

अतिरिक्त पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित निबन्ध

(लेखक—प्रो. हरिमोहन झा, कमलनारायण झा 'कमलेश', श्री विनोदानन्द झा (मिथिला भारती) श्री हंसराज (ओ जे कहलनि) डा. भीमनाथ झा (परिचायिका)। अभिनन्दनग्रन्थ सामग्री (श्री रमेन्द्रनारायण चौधरी, (ग्रन्थालय प्रकाशन) आदि।

Indian Institute of Advanced Study
117143
9.12.04
SHIMLA

कुमार गंगानन्द सिंह (1898-1971) 'रोबदार रहितहुँ' आकर्षक आकार में, विनु कहनहु चीन्हि लेल जाइत छलाह जे ई कोनो श्रीमान रहितहुँ विद्वान छथि; राजनीतिक घेर-बेढ़ मे चलितहुँ कोनो साहित्यिक छथि; आभिजात्य वर्गक रहन-सहन मे देखल जैतहुँ सामान्य समाजक आत्मीय छथि; तखन ईं अवश्य कुमार गंगानन्द सिंह थिकाह।'....

'कृती कुमार गंगानन्द सिंह एहन चतुर्मुखी प्रतिभाक व्यक्ति छलाह जनिक कृतित्वक आयाम बड़ व्यापक छल। शिक्षा, राजनीति, समाजनीति ओ भाषा-साहित्यक क्षेत्र में सेवाक निरन्तरता बनल रहलनि।... मिथिला-मैथिलीक एहन कोनो क्षेत्र नहि जतय हिनक कृतित्वक छाप नहि पड़ल हो।'

विहारक अभिजात्य वर्गक अन्तिम नमूना कहि जे ख्यात छथि—जनिका विषयमे कहल गेल जे ई जतय जे किछु लिखैत छथि सैह साहित्यक एक गोट सम्पत्ति भए जाइछ—जनिक प्रसंग धारणा व्यक्त कयल जाइछ जे एतेक अधिक व्यापक क्षेत्रमे एहन लोकप्रियता देशमे कमे व्यक्तिकेँ प्राप्त होइत छनि—एहन व्यापक व्यक्तित्व, चतस्त्र कृतित्व, बहुक्षेत्रीय साहित्यिक महान पुरुषक चरित्रचित्रण एवं प्रतिमा-पुञ्जक मूल्याङ्कन करबाक प्रयास एहि पुस्तिकामे कयल गेल अछि।

एकर लेखक ***सुरेन्द्रझा 'सुमन'*** (जन्म 1910) चारि दशक धरि कुमार गंगानन्द सिंहक निकटवर्ती रहल छथि। जे स्वयं बहमखी प्रतिभाक व्यक्ति छथि—चरित्रनायकक समाने विधायिकासँ संसद ध... विभागीय अध्यक्ष रूपेँ शिक्षा-क्षेत्रमे, अ... कार्य करैत पचाससँ अधिक प्रकाशित रच... 1962 मे साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत, १... समितिक सदस्य एवं १९८२ सँ अकादेमीक ...

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 Si 64 J
00117143

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00